केंद्रीय विद्यालय संगठन

अहमदाबाद संभाग

सहायक अध्ययन सामग्री

सत्र : 2014-15

कक्षा - नवीं

हिंदी ('अ' पाठ्यक्रम)

केंद्रीय विद्यालय संगठन,अहमदाबाद संभाग

सहायक अध्ययन सामग्री

सत्र : 2014-15

नवीं हिन्दी ('अ' पाठ्यक्रम)

संरक्षक

श्री पी. देव कुमार

उपायुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन, अहमदाबाद संभाग

सलाहकार

श्री यश पाल सिंह

सहायक आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन, अहमदाबाद संभाग

संयोजक

श्री एल.एन. गोस्वामी

प्रभारी प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय ओ.एन.जी.सी.अंकलेश्वर, अहमदाबाद संभाग

लेखन एवं संशोधन

श्री रामेश्वर प्रसाद (प्र.स्ना. शिक्षक हिंदी)

केंद्रीय विद्यालय ओ.एन.जी.सी. अंकलेश्वर

हिन्दी पाठ्यक्रम-अ कोड संख्या (002)

कक्षा नौवीं तथा दसवीं हिन्दी 'अ'- संकलित परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2013–2015

संकलित परीक्षा 1 (भार 30%) (अप्रैल-सितम्बर) तथा संकलित परीक्षा 2 (भार 30%) (अक्टूबर से मार्च) हेतु भार विभाजन			
	विषयवस्तु	**उप भार**	**कुल भार**
1	**पठन कौशल गद्यांश व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर बहुविकल्पी प्रश्न**		**20**
(अ)	दो अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के)	10	
(ब)	दो अपठित काव्यांश (100 से 150 शब्दों के)	10	
2	**व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न**	**15**	**15**
3	**पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग-1 व पूरकपाठ्यपुस्तक कृतिका भाग-1**		**35**
(अ)	**गद्य खण्ड**	**15**	
1	क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न ।	05	
2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन व मनन क्षमताओं का आंकलन करने हेतु प्रश्न।	10	
(ब)	**काव्य खण्ड**	**15**	
1	काव्यबोध व काव्य पर स्वयं की सोच की परख करने हेतु क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर प्रश्न।	05	
2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न।	10	
(स)	**पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग-1**	**05**	
	पूरक पुस्तिका 'कृतिका' के निर्धारित पाठों पर आधारित एक **मूल्य परक** प्रश्न पूछा जाएगा। इस प्रश्न का कुल भार पाँच अंक होगा। ये प्रश्न विद्यार्थियों के पाठ पर आधारित मूल्यों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को परखने के लिए होगा।		
4	**लेखन**		**20**
(अ)	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिन्दुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 200 से 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबंध।	10	

(ब)	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केन्द्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र।	05	
(स)	किसी एक विषय पर 'प्रतिवेदन'। (केवल कक्षा नौवीं हेतु) दिए गए गद्यांश का 'सार लेखन'। (केवल कक्षा दसवीं हेतु)	05	
कुल			90

संकलित परीक्षा 1	30%
संकलित परीक्षा 2	30%
फॉरमैटिव परीक्षा एफ.ए.–1(भार 10%), समस्या समाधान आकलन (भार 10%) एफ.ए.–3(भार 10%), एफ.ए.–4(भार 10%)	40%
कुल भार	100%

(मूल्यपरक प्रश्न पूरकपाठ्यपुस्तक पर आधारित होगा। इसके लिए 5 अंक निर्धारित हैं।)

टिप्पणी:

1. **संकलित परीक्षाओं का कुल भार 60 प्रतिशत तथा फॉरमैटिव परीक्षाओं का कुल भार 40 प्रतिशत होगा। फॉरमैटिव परीक्षाओं के 40 प्रतिशत में से प्रत्येक सत्र में 5 प्रतिशत भाग (संपूर्ण वर्ष में 10 प्रतिशत) श्रवण व वाचन कौशलों के परीक्षण हेतु आरक्षित होगा। शेष 30 प्रतिशत फॉरमैटिव मूल्यांकन, पाठ्यचर्या के अन्य अंगों जैसे पठन, लेखन, व्याकरण, पाठ्यपुस्तक व पूरक पाठ्यपुस्तक, पर आधारित होगा।** इसमें बोलने, सुनने, लिखने व बोध पर आधारित मौखिक, लिखित अथवा कार्यकलापों पर आधारित परीक्षण किया जा सकता है।

2. **संकलित परीक्षा एक (एस-1) 90 अंकों की होगी।** 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात 30 अंकों में से परिवर्तित कर लिया जाएगा तदुपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा तथा **संकलित परीक्षा दो (एस-2) 90 अंकों की होगी व** 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात 30 अंकों में से 40 परिवर्तित करने के उपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा।

क्षितिज भाग-1 गद्य खण्ड		FA 1 10	FA 2 10	SA I 30	FA3 10	PSA 10	SA II 30
1	प्रेमचंद-दो बैलों की कथा	✓		✓			
2	राहुल सांकृत्यायन -ल्हासा की ओर	✓		✓			
3	श्यामचरण दुबे-उपभोक्तावाद की संस्कृति		✓	✓			
4	जाबिर हुसैन-साँवले सपनों की याद		✓	✓			
5	चपला देवी-नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया				✓		✓
6	हरिशंकर परसाई-प्रेमचंद के फटे जूते				✓		✓
7	महादेवी वर्मा-मेरे बचपन के दिन						✓
8	हज़ारीप्रसाद द्विवेदी-एक कुत्ता और एक मैना						✓
	काव्य खंड	**FA 1 10**	**FA2 10**	**SA I 30**	**FA3 10**	**PSA 10**	**SA II 30**
9	कबीर-साखियाँ एवं सबद	✓		✓			
10	ललद्यद-वाख	✓		✓			
11	रसखान-सवैये		✓	✓			
12	माखनलाल चतुर्वेदी-कैदी और कोकिला		✓	✓			
13	सुमित्रानंदन पंत-ग्राम श्री		✓	✓			
14	केदारनाथ अग्रवाल-चंद्र गहना से लौटती बेर				✓		✓
15	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना-मेघ आए				✓		✓
16	चंद्रकांत देवताले-यमराज की दिशा						✓
17	राजेश जोशी-बच्चे काम पर जा रहे हैं						✓
कृतिका		**FA 1 10**	**FA2 10**	**SA I 30**	**FA3 10**	**PSA 10**	**SA II 30**
1	फणीश्वरनाथ रेणु-इस जल प्रलय में	✓		✓			
2	मृदुला गर्ग-मेरे संग की औरतें		✓	✓			
3	जगदीश चन्द्र माथुर-रीढ़ की हड्डी				✓		✓
4	माटी वाली-विद्यासागर नौटियाल				✓		✓
5	शमशेर बहादुर सिंह-किस तरह आखिरकार मैं हिन्दी में आया						✓

क्रम0 सं0	पाठ्य पुस्तक	प्रथम सत्र (अप्रैल से सितम्बर)			दिव्तीय सत्र (अक्तूबर से मार्च)		
	व्याकरण	FA 1 10	FA2 10	SA I 30	FA3 10	FA4 10	SA II 30
1	शब्द निर्माण- उपसर्ग - 2 अंक प्रत्यय - 2 अंक समास - 3 अंक	✓		✓	✓		✓
2	अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद - 4 अंक		✓	✓			✓
3	अलंकार - 4अंक (शब्दालंकार अनुप्रास, यमक, श्लेष) (अर्थालंकार उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण)	✓	✓	✓	✓		✓
4	अपठित गद्यांश (5+5=10 अंक)			✓			✓
5	अपठित काव्यांश (5+5=10 अंक)			✓			✓
6	पत्र लेखन (5 अंक)			✓			✓
7	निबंध लेखन (10 अंक)			✓	✓		✓
8	प्रतिवेदन (5 अंक)		✓	✓			✓

प्रथम सत्र अप्रैल से सितम्बर

खण्ड 'क'

अपठित गद्यांश

अपठित का अर्थ होता है जो पढ़ा नहीं गया हो अर्थात् जो पाठ्यक्रम की पुस्तक से नहीं लिया जाता है पद्यांश व गद्यांश का विषय कुछ भी हो सकता है इनसे संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं इससे छात्रों का मानसिक व्यायाम होता है और उनको साहित्यिक ज्ञान क्षेत्र का विस्तार भी होता

है साथ ही छात्रों की व्यक्तिगत् योग्यता एवं अभिव्यक्ति की क्षमता भी बढ़ती है।

विधि

अपठित गद्यांश व पद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए

1 दिये गये गद्यांश पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़े।

2 पढ़ते समय मुख्य बातों को रेखांकित करें।

3 प्रश्नों के उतर देते समय भाषा सरल होनी चाहिए।

4 उत्तर सरल संक्षित व सहज होने चाहिए ।

5 उत्तर में जितना व पूछा जाए उतना ही लिखना चाहिए।

6 शीर्षक संबंधी प्रश्न का उत्तर गद्यांश व पद्यांश के केन्द्रीय भाव को ध्यान में रखकर दीजिए

7 उत्तर सदैव पूर्ण वाक्य में दें

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को धयानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार छाँटकर लिखिए अंक 5

विद्यार्थी जीवन को मानव जीवन की रीढ़ की हड्डी कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। विद्यार्थी काल में बालक में जो संस्कार पड़ जाते हैं, जीवन भर वही संस्कार अमिट रहते हैं। इसीलिए यही काल आधारशिला कहा गया है। यदि यह नींव दृढ़ बन जाती है तो जीवन सृदृढ़ और सुखी बन जाता है। यदि इस काल में बालक कष्ट सहन कर लेता है तो उसका स्वास्थ्य सुन्दर बनता है। यदि मन लगाकर अीययन कर लेता है तो उसे ज्ञान मिलता है, उसका मानसिक विकास होता है। जिस वृक्ष को प्रारम्भ से सुन्दर सिंचन और खाद मिल जाती है, वह पुष्पित एवं पल्लवित होकर संसार को सौरभ देने लगता है। इसी प्रकार विद्यार्थी काल में जो बालक श्रम, अनुशासन, समय एवं नियमन के साँचे में ढल जाता है, वह आदर्श विद्यार्थी बनकर सभ्य नागरिक बन जाता है। सभ्य नागरिक के लिए जिन-जिन गुणों की आवश्यकता है उन गुणों के लिए विद्यार्थी काल ही तो सुन्दर पाठशाला है। यहाँ पर अपने साथियों के बीच रह कर वे सभी गुण आ जाने आवश्यक हैं, जिनकी कि विद्यार्थी को अपने जीवन में आवश्यकता होती है ।

1. मानव जीवन की रीढ़ की हड्डी विद्यार्थी जीवन को क्यों माना गया है।

(क) पूरा जीवन विद्यार्थी जीवन पर चलता है ।

(ख) क्योंकि जो संस्कार संस्कार पड़ जाते हैं, जीवन भर वही संस्कार अमिट रहते हैं

(ग) विद्यार्थी जीवन सुखी जीवन है।

(घ) विद्यार्थी का जीवन स्वस्थ जीवन है ।

2. 'पाठशाला' शब्द में कौन सा समास है? 1

(क) द्वन्द्व

(ख) कर्मधारय

(ग) तत्पुरूष

(घ) अव्ययीभाव

3. जिस वृक्ष को प्रारम्भ से खाद मिल जाती है वह कैसा हो जाता है। 1

(क) फूल देने वाला

(ख) फल देने वाला

(ग) सौरभ बिखराने वाला

(घ) फूल, फल, सौरभ देने वाला

4. आदर्श विद्यार्थी से क्या तात्पर्य है? 1

(क) जो परिश्रमी हो

(ख) जो अनुशासित हो

(ग) जो समय के अनुरूप चल सके

(घ) उपरोक्त सभी

5. इस गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है- 1

(क) आदर्श नागरिक

(ख) विद्यार्थी जीवन

(ग) सुखी जीवन

(घ) मानसिक विकास

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार सही विकल्प चुनकर लिखिए- अंक 5

काशी के सेठ गंगादास एक दिन गंगा में स्नान कर रहे थे कि तभी एक व्यक्ति नदी में कूदा और डुबकियाँ खाने लगा । सेठजी तेजी से तैरते हुए उसके पास पहुँचे और किसी तरह खींच कर उसे किनारे ले आए । वह उनका मुनीम नंदलाल था। उन्होंने पूछा, 'आप को किसने गंगा में फेंका?' नंदलाल बोला, ' किसी ने नहीं, मैं तो आत्महत्या करना चाहता था। 'सेठजी ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा, 'मैंने आप के पाँच हजार रुपये चुरा कर सट्टे में लगाए और हार गया। मैंने सोचा कि आप मुझे जेल भिजवा देंगे इसलिए बदनामी के डर से मैंने मर जाना ही ठीक समझा।' कुछ देर तक सोचने के बाद सेठजी ने कहा, 'तुम्हारा अपराध माफ किया जा सकता है लेकिन एक शर्त है कि आज से कभी किसी प्रकार का सट्टा नहीं लगाओगे।' नंदलाल ने वचन दिया कि वह अब ऐसे काम नहीं करेगा। सेठ ने कहा, 'जाओ माफ किया। पाँच हजार रुपये मेरे नाम घरेलू खर्च में डाल देना।' मुनीम भौंचक्का रह गया। सेठजी ने कहा, 'तुमने चोरी तो की है लेकिन स्वभाव से तुम चोर नहीं हो। तुमने एक भूल की है, चोरी नहीं। जो आदमी अपनी एक भूल के लिए मरने तक की बात सोच ले, वह कभी चोर हो नहीं सकता।

(क) सच्चे भक्त से तात्पर्य है- 1

(प) बिना स्वार्थ के पूजा करना

(पप) रोज मंदिर जाना

(पपप) एक ही भगवान की पूजा करना

(पअ) अपने धर्म में कट्टरता

(ख) मुनीम आत्महत्या क्यों करना चाहता था- 1

(प) जीवन से छुटकारा पाने के लिए

(पप) सेठजी को प्रभावित करने के लिए

(पपप) दुनिया को दिखाने के लिए

(पअ) अपराध बोध होने के कारण

(ग) हमें समाज में किस चीज का डर सबसे ज्यादा होता है- 1

(प) परिवार का

(पप) नौकरी का

(पपप) रुतबे का

(पअ) बदनामी का

(घ) सेठजी को मालूम था कि मुनीम चोर है लेकिन फिर उन्होंने उसे छोड़ दिया क्योंकि- 1

(प) बाद में उसे जीवन भर गुलाम बनाना चाहते थे

(पप) भूल सुधारने का मौका देना चाहते थे

(पपप) दुनिया को प्रभावित करना चाहते थे

(पअ) समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाना चाहते थे

(ट) गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है- 1

(प) 'चोरी की सजा'

(पप) 'मेरा प्रण'

(पपप) 'सेठजी की दयालुता'

(पअ) 'मुनीम जी का दुख'

प्रश्न 3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार सही विकल्प चुनकर लिखिए- अंक 5

प्राचीन काल में शनि को अमंगलकारी ग्रह समझ लिया था। सुनी-सुनाई बातों के आधार पर लोगों में इस ग्रह के बारे में भ्रांतियाँ फैलती चली गई। यह ग्रह अत्यंत मंद गति से सूर्य के चारों ओर करीब तीस वर्ष में एक चक्कर पूरा करता है। शनि का दिन हमारे दिन से छोटा होता है। शनि अत्यंत ठंडा ग्रह है। शनि के वायुमंडल का तापमान शून्य से 150° सेंटीग्रेड नीचे रहता है। अत: यहाँ जीवन संभव नहीं है। वैज्ञानिक खोजों के आधार पर शनि के उपग्रहों की संख्या सत्रह हो गई है। शनि का सबसे बड़ा चंद्र टाइटन है। यह उपग्रह हमारे उपग्रह चंद्रमा से काफी बड़ा है। टाइटन की अद्‌भुत चीज़ इसका वायुमंडल है। इसके वायुमंडल में मीथेन गैस पर्याप्त मात्रा में है। इस पर मीथेन, पानी की तरह मानी जा सकती है। शनि को दूरबीन से देखा जाए तो इसके चारों ओर वलय या घेरे दिखाई देते हैं। इन वलयों या कंकणों से इसकी सुंदरता काफ़ी बढ़ जाती है। इन वलयों की खोज गैलीलियो ने की थी। नई खोजों के आधार पर सौरमंडल के कई ग्रहों के वलयों की खोज हो चुकी है। शनि जितने सुंदर और स्पष्ट वलय किसी ग्रह के नहीं हैं।

(क) शनिग्रह की सुंदरता का कारण है। 1

(प) इसका सबसे छोटा होना।

(पप) सबसे अलग होना।

(पपप) इसके के चारो ओर चमकते घेरे।

(पअ) इसका सूर्य के समीप होना।

(ख) शनि पर जीवन संभव नहीं है क्योंकि- 1

(प) वहाँ क्रूर देव हैं।

(पप) बहुत गर्मी हैं।

(पपप) बहुत ठंड है।

(पअ) बहुत अँधेरा है ।

(ग) धरती का उपग्रह है- 1

(प) बुध

(पप) शनि

(पपप) चंद्रमा

(पअ) सूर्य

(घ) मीथेन गैस को किसके समान माना गया है। 1

(प) अग्नि

(पप) पानी

(पपप) मिट्टी

(पअ) रोशनी

(ट) शनि के वलयों की खोज करने वाले वैज्ञानिक- 1

(प) आइनस्टाइन

(पप) न्यूटन

(पपप) सी.वी. रमन

(पअ) गैलीलियो

प्रश्न 4. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार सही विकल्प चुनकर लिखिए- अंक 5

जिस प्रकार बीज के उगने और बढ़ने के लिए मौसम विशेष नहीं, अपेक्षित परिस्थितियों का निर्माण जरूरी है। उसी प्रकार किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए बाहरी परिस्थितियाँ नहीं, मन की सकारात्मक वृनि अनिवार्य है और वह सकारात्मक वृनि है हमारा संकल्प। संकल्पा: कल्पतरव:, तेज: कल्पकोद्यानम्' अर्थात संकल्प ही कल्पतरु हैं और तेज अथवा मन उन कल्पतरुओं का उद्यान है। जैसी कल्पना वैसा उद्यान अर्थात जीवन की दिशा और दशा। गहन संकल्प से ही संभव है पूर्ण सफलता। कुछ कर गुजरने के लिए वास्तव में मौसम अथवा बाहरी परिस्थितियाँ ही सब कुछ नहीं हैं। सबसे महनवपूर्ण है मन। इस संपूर्ण सृष्टि के सृजन के मूल में मन ही तो है। मन ही वह

अदृश्य सूक्ष्म बीज अथवा सनाा है जिससे यह पृथ्वी रूपी विशाल वट वृक्ष अस्तित्व में आया और निंरतर पल्लवित-पुष्पित हो रहा है। तभी तो कहा गया है। कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नहीं मन चाहिए। साधन सभी जुट जाएँगे संकल्प का धन चाहिए ।

(क) जीवन में कुछ कर गुज़रने के लिए आवश्यक है- 1

(प) मन और मौसम

(पप) मन

(पपप) अनुकुल परिस्थितियाँ

(पअ) मौसम

(ख) कार्य में सफलता के लिए अनिवार्य है- 1

(प) परिस्थितियाँ

(पप) लोगों की सहायता

(पपप) सकारात्मक वृनिा

(पअ) पर्याप्त ज्ञान

(ग) बीज के उगने और बढ़ने के लिए ज़रूरी है- 1

(प) अपेक्षित परिस्थितियाँ

(पप) मौसम विशेष

(पपप) किसान का कुशल होना

(पअ) उपर्युक्त सभी

(घ) हमारी सकारात्मक वृत्ति है- 1

(प) साहस

(पप) विवेक

(पपप) बुद्धि

(पअ) संकल्प

(ङ) गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है- 1

(प) संकल्प का धन

(पप) धन का महनव

(पपप) कर्मठता

(पअ) बीज की कथा

प्रश्न 5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार सही विकल्प चुनकर लिखिए- अंक 5

परिश्रम उन्नति का द्वार है। मनुष्य परिश्रम के सहारे ही जंगली अवस्था से वर्तमान विकसित अवस्था तक पहुँचा है। उसी के सहारे उसने अन्न, वस्त्र, घर, मकान, भवन, बाँध, पुल, सड़कें बनाइह। तकनीक का विकास किया, जिसके सहारे आज यह जगमगाती सभ्यता चल रही हैं। परिश्रम केवल शरीर की क्रियाओं का ही नाम नहीं हैं। मन तथा बुदि से किया गया परिश्रम भी परिश्रम

कहलाता है। हर श्रम में बुदि तथा विवेक का पूरा योग रहता है। परिश्रम करने वाला मनुष्य सदा सुखी रहता है। परिश्रमी व्यक्ति का जीवन स्वाभिमान से पूर्ण होता है, वह स्वयं अपने भाग्य का निर्माता होता है। उसमें आत्म-विश्वास होता है। परिश्रमी किसी भी संकट को बहादुरी से झेलता है तथा उससे संघर्ष करता है ।परिश्रम कामधेनु है जिससे मनुष्य की सब इच्छाएँ पूरी हो सकती हैं। मनुष्य को मरते दम तक परिश्रम का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। जो परिश्रम के वक्त इन्कार करता है, वह जीवन में पिछड़ जाता है।

(क) वर्तमान विकसित अवस्था तक मनुष्य कैसे पहुँचा ? 1

(*i*) अन्न उपजा कर

(*ii*) धन व बुद्धि के बल पर

(*iii*) परिश्रम कर

(*iv*) सुखों को भोग कर

(ख) मन और बुद्धि द्वारा किया जाने वाला कार्य कहलाता है ? 1

(*i*) चतुरता

(*ii*) विश्राम

(*iii*) विवेक

(*iv*) परिश्रम

(ग) परिश्रमी व्यक्ति के गुण हैं- 1

(i) आत्मविश्वासी, स्वाभिमानी, संघर्षी एवं स्वयं का भाग्य-निर्माता

(ii) स्वाभिमानी, संघर्षी, दयालु एवं चरित्रवान

(iii) स्वयं का भाग्य-निर्माता, आत्मविश्वासी एवं दयालु

(iv) चरित्रवान, आत्मविश्वासी, भाग्यवादी, सत्यवादी

(घ) परिश्रम को 'कामधेनु' कहने का क्या आशय है ? 1

(i) सारी बाधाओं को दूर करना

(ii) सारी परिस्थितियों को बदलना

(iii) सारी इच्छाओं को दबाना

(iv) सारी मनोकामनाओं को पूरा करना

(ङ) कौन जीवन में पीछे रह जाता है ? 1

(i) जो धीरे चलता है।

(ii) जो बिना सोचे तेज़ चलता है।

(iii) जो परिश्रम के समय इन्कार करता है।

(iv) जो आत्मविश्वास का सहारा नहीं लेता ।

प्रश्न 6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़क़र नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए अंक 5

हमारे देश के त्योहार चाहे धार्मिक दृष्टि से मनाए जा रहे हैं या नए वर्ष के आगमन के रूप में। फसल की कटाई एवं खलिहानों के भरने की खुशी में हों या महापुरुषों की याद में। सभी अपनी

विशेषताओं एवं क्षेत्रीय प्रभाव से युक्त होने के साथ ही देश की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता और अखंडता को मजबूती प्रदान करते हैं । ये त्योहार जहाँ जनमानस में उल्लास, उमंग एवं खुशहाली भर देते हैं, वहीं हमारे अंदर देश-भक्ति एवं गौरव की भावना के साथ-साथ, विश्व-बंधुत्व एवं समन्वय की भावना भी बढ़ाते हैं। इनके द्वारा महापुरुषों के उपदेश हमें बार-बार इस बात की याद दिलाते हैं कि सद्विचार एवं सद्भावना द्वारा ही हम प्रगति की ओर बढ़ सकते हैं। इन त्योहारों के माधयम से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि वास्तव में धर्मों का मूल लक्ष्य एक है, केवल उस लक्ष्य तक पहुँचने के तरीके अलग-अलग हैं।

1. त्योहार किससे प्रभावित होते हैं? 1

(क) देश की प्रगति के प्रभाव से

(ख) धार्मिक दृष्टि के प्रभाव से

(ग) क्षेत्रीय प्रभाव से

(घ) जनमानस के प्रभाव से

2. त्योहारों से हमें क्या लाभ हैं 1

(क) महापुरुषों की याद दिलाते हैं

(ख) देश की एकता और अखंडता मजबूत करते हैं

(ग) देश भक्ति की भावना बढ़ाते हैं

(घ) उपरोक्त सभी

3. हम उन्नति की ओर किस प्रकार बढ़ सकते हैं? 1

(क) सद्विचारों से

(ख) सद्विचार एवं सद्भावना से

(ग) देश की अखंडता से

(घ) महापुरुषों के उपदेश से

4. त्योहारों के माधयम से हमें क्या प्रेरणा मिलती है। 1

(क) धर्मों का मूल लक्ष्य एक है

(ख) ईश्वर प्राप्ति के तरीके अलग-अलग हैं

(ग) अपने-अपने धर्म पर चलना चाहिए

(घ) देश भक्ति और देश के गौरव की

5. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है 1

(क) धर्म का मार्ग

(ख) देश भक्ति

(ग) त्योहारों का महत्व

(घ) हमारे त्योहार अलग हैं

प्रश्न 7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए अंक 5

लोगों को यह कहते सुना जाता है कि एक और एक दो होते हैं, परंतु एक लोकोक्ति है 'एक और एक ग्यारह'इस कथन का अभिप्राय है कि एकता में शक्ति होती है। जब दो व्यक्ति एक साथ

मिलकर प्रयास करते हैं तो उनकी शक्ति कई गुनी हो जाती है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज अलग-अलग इकाइयों का समूहबद्ध रूप है, जिसमें हर इकाई समाज को शक्तिशाली बनाती है। व्यष्टि रूप में एक व्यक्ति का कोई महनव नहीं, परंतु समष्टि रूप में वह समाज की एक इकाई है। बाढ़ से बचने के लिए जब एक अंधे और लंगड़े में सहयोग हुआ तो अंधे को लंगड़े की आँखें तथा लंगड़े को अंधे की टाँगे मिल गइह और दोनों बच गए। एकता में बड़ी शक्ति है। जो समाज एकता के सूत्र में बँधा नहीं रहता, उसका पतन अवश्यभावी है। भारत की परतंत्रता इसी फूट का परिणाम थी। जब भारतवासियों ने मिलकर आज़ादी के लिए संघर्ष किया तो अंग्रेजों को यहाँ से भागना पड़ा। गणित में शून्य के प्रभाव से अंक दस गुने हो जाते हैं। अत: समाज का हर व्यक्ति सामूहिक रूप से समाज की रीढ़ होता है।

1. लोकोक्ति के अनुसार एक और एक ग्यारह क्यों होते हैं ? 1

(क) ग्यारह को एक और एक कहते हैं

(ख) एकता में बल होने से

(ग) एक और एक को आमने-सामने रखने से

(घ) उपरोक्त सभी

2. गद्यांश में आए व्यष्टि शब्द से लेखक का आशय है 1

(क) समूह

(ख) इकाई

(ग) 'क' एवं 'ख' दोनों

(घ) उपरोक्त से कोई नहीं

3. समाज में यदि लोग मिलजुल कर न रहें उसका क्या अंजाम हो सकता है 1

(क) वह समाप्त हो सकता है

(ख) उसका पतन हो सकता है

(ग) वह आजाद हो सकता है

(घ) वह शक्तिशाली नहीं रहता

4. गणित में शून्य का क्या महत्व है 1

(क) ग्यारह हो जाते हैं

(ख) अंक बढ़ जाते हैं

(ग) अंक दस गुने हो जाते हैं

(घ) शून्य का कोई महत्व नहीं

5. इस गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है 1

(क) सहयोग की भावना

(ख) समाज की इकाई

(ग) शक्तिशाली भारत

(घ) एकता में शक्ति

प्रश्न 8. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए अंक 5

ग्राम-समस्याओं का निराकरण केवल मस्तिष्क-बल या बुद्धि-बल से नहीं हो सकता। उसके लिए वास्तविक प्रत्यक्ष अनुभव की आवश्यकता है। यह अनुभव दूर से नही हो सकता, लिखित विवरणों और आँकड़ों से भी नहीं, पूछताछ या जाँच-पड़ताल और दौरा करने से भी नहीं। कारण, विभिन्न प्रांतों के गाँवों की विभिन्न समस्याएँ हैं। कुछ समस्याओं में समानता है और कुछ में विषमता भी। बहुत संभव है कि एक जिले के गाँवों के साथ जो जटिल समस्याएँ लगी हुई हैं, वे दूसरे जिले के गाँवों के साथ न हों। पर अधिकांश गाँव कम-से-कम अस्सी प्रतिशत गाँव-सारे देश में ऐसे ही हैं, जिनकी समस्याएँ और आवश्यकताएँ बहुत कुछ एक-सी हैं। जब तक उनकी पूर्ति के प्रयत्न न होंगे, गाँवों की दुर्दशा बनी रहेगी और, पूर्ति तभी होगी जब गाँवों में कुछ दिन रहकर वहाँ की आवश्यकताएँ समझ ली जाएँगी ।

1. ग्राम की समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव क्यों आवश्यक है? 1

(क) आँकड़े पाने के लिए

(ख) लिखित विवरण जानने के लिए

(ग) समस्याओं को महसूस करने के लिए

(घ) जाँच पड़ताल करने के लिए

2. प्रत्यक्ष अनुभव किस प्रकार पाया जा सकता है ? 1

(क) बुदि बल से

(ख) जाँच पड़ताल से

(ग) समस्याएँ निराकरण से

(घ) गाँव में कुछ दिन रहकर

3. गाँवों की दुर्दशा कब तक बनी रहेगी ? 1

(क) जब तक प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होगा

(ख) समस्याओं का निदान नहीं होगा

(ग) समानता नहीं होगी

(घ) सही आँकड़े प्राप्त नहीं होंगे

4. 'अनुभव' शब्द में कौन सा उपसर्ग सही है 1

(क) अ (ख) अन् (ग) अनु (घ) व

5. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है 1

(क) ग्रामीण समस्याएँ (ख) गाँव की दुर्दशा

(ग) मस्तिष्क बल (घ) प्रत्यक्ष अनुभव

प्रश्न 9 निम्नलिखित गद्यांश को घ्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए। अंक 5

''साहित्य का आधार जीवन है। इसी नींव पर साहित्य की दीवार खड़ी होती है। उसकी अटारियाँ, मीनार और गुंबद बनते हैं। लेकिन बुनियाद मिट्टी के नीचे दबी पड़ी है। जीवन परमात्मा की सृष्टि है,

इसलिए सुबोध है, सुगम है और मर्यादाओं से परिमित है। जीवन परमात्मा को अपने कामों का जवाबदेह है या नहीं हमें मालूम नहीं, लेकिन साहित्य तो मनुष्य के सामने जवाबदेह है। इसके लिए कानून है जिनसे वह इधर-उधर नहीं जा सकता। मनुष्य जीवन पर्यन्त आनन्द की खोज में लगा रहता है। किसी को वह रत्न द्रव्य में मिलता है, किसी को भरे-पूरे परिवार में, किसी को लंबे-चौड़े भवन में, किसी को ऐश्वर्य में। लेकिन साहित्य का आनन्द इस आनन्द से टँचा है। उसका आधार सुंदर और सत्य है। वास्तव में सच्चा आनन्द सुंदर और सत्य से मिलता है, उसी आनन्द को दर्शाना, वही आनन्द उत्पन्न करना साहित्य का उद्देश्य है।''

(1) साहित्य और जीवन में गहरा संबंध है क्योंकि 1

(क) जीवन का मुख्य आधार साहित्य है (ख) साहित्य जीवन की मजबूत दीवार है

(ग) साहित्य का आधार जीवन है (घ) साहित्य का आनन्द जीवन से टँचा है

(2) मनुष्य किसकी खोज में जीवन भर लगा रहता है - 1

(क) परमात्मा की (ख) आनन्द की (ग) साहित्य की

(घ) रत्न द्रव्य, भरे-पूरे परिवार, लंबे-चौड़े भवन एवं ऐश्वर्य को पाने की

(3) साहित्य के आनन्द का आधार- 1

(क) सुंदर और सत्य को पाने में है (ख) जीवन में है

(ग) रत्न और ऐश्वर्य में है (घ) परमात्मा में है

(4) 'परिमित' का तात्पर्य है- 1

(क) सीमित (ख) दबा हुआ (ग) विस्तृत (घ) फँसा हुआ

(5) 'लंबे-चौड़े भवन में' पंक्ति में 'लंबे-चौड़े' व्याकरण की दृष्टि से- 1

(क) यिया-विशेषण है (ख) संज्ञा है (ग) यिया है (घ) विशेषण है

प्रश्न 10 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उार सही विकल्प चुनकर लिखिए। अंक 5

कालिदास उसी डाली को काट रहे थे, जिस डाली पर बैठे थे। विद्योनामा नामक विदुषी राजकन्या का मान भंग करने का षड्यंत्र कर रहे तथाकथित विद्वान वर्ग को वह व्यक्ति (कालिदास) सर्वाधिक जड़मति और मूर्ख लगा। सो वे उसे ही कुछ लाभ-लालच दे, कुछ टटपटाँग सिखा-पढ़ा, महापंडित के वेश में सजा-धजाकर राजदरबार में विदुषी राज कन्या विद्योनामा से शास्त्रार्थ करने के लिए ले गए। उस मूर्ख के टटपटाँग मौन संकेतों की मनमानी व्याख्या कर षड्यंत्रकारियों ने उस विदुषी से विवाह करा ही दिया, लेकिन प्रथम रात्रि में ही वास्तविकता प्रकट हो जाने पर पत्नी के ताने से घायल होकर ज्यों घर से निकले, कठिन परिश्रम और निरंतर साधना-रूपी रस्सी के आने-जाने से घिस-पिटकर महाकवि कालिदास बनकर घर लौटे। स्पष्ट है कि निरंतर अभ्यास ने तपाकर उन की जड़मति को पिघलाकर बहा दिया और जो बाकी बचा था, वह खरा सोना था।

(1) कालिदास उसी डाली को क्यो काट रहे थे, जिस डाली पर वे बैठे थे? 1

(क) वे विद्वान थे। (ख) वे जड़मति थे। (ग) वे महापंडित थे। (घ) वे लकड़हारे थे।

(2) कालिदास को पंडित कहा ले गए? 1

(क) विद्योनामा का राजमहल दिखाने। (ख) विद्योनामा से मिलवाने के लिए।

(ग) विद्योनामा के पास सजा दिलवाने। (घ) विद्योनामा से शास्त्रार्थ करने के लिए।

(3) विदुषी राजकन्या का विवाह जड़मति कालिदास से क्यों हो गया? 1

(क) कालिदास सुदर्शन व्यक्तित्व के थे।

(ख) विद्वान वर्ग ने उनके मौन संकेतों की मनमानी व्याख्या की।

(ग) कालिदास धनी थे।

(घ) राजकन्या कालिदास से प्रेम करती थी।

(4) कालिदास किस प्रकार महाकवि बन गए? 1

(क) पत्नी के प्रेम के कारण। (ख) साहित्य रचना के कारण।

(ग) कठिन परिश्रम और निरन्तर साधना से। (घ) घर से त्यागकर जाने के कारण।

(5) इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 1

(क) जड़मति कालिदास। (ख) विद्योतमा और कालिदास।

(ग) महाकवि कालिदास। (घ) करत-करत अभ्यास के जड़मति हो

उत्तरमाला

उत्तर -

प्रश्न 1. 1 × 5 = 5

(*i*) ख (*ii*) ग (*iii*) घ (*iv*) घ (*v*) ख

उत्तर -

प्रश्न 2. 1 × 5 = 5

(क) (*i*) (ख) (*iv*) (ग) (*iv*)

(घ) (*ii*) (ड.) (*iii*)

उत्तर -

प्रश्न 3. 1 × 5 =5

(क) (पपप) 1

(ख) (पपप) 1

(ग) (पपप) 1

(घ) (पप) 1

(ट) (पअ) 1

उत्तर -

प्रश्न 4. 1 × 5 =5

(क) (पप) 1

(ख) (पपप) 1

(ग) (प) 1

(घ) (पअ) 1

(ड.) (प) 1

उत्तर -

प्रश्न 5. 1 × 5 =5

(क) (पपप) 1

(ख) (पअ) 1

(ग) (प) 1

(घ) (पअ) 1

(ड.) (पपप) 1

अपठित काव्यांश

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर लिखिए अंक 5

युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी
'रघुकुल में थी एक अभागिन रानी'
'धिक्कार' उसे था महास्वार्थ ने घेरा
''सौ बार धन्य वह एक लाल की माई
जिस जननी ने है जना भरत-सा भाई।''
पागल-सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई,
''सौ बार धन्य वह एक लाल की माई''

1. रघुकुल में यह अभागिन रानी कौन थी ?

(क) कौशल्या (ख) सीता (ग) कैकयी (घ) गांधारी

2. इस काव्यांश में रानी का कौन-सा भाव प्रकट हो रहा है

(क) प्रायश्चित (ख) सहानुभूति (ग) क्रोध (घ) गर्व

3. ''सौ बार धन्य वह एक लाल की माई'' किसका कथन हो सकता है

(क) भरत (ख) सभा (ग) राम (घ) मुनिगण

4. 'पागल-सी सभा' में कौन सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है

(क) श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा (ग) अनुप्रास (घ) उपमा

5. अच्छे भाई की उपमा किससे दी जाती है ?

(क) राम (ख) भरत (ग) सभा (घ) लाल की माई

प्रश्न 2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर लिखिए अंक 5

प्राइवेट बस का **ड्राइवर** है तो क्या हुआ ?
सात साल की बच्ची का पिता तो है ।
सामने गीयर से ऊपर
हुक से लटका रखी हैं
काँच की चार चूडियाँ गुलाबी ।

बस की **रफ्तार** के मुताबिक
हिलती रहती हैं,
झुक कर मैंने पूछ लिया,
खा गया मानों झटका ।
अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रौबीला चेहरा
आहिस्ते से बोला : हाँ सा 'ब'
लाख कहता हूँ, नहीं मानती है मुनिया ।
टाँगे हुए हैं कई दिनों से
अपनी अमानत यहाँ अब्बा की नज़रों के सामने ।

1. 'ड्राइवर को सात साल की बच्ची का पिता तो है' क्यों कहा गया है ?

(क) ड्राइवर भी पिता हो सकता है

(ख) ड्राइवर का व्यवहार कठोर होता है

(ग) बस वेफ ड्राइवर भी संवेदनशील होते हैं

(घ) ड्राइवर को पिता नहीं होना चाहिए ।

2. बस में गीयर वेफ हुक में काँच की चूडियाँ किसने लटका रखी हैं ?

(क) ड्राइवर ने (ख)मुनिया ने (ग) लेखक ने (घ) बस वाले ने

3. बस में चूडियाँ टाँगने से बच्ची का क्या उर्ेश्य है?

(क) चूडियाँ खनकती रहें

(ख) सजाने के लिए

(ग) अब्बा की नजरों के सामने रहें

(घ) चूडियाँ हिलती रहें

4. 'खा गया मानो झटका' में कौन सा अलंकार निहित है?

(क) उत्प्रेक्षा

(ख) उपमा

(ग) अनुप्रास

(घ) यमक

5. चूडियों के विषय में **ड्राइवर** से किसने पूछा

(क)बस की सवारी ने

(ख) लेखक ने

(ग) **ड्राइवर** की बच्ची ने

(घ) स्वयं **ड्राइवर** ने

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार के सही विकल्प छाँटकर लिखिए अंक 5

आँधियों ने गोद में हमको खिलाया है न भूलो

कंटकों ने सिर हमें सादर झुकाया है न भूलो
सिंधु का मथ कर कलेजा हम सुधा भी शोध लाए;
औ हमारे तेज से सूरज लजाया है न भूलो ।
वे हमीं तो हैं कि इक हुँकार से यह भूमि काँपी,
वे हमीं तो हैं, जिन्होंने तीन डग में सृष्टि नापी,
और वे भी हम, कि जिनकी सभ्यता के विजयरथ
धूल उड़कर छोड़ आई छाप अपनी विश्वव्यापी ।
वक्र हो आई भृकुटि तो ये अचल नगराज डोले,
दश दशाओं के सबल दिक्पाल ये गजराज डोले,
डोल उट्ठी है धरा, अंबर, भुवन, नक्षत्र-मंडल,
ढीठ अत्याचारियों के अंहकारी ताज डोले ।
सुयश की प्रस्तर-शिला पर चिह्न गहरे हैं हमारे,
ज्ञान-शिखरों पर धवल ीवज-चिह्न लहरे हैं हमारे,
वेग जिनका यों कि जैसे काल की अंगड़ाइयाँ हों,
उन तरंगों में निडर जलयान ठहरे हैं हमारे ।
लास्य भी हमने किए हैं और तांडव भी किए हैं,
वंश मीरा और शिव के, विष पिया है और जिए हैं,
दूध माँ का, या कि चंदन या कि केसर जो समझ लो
यह हमारे देश की रज है, कि हम इसके लिए हैं।

(क) 'हम' शब्द का प्रयोग किया गया है

(प) कवि के लिए

(पप) मानव मात्र के लिए

(पपप) भारत वासियों के लिए

(पअ) संपूर्ण विश्व के लिए

(ख) किसकी छाप विश्व व्यापी है?

(प) पाश्चात्य सभ्यता की

(पप) मिश्र सभ्यता की

(पपप) माया सभ्यता की

(पअ) भारतीय सभ्यता की

(ग) पर्वत से लेकर क्रूर शासक तक कब डोलेलने लगते हैं ?

(प) भूकंप आने पर

(पप) भारतवासियों के क्रोध आने पर

(पपप) ज्वालामुखी फटने पर

(पअ) प्रलय आने पर

(घ) भारतवासियों के स्वभाव की विशिष्टता है

(प) मानव मात्र के प्रति संवेदना

(पप) अपनी शक्ति के प्रति अहंकार

(पपप) सुख-सुविधाओं के लिए लालसा

(पअ) सृष्टि के विनाश की चाह

(ट) 'तांडव' और 'विष' का उल्लेख किसके संदर्भ में किया गया है ?

(प) मीरा

(पप) कृष्ण

(पपप) पार्वती

(पअ) शिव

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार के सही विकल्प छाँटकर लिखिए अंक 5

बहुत बड़ी बरबादी की
इस धरती पर आबादी की
यूँ फसल उगाते जाओगे
अब वह दिन ज्यादा दूर नहीं
जब सिर धुन धुन पछताओगे ।
तुम कितने जंगल तोड़ोगे,
कितने वृक्षों को काटोगे,
इस शस्य श्यामला धरती को
कितने टुकड़ों में बाँटोगे ?
है किंचित तुमको सबर नहीं
क्या ये भी तुमको खबर नहीं ?
ये धरती तो बस धरती है,
ये धरती कोई रबर नहीं,
बोते हो पेड़ बबूलों के
फिर आम कहाँ से खाओगे ?
वह बढ़ती जाती बदहाली,
खो गई सुबह की तरुणाई,
खो गई शाम की वह लाली,
बिन वर्षा के इस धरती पर,
तुम कैसे अन्न उगाओगे ?
यह गंगा भी अब मैली है,
जल की हर बूँद विषैली है,
इस दूषित जल के पीने से,
नित नई बीमारी फैली है।

(क) मनुष्य धरती पर फ़सल उगा रहा है

(प) घृणा की फ़सल

(पप) प्रेम की फ़सल

(पपप) बढ़ती जनसंख्या की फसल

(पअ) आम की फसल

(ख) 'शस्य श्यामला धरा' से अभिप्राय है

(प) काली सूखी धरा

(पप) हरी-भरी उपजाऊ धरा

(पपप) बंजर धरा

(पअ) सूखी फटी धरा

(ग) गंगा का जल कैसा हो गया है ?

(प) निर्मल व पवित्र

(पप) अथाह

(पपप) सूख गया है

(पअ) मैला व प्रदूषित

(घ) काव्यांश संदेश दे रहा है

(i) पर्यावरण को बचाने का

(ii) वृक्षारोपण का

(iii) जनसंख्या वृद्धि रोकने का

(iv) उपर्युक्त सभी

(ङ) इस काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा

(प) बरबादी

(पप) शस्य श्यामला धरा

(पपप) बबूल की फसल

(v) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 5. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार के सही विकल्प छाँटकर लिखिए अंक 5

नहीं, ये मेरे देश की आँखें नहीं हैं

पुते गालों के ऊपर

नकली भवों के नीचे

छाया प्यार के छलावे बिछाती

मुकुर से उठाई हुई

मुसकान मुसकराती

ये आँखें

नहीं, ये मेरे देश की नहीं हैं.....
तनाव से झुर्रियाँ पड़ी कोरों की दरार से
शरारे छोड़ती घृणा से सिकुड़ी पुतलियाँ-
नहीं, वे मेरे देश की आँखें नहीं हैं.....
वन डालियों के बीच से
चौंकी अनपहचानी
कभी झाँकती हैं वे आँखें,
मेरे देश की आँखें,
खेतों के पार
मेड़ की लीक धारे
क्षिति-रेखा खीजती
सूनी कभी ताकती हैं
वे आँखें
डलिया हाथ से छोड़ा
और उड़ी धूल के बादल के
बीच में से झलमलाते
जाड़ों की अमावस में से
मैले चाँद-चेहरे सकुचाते
में टँकी थकी पलकें
उठाई-
और कितने काल-सागरों के पार तैर आई मेरे देश की आँखें.....

(क) 'पुते गालों एवं नकली भवों' से कवि का क्या आशय है।

(प) तरक्की एवं बनावटीपन

(पप) आधुनिकता एवं विकास

(पपप) छलावा एवं बनावटीपन

(पअ) छलावा एवं सूनापन

(ख) कवि किस प्रकार की आँखों को अपने देश की आँखें नहीं मानता ?

(प) शर्माती एवं सकुचाती, प्यार का छलावा करती आँखों को

(पप) तनाव एवं घृणा से भरी, प्यार का इज़हार करती आँखों को

(पपप) ग्रामीण जन-जीवन की सहजता के भरी आँखों को

(पअ) तनाव एवं घृणा से भरी, प्यार का छलावा करती आँखों को

(ग) कवि किन आँखों को अपने देश की आँखें मानता है ?

(प) जिनमें तनाव एवं घृणा भरी हो

(पप) जिनमे ग्रामीण जन-जीवन की सहजता हो

(पपप) जिनमें प्यार का छलावा हो

(पअ) जिनमें ग्रामीण जन-जीवन की जटिलता हो

(घ) कवि देश की पहचान के विषय में क्या कहना चाह रहा है?

(प) देश की पहचान गाँवों के जीवन की सहजता के कारण नहीं
शहरी बनावटीपन के कारण है।

(पप) देश की पहचान शहरों के विकास के कारण है गाँवों के पिछड़ेपन
के कारण नहीं है।

(iii) देश की पहचान शहरों के बनावटीपन के कारण नहीं गाँवों के
जीवन की सहजता के कारण है ।

(vi) देश की पहचान सूनी ताकती आँखों के कारण नहीं पुते गालों के कारण है ।

(च) इस काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा 1

(प) मुस्कराती मुस्कान

(पप) गर्वीली भवें

(पपप) छाया प्यार की

(पअ) आँखें मेरे देश की

प्रश्न 6. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उनार के सही विकल्प
छाँटकर लिखिए अंक 5

''मैंने देखा
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है
उसके नीचे कुछ छोटे-छोटे पौधे
बड़े सुशील विनम्र
देखकर मुझको यों बोले-
हम भी कितने खुशकिस्मत हैं
जो खतरों का नहीं सामना करते
आसमान से पानी बरसे, आँधी गरजे,
बिजली कड़के, आग बरसे
हमको कोई फिय नहीं है
एक बड़े की वरद छत्रछाया के नीचे
हम अपने दिन बिता रहे हैं
बड़े सुखी हैं।
मैंने देखा
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है
उसके नीचे कुछ छोटे-छोटे पौधे
अंसतुष्ट औ ''रूष्ट
देखकर मुझको यों बोले
हम भी कितने बदकिस्मत हैं

जो खतरों का नहीं सामना करते
वे कैसे टपर को उठ सकते हैं
इसी बड़े की छाया ने ही
हमको बौना बना रखा
हम बड़े दु:खी हैं।''
(1) इस कविता में बरगद प्रतीक है -
(क) बूढ़े व्यक्ति का
(ख) बड़े - बुजुर्गों का
(ग) पुरानी परम्पराओं का
(घ) रूढ़ियों का
(2) ' छोटे-छोटे पौधे' प्रतीक है -
(क) छोटे बच्चों का
(ख) नवजात शिशु का
(ग) नई पीढ़ी का
(घ) नई परम्पराओं का
(3) बड़े सुशील विनम्र छोटे-छोटे पौध अपने आपको खुशकिस्मत इसलिए मानते हैं क्योंकि-
(क) बरगद की विशाल छत्र-छाया में वे अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं
(ख) उन्हें धूप नहीं लगती
(ग) उन्हें खतरों का सामना नहीं करना पड़ता
(घ) वे वर्षा, आँधी और तूफान का सामना नहीं करना चाहते
(4) दूसरे अंश में छोटे-छोटे पौधे असंतुष्ट और रूष्ट हैं क्योंकि-
(क) वे बरगद को अपना दुश्मन मानते हैं
(ख) वे बरगद को खतरनाक मानते हैं
(ग) उन्हें बरगद से कोई लगाव नहीं हैं
(घ) वे बरगद की छाया को अपने विकास में बाधा मानते हैं
(5) वे अपने-आपको बदकिस्मत इसलिए मानते हैं क्योंकि
(क) वे अपने छोटे स्वरूप से खुश नहीं हैं
(ख) उन्हें चुनौतियों को स्वीकार कर आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिल रहा
(ग) वे आज़ादी चाहते हैं, जो उन्हें मिल नहीं रही
(घ) वे बरगद के आश्रय में रह रहे हैं
प्रश्न 7. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिए- अंक 5
आओ वीरोचित कर्म करो
मानव हो कुछ तो शर्म करो

यों कब तक सहते जाओगे, इस परवशता के जीवन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो
जिसने निज स्वार्थ सदा साधा
जिसने सीमाओं में बाँधा
आओ उससे, उसकी निर्मित जगती के अणु अणु कण कण से
विद्रोह करो, विद्रोह करो
मनमानी सहना हमें नहीं
पशु बन कर रहना हमें नहीं
विधि के मत्थे पर भाग्य पटक, इय नियति की उलझन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो
विप्लव गायन गाना होगा
सुख स्वर्ग यहाँ लाना होगा
अपने ही पौरुष के बल पर, जर्जर जीवन के क्रन्दन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो
क्या जीवन व्यर्थ गँवाना है
कायरता पशु का बाना है
इस निरुत्साह मुर्दा दिल से, अपने तन से, अपने तन से.....

(1) मनुष्य के लिए शर्मनाक है-
(क) स्वार्थी भावनाएँ
(ख) पराधीनता का जीवन
(ग) वीरोचित कार्य
(घ) विद्रोह

(2) 'स्वार्थ साधना व सीमाओं में बाँधना' संकेत करता है-
(क) आतंकवाद की ओर
(ख) राजतंत्र की ओर
(ग) प्रजातंत्र की ओर
(घ) पंचतंत्र की ओर

(3) 'विधि के मत्थे भाग्य पटक' पंक्ति किन व्यक्तियों की ओर संकेत करती है?
(क) आशावादी
(ख) निराशावादी
(ग) भाग्य वादी
(घ) कर्मवादी

(4) पृथ्वी पर स्वर्ग स्थापित होगा-
(क) मनुष्य की पारस्परिक एकता से
(ख) ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति से

(ग) मनुष्य की विविध कल्पनाओं से
(घ) मनुष्य के परिश्रम व साहस से
(5) काव्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है-
(क) कर्म करो
(ख) शर्म करो
(ग) विद्रोह करो
(घ) क्रांति करो
प्रश्न 8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिए- अंक 5
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद। जीवन अस्थिर, अनजाने ही
हो जाता पथ पर मेल कहीं
सीमित पग-डग, लंबी मंजिल
तय कर लेना कुछ खेल नहीं।
दाएँ-बाएँ सुख-दुख चलते
सम्मुख चलता पथ का प्रमाद
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।
साँसों पर अवलम्बित काया,
जब चलते-चलते चूर हुई।
दो स्नेह शब्द मिल गए,
मिली- नव स्फूर्ति, थकावट दूर हुई।
पथ के पहचाने छूट गए,
पर साथ-साथ चल रही याद।
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।
(1) कवि किसे धन्यवाद देता है?
(क) राही को।
(ख) मित्रों को।
(ग) परिवार जन को।
(घ) जीवन-मार्ग पर जिस-जिससे स्नेह मिला।
(2) जीवन-मंजिल को तय कर लेना खेल क्यों नहीं है?
(क) समय का अभाव।
(ख) लघु जीवन।
(ग) सीमित पग-डग।

(घ) निर्धनता।

(3) कवि की 'थकावट' कब दूर हुई?

(क) जब स्नेह के दो शब्द मिले।

(ख) जब आराम मिला।

(ग) जब साथ मिला।

(घ) जब वह प्रसन्न हुआ।

(4) हमेशा हमारे साथ क्या रहता है?

(क) साथियों का साथ।

(ख) साथियों की यादें।

(ग) साथियों का स्नेह।

(घ) साथियों की मित्रता।

(5) 'अवलम्बित' शब्द का अर्थ है-

(क) विलम्ब।

(ख) परतंत्र।

(ग) आश्रित।

(घ) सहयोग।

प्रश्न 9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिए- अंक 5

ओ नए साल, कर कुछ कमाल, जाने वाले को जाने दे,
दिल से अभिनंदन करते हैं, कुछ नई उमंगें आने दे।
आने जाने से क्या डरना, ये मौसम आते जाते हैं,
तन झुलसे शिखर दुपहरी में कभी बादल भी छा जाते हैं।
इक वह मौसम भी आता है, जब पत्ते भी गिर जाते हैं,
हर मौसम को मनमीत बना, नवगीत खुशी के गाने दे।
जो भूल हुई जा भूल उसे, अब आगे भूल सुधार तो कर,
बदले में प्यार मिलेगा भी, पहले औरों से प्यार तो कर,
फूटेंगे प्यार के अंकुर भी, वह जमीं ज़रा तैयार तो कर,
भले जीत का जश्न मना, पर हार को भी स्वीकार तो कर,
मत नफ़रत के शोले भड़का, बस गीत प्यार के गाने दे।
इस दुनिया में लाखों आए और आकर चले गए,
कुछ मालिक बनकर बैठ गए, कुछ माल पचाकर चले गए,
कुछ किलों के अंदर बंद रहे, कुल किले बनाकर चले गए,
लेकिन कुछ ऐसे भी आए, जो शीश चढ़ाकर चले गए,
उन वीरों के पद-चिह्नों पर, अब 'साथी' सुमन चढ़ाने दे।

(क) कवि नए साल से क्या कामना कर रहे हैं ?

(*i*) स्वस्थ बने रहने की
(*ii*) नई उमंगों के आगमन की
(*iii*) सुख व समृद्धि की
(*iv*) लंबी आयु की
(ख) मौसम के आने-जाने से अभिप्राय है-
(*i*) क्रमशः ऋतुओं का आवागमन
(*ii*) अतिथियों का आवागमन
(*iii*) पशु-पक्षियों का आवागमन
(*iv*) सुखों व दुखों का आवागमन
(ग) ''भले जीत का जश्न मना.....'पंक्ति में कवि क्या प्रेरणा दे रहे हैं?
(*i*) सफलता-असफलता को समान भाव से स्वीकारने की
(*ii*) सफलता में स्वयं को भूल जाने की
(*iii*) असफलता में हताश हो जाने की
(*iv*) परिस्थितियों के अनुसार कर्म करने की
(घ) 'जो शीश चढ़ाकर चले गए'-पंक्ति किनकी ओर संकेत कर रही है?
(*i*) ईश्वर भक्तों की ओर
(*ii*) शहीदों की ओर
(*iii*) देशवासियों की ओर
(*iv*) तपस्वियों की ओर
(ङ) दुनिया में कैसे-कैसे लोग आए और चले गए ?
(*i*) मालिक बनने वाले
(*ii*) किले में रहने वाले
(*iii*) किले बनाने वाले
(*iv*) उपर्युक्त सभी
प्रश्न 10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिए- अंक 5
''सच हम नहीं, सच तुम नहीं
सच है महज़ संघर्ष ही
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम या कि तुम।
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झर कर कुसुम।
जो लक्ष्य भूल रूका नहीं।
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी ही रही।
सच हम नहीं, सच तुम नहीं।
ऐसा करो जिससे न प्राणों में कही जड़ता रहे।

जो है जहाँ चुपचाप अपने-आप से लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें
काँटे चुभें, कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान, संदेश जीवन का यही।
(1) काव्यांश के आधार पर सच का अर्थ है-
(क) सत्य के मार्ग पर चलना
(ख) लक्ष्य को केन्द्र बनाए रखना
(ग) जीवन में निरन्तर संघर्ष करना
(घ) हार न मानना
(2) 'जो है जहाँ चुपचाप अपने-आपसे लड़ता रहे'- पंक्ति में अपने-आपसे लड़ने का अभिप्राय-
(क) खुद से लड़ाई लड़ना
(ख) सबसे छुपकर लड़ना
(ग) अपनों से निरंतर संघर्ष कर आगे बढ़ना
(घ) विपरीत स्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए निरन्तर संघर्षरत रहना
(3) 'काँटे' और 'कलियाँ' प्रतीक हैं-
(क) मित्र और शत्रु के
(ख) जीवन में मिलने वाले दु:ख-सुख के
(ग) प्रकृति के
(घ) विपरीत स्थितियों के
(4) 'जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झर कर कुसुम' में प्रयुक्त अलंकार-
(क) अतिश्योक्ति अलंकार
(ख) उत्प्रेक्षा अलंकार
(ग) उपमा अलंकार
(घ) रूपक अलंकार
(5) काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'अपने-आप में' सर्वनाम का निम्नलिखित में से कानै सा भेद है-
(क) पुरूषवाचक सर्वनाम
(ख) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(ग) निश्चयवाचक सर्वनाम
(घ) निजवाचक सर्वनाम

****

उत्तरमाला

उत्तर

प्रश्न 1. 1 × 5 = 5

(*i*) ग

(*ii*) क

(*iii*) ख

(*iv*) घ

(*v*) ख

उत्तर

प्रश्न 2. 1 × 5 = 5

(*i*) ग

(*ii*) ख

(*iii*) ग

(*iv*) क

(*v*) ख

उत्तर

प्रश्न 3. 1 × 5 = 5

(क) (*iii*) 1

(ख) (*iv*) 1

(ग) (*ii*) 1

(घ) (*i*) 1

(ङ) (*iv*) 1

उत्तर

प्रश्न 4. 1 × 5 = 5

(क) (*iii*) 1

(ख) (*ii*) 1

(ग) (*iv*) 1

(घ) (*iv*) 1

(ङ) (*iv*) 1

उत्तर

प्रश्न 5. 1 × 5 = 5

(क) (*iii*) 1

(ख) (*iv*) 1

(ग) (*ii*) 1

(घ) (*iii*) 1

(ङ) (*iv*) 1

उपसर्ग

जो शब्दांश किसी मूल शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, उन शब्दांशों को उपसर्ग कहते हैं। जैसे –

'हार' एक शब्द है। इस शब्द के पहले यदि 'सम्, वि, प्र', उपसर्ग जोड़ दये जायें, तो– सम्+हार = संहार, वि+हार = विहार, प्र+हार = प्रहार तथा उप+हार = उपहार शब्द बनेंगे। यहाँ उपसर्ग जुड़कर बने सभी शब्दों का अर्थ 'हार' शब्द से भिन्न है।

1. उपसर्गों का अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं होता, मूल शब्द के साथ जुड़कर ये नया अर्थ देते हैं। इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता। जब किसी मूल शब्द के साथ कोई उपसर्ग जुड़ता है तो उनमें सन्धि के नियम भी लागू होते हैं। संस्कृत उपसर्गों का अर्थ कहीं–कहीं नहीं भी निकलता है। जैसे – 'आरम्भ' का अर्थ है– शुरुआत। इसमें 'प्र' उपसर्ग जोड़ने पर नया शब्द 'प्रारम्भ' बनता है जिसका अर्थ भी 'शुरुआत' ही निकलता है।

2. विशेष—

यह जरूरी नहीं है कि एक शब्द के साथ एक ही उपसर्ग जुड़े। कभी–कभी एक शब्द के साथ एक से अधिक उपसर्ग जुड़ सकते हैं। जैसे–

सम्+आ+लोचन	=	समालोचन।
सु+आ+गत	=	स्वागत।
प्रति+उप+कार	=	प्रत्युपकार।
सु+प्र+स्थान	=	सुप्रस्थान।
सत्+आ+चार	=	सदाचार।
अन्+आ+गत	=	अनागत।
अन्+आ+चार	=	अनाचार।

अ+परा+जय = अपराजय।

3. उपसर्ग के भेद –

हिन्दी भाषा में चार प्रकार के उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं—

(1) संस्कृत के उपसर्ग,

(2) देशी अर्थात् हिन्दी के उपसर्ग,

(3) विदेशी अर्थात् उर्दू, अंग्रेजी, फारसी आदि भाषाओं के उपसर्ग,

(4) अव्यय शब्द, जो उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होते हैं।

संस्कृत के उपसर्ग

4.

संस्कृत में कुल बाईस उपसर्ग होते है। वे उपसर्ग तत्सम शब्दों के साथ हिन्दी में प्रयुक्त होते है। इसलिए इन्हें संस्कृत के उपसर्ग कहते हैं। यथा—

उपसर्ग – अर्थ – उदाहरण

1. अति – अधिक, ऊपर – अत्यन्त, अतिरिक्त, अतिवृष्टि, अत्यधिक, अतिशय, अतिक्रमण, अतिशीघ्र, अत्याचार, अत्युक्ति, अत्यावश्यक, अत्यल्प, अतिसार, अतीव।

2. अधि – प्रधान, श्रेष्ठ – अधिकार, अधिपति, अधिनियम, अध्यक्ष, अधिकरण, अध्ययन, अधिगम, अधिकृत, अधिनायक, अधिभार, अधिशेष, अध्यादेश, अधीक्षण, अध्यापक, अधिग्रहण, अध्याय।

3. अनु – पीछे, क्रम – अनुचर, अनुसार, अनुग्रह, अनुकूल, अनुकरण, अनुरूप, अनुशासन, अनुरोध, अनुमान, अनुज, अनुबन्ध, अनुष्ठान, अनूदित, अनुप्रास, अन्वेषण, अनुराग, अनुभव, अनुदार, अनुदिन, अन्विति, अनुज्ञा, अनुवर्तन, अन्वय, अनुभार, अन्वीक्षा, अन्वीक्षण, अन्विष्ट, अन्वेक्षक, अन्वेषक।

4. अप – बुरा, अभाव – अपयश, अपकार, अपव्यय, अपहरण, अपमान, अपवाद, अपशब्द, अपकीर्ति, अपवर्तन, अपशिष्ट, अपवर्जन, अपेक्षा, अपकर्षण, अपघटन, अपवाह, अपभ्रंश।

5. अव – नीचे, हीन, बुरा – अवगुण, अवतार, अवनति, अवरुद्ध, अवधारणा, अवशेष, अवसान, अवकाश, अवमूल्यन, अवसाद, अवधान, अवलोकन, अवसर, अवचेतना, अवासि, अवगत, अवज्ञा, अवस्था, अवमानना।

6. अभि – सामने, पास – अभिमान, अभिमुख, अभिमत, अभिनय, अभिनव, अभिवादन, अभियोग, अभिमन्यु, अभिज्ञान, अभियुक्त, अभिषेक, अभिनेता, अभिराम, अभिवृद्धि, अभिलाषा, अभिकरण, अभीष्ट, अभ्यास, अभ्यांतर, अभ्युदय, अभ्यागत, अभिशाप।

7. आ – तक, सहित – आजन्म, आमरण, आगमन, आक्रमण, आहार, आयात, आतप, आजीवन, आदान, आसार, आकर्षण, आलेख, आभार, आधार, आगार, आश्रय, आगत, आकर।

8. उत् – ऊँचा, श्रेष्ठ – उत्साह, उत्कण्ठा, उत्थान, उत्तम, उत्पन्न, उत्पत्ति, उत्पीड़न, उत्कृष्ट, उद्धार, उज्ज्वल, उद्योग, उल्लेख।

9. उप – पास, गौण, सहायक – उपवन, उपदेश, उपमन्त्री, उपकार, उपनाम, उपनयन, उपस्थिति, उपन्यास, उपचार, उपयोग, उपांग, उपमन्यु, उपराष्ट्रपति,

उपकृत, उपहार, उपसंहार, उपलक्ष्य, उपहास, उपकुलपति, उपयुक्त, उपायुक्त, उपखण्ड, उपक्रम, उपग्रह।

10. दुर् – बुरा, कठिन, विपरीत – दुर्जन, दुर्दशा, दुर्लभ, दुराचार, दुराशा, दुराग्रह, दुर्भाग्य, दुर्योधन, दु□म, दुर्बल, दु□ति, दुर्वासा, दुर्भिक्ष, दु□ुण।

11. दुस् – बुरा, कठिन – दुस्साहस, दुष्कार्य, दुश्चरित्र, दुष्कर, दुश्चिन्ता, दुश्शासन, दुष्कर्म, दुस्साध्य, दुस्तर, दुःस्पर्श।

12. नि – रहित, विशेष, अधिकता – नि□म, निपुण, निवारण, निडर, निवास, निदान, निरोध, नियम, निबन्ध, निमग्न, निकास, निहित, निहत्था, निधि, निवेश, न्यस्त, निलंबन, निकम्मा, निवृत्त, निकाय, निधन।

13. निर् – निषेध, विपरीत, बड़ा, बाहर – निर्लज्ज, निर्भय, निर्णय, निर्दोष, निरपराध, निराकार, निराहार, निर्धन, नीरो□, निराशा, निर्विघ्न, निर्दोष, नि□ुण, निरभिमान, निर्वाह, निर्जन, निर्यात, निर्दयी, निर्मल, निर्भीक, निरीक्षक, निर्माता, निर्वाचन, निर्विरोध, निरर्थक, निरस्त, निर्निमेष, निर्भय, निरंजन, निरुपम।

14. निस् – रहित, अच्छी तरह से, बड़ा – निश्चल, निश्चय, निस्सार, निस्सन्देह, निश्छल, निष्काम, निस्संकोच, निस्स्वार्थ, निस्तारण, निष्कपट, निष्कासन।

15. परा – पीछे, तिरस्कार, विपरीत – पराजय, पराभव, पराक्रम, परामर्श, पराधीन, परावर्तन, परास्त, पराकाष्ठा।

16. परि – पूर्ण, पास, चारों ओर – परिणाम, परिवर्तन, परिश्रम, परिक्रमा, परिवार, परिपूर्ण, परिमार्जन, परिमाप, परिसर, परिधि, परिणति, परिपक्व, परिचर्या, परिचर्चा, परिकल्पना, परिभ्रमण, पर्यावरण, पर्यवेक्षण, परीक्षा, परिणय, परिग्रह, पर्यटन, परिचय।

17. प्रति – प्रत्येक, उल्टा – प्रतिदिन, प्रतिनिधि, प्रतिपक्ष, प्रत्यक्ष, प्रतिकूल, प्रतिक्षण, प्रतिमास, प्रतिरोध, प्रतिलिपि, प्रतिमान, प्रतिग्राम, प्रतिज्ञा, प्रत्यावर्तन, प्रतिमा, प्रतिष्ठा, प्रतिभा, प्रतीक्षा।

18. प्र – अधिक, आ□े, उत्कृष्ट – प्रथम, प्रबल, प्रहार, प्रभाव, प्रकार, प्रदान, प्रयो□, प्रचार, प्रक्रिया, प्रवाह, प्रपंच, प्र□ति, प्रदर्शन, प्रलय, प्रमाण, प्रसिद्ध, प्रख्यात, प्रस्थान, प्रेषण, प्रमेय, प्रवेश, प्रलाप, प्रज्वलित, प्रमोद, प्रकाश, प्रदीप।

19. वि – विशेष, अभाव, भिन्न – वियो□, विभा□, विनाश, विज्ञान, विजय, विदेश, व्याकुल, विकृत, विकट, विपक्ष, विचार, विशेष, विराम, विकल, विमल, विरोध, विकास, विवृत्त, विमान, व्याकरण, विख्यात, विलोम, विवाद, विवाह।

20. सम् – सम्पूर्ण, उत्तम, अच्छी तरह – संसार, सम्मान, संतोष, संयो□, संकल्प, संचय, सं□म, सं□ति, सम्बोधन, समीक्षा, संहार, संवाद, सम्मति, समाचार,

समुचित, समर्थ, सन्देह, संविधान, संचालन, समर्पण, संक्षेप, संशय, सम्पर्क, संसद, संयम, सम्बन्ध, संकीर्ण, समग्र।

21. अपि – निश्चय, और भी – अपितु, अपिधान, अपिहित, अपिबद्ध, अपिवृत्त।

22. सु – अच्छा, अधिक, सरल – सुलेख, सुयश, सुपुत्र, सुयोग, सुगन्ध, सुगति, सुबोध, सुपुत्र, सुकन्या, सुफल, सुकाल, सुकर्म, सुगम, सुकर, सुदिन, सुलभ, सुमन, सुशील, सुविचार, सुमंत्र, सुनार, स्वागत, सुदूर, सुदृढ़, सुनैना, सुरक्षा, सुमति, सुभाष, सुरेखा, सुनीता, सुलक्षणा, सुपारी, सुचारु, सुपुत्री।

हिन्दी के उपसर्ग

उपसर्ग – अर्थ – उदाहरण

• अ – रहित, निषेध – अचेतन, अजान, अथाह, असाध्य, अकाट्य, अटल, अलग, अछूत, अभागा, अमर, अज्ञान, अमोल, अमर्त्य, अधर्म, अकाल, अतुल, अतल, अरुचि, अवैतनिक, अक्षत, अजीर्ण, अपथ्य, अचिर, अजर, अनाम, अजन्मा, अकारण, अहित, अहर्ता।

• अन – अभाव, निषेध – अनपढ़, अनजान, अनबन, अनमोल, अनमेल, अनहित, अनसुनी, अनकही, अनहोनी, अनदेखी, अनमना, अनखाया, अनचाहा, अनसुना।

• अध – आधा – अधपका, अधमरा, अधजला, अधखिला, अधकचरा।

• आप – स्वयं – आपबीती, आपकाज, आपकही, आपदेखी, आपसुनी, आपकर, आपनिधि।

• उ – उचक्का, उजड़ना, उछलना, उखाड़ना, उभार।

• उन – एक कम – उन्नीस, उनतीस, उनचालीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर, उनासी।

• औ – हीन, निषेध – औगुण, औसर, औघड़, औघट, औरस।

• क – बुरा – कपूत, कलंक, कठोर, कसूर, कमर, कमाल, कपास, कगार, कजरा, कमरा, कजली, कचरा।

• का – बुरा – कायर, कापुरुष, काजल, कातर, कातिल, कातना, कायम, काफ़िर।

• कु – बुरा, हीन – कुरूप, कुपुत्र, कुकर्म, कुख्यात, कुमार्ग, कुपथ, कुगति, कुमति, कुकृत्य, कुविचार, कुपात्र, कुसंग, कुसंगति, कुयोग, कुमाता, कुचाल, कुचक्र, कुरीति, कुप्रबन्ध।

• चौ – चार – चौराहा, चौपाल, चौपड़, चौमासा, चौपाया, चौरंगा, चौसर, चौपाई, चौमुखा, चौकोर, चौगुना, चौबीस, चौखट, चौतरफा।

• ति – तीन – तिराहा, तिकोना, तिरंगा, तिपाई, तिमाही, तिगुनी, तिकड़ी।

• दु – दो, बुरा – दुमुँहा, दुबला, दुरंगा, दुलती, दुनाली, दुराहा, दुकाल, दुभाषिया, दुशाला, दुलार, दुधारू, दुपहिया।

• नाना – विविध – नानाप्रकार, नानारूप, नानाजाति।

• नि – अभाव – निकम्मा, निहत्था, निठल्ला, निडर, निवास, निदान।

• पच – पाँच – पचरंगा, पचमेल, पचकूटा।

• पर – दूसरा – परकाज, परदेश, परकोटा, परहित, परदेसी, परजीवी, परपुरुष, परनिंदा, पराधीन, परोपकार।

• बहु – ज्यादा – बहुमूल्य, बहुवचन, बहुमत, बहुधा, बहुभुज, बहुब्रीहि।

• बिन – बिना – बिनखाया, बिनब्याहा, बिनबोया, बिनचाहा, बिनजाना, बिनदेखा, बिनबुलाया, बिनसोचा।

• भर – पूरा – भरपेट, भरपूर, भरकम, भरसक, भरतार, भरमार, भरपाई।

• स – सहित – सपूत, सफल, सबल, सजग, सचेत, सकाम, ससम्मान, सप्रेम, सरस, सघन, सजीव, सजग, सकुशल।

• सम – समान – समतल, समदर्शी, समकक्ष, समकोण, समबाहु, समरस, समकालीन, समवर्ती, सममित।

विदेशी उपसर्ग

हिन्दी में विदेशी भाषाओँ के उपसर्ग भी प्रयुक्त होते हैँ। विशेष रूप से उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के कई उपसर्ग अपनाये जाते हैँ। इनमें से कतिपय इस प्रकार हैँ—

(क) उर्दू–फारसी के उपसर्ग –

• अल – निश्चित – अलगरज, अलविदा, अलबत्ता, अलहदा, अलबेला, अलमस्त।

• कम – थोड़ा, हीन – कमबख्त, कमजोर, कमसिन, कमकीमत, कमअक्ल, कमखर्च।

• खुश – प्रसन्न, अच्छा – खुशबू, खुशदिल, खुशमिजाज, खुशनुमा, खुशहाल, खुशनसीब, खुशकिस्मत, खुशखबरी।

• गैर – निषेध, रहित – गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरकौम, गैरमर्द, गैरसरकारी, गैरवाजिब, गैरजिम्मेदार।

• दर – में – दरअसल, दरकार, दरमियान, दरबदर, दरहकीकत, दरबार, दरखास्त, दरकिनार, दरगुजर।

• ना – नहीं – नालायक, नापसंद, नामुमकिन, नाकाम, नाबालिग, नाराज, नादान, नाचीज, नागवार, नाखुश, नासमझ, नापाक, नाइंसाफ।

• बा – अनुसार, साथ – बामौका, बाकायदा, बाइज्जत, बामुलायजा, बाअदब, बादल, बादाम।

• बद – बुरा – बदनाम, बदमाश, बदचलन, बदहजमी, बदबू, बदतमीज, बदहवास, बदसूरत, बदइंतजाम, बदकिस्मत, बदरंग, बदहाल।
• बे – बिना, रहित – बेईमान, बेचारा, बेअक्ल, बेहिसाब, बेमिसाल, बेहाल, बेवकूफ, बेदाग, बेकसूर, बेपरवाह, बेकार, बेकाम, बेघर, बेवफा, बेदर्द, बेसमझ, बेवजह, बेचैन, बेशुमार, बेहोश, बेइज्जत, बेरहम, बेसहारा, बेरोजगार, बेवक्त, बेकरार, बेअसर।
• ला – परे, बिना – लापरवाह, लाचार, लावारिस, लापता, लाजवाब, लाइलाज।
• सर – मुख्य – सरकार, सरदार, सरपंच, सरहद, सरनाम, सरफरोश।
• हम – साथ, समान – हमदर्दी, हमराज, हमदम, हमवतन, हमराह, हमदर्द, हमउम्र, हमसफर, हमशक्ल, हमजोली, हमराही, हमपेशा।
• हर – प्रत्येक – हरदिन, हरएक, हरसाल, हरदम, हररोज, हरबात, हरचीज, हरबार, हरवक्त, हरघड़ी, हरहाल, हरकोई, हरतरफ।
• ब – सहित – बखूबी, बतौर, बशर्तें, बतर्ज, बकौल, बदौलत, बमुश्किल, बदस्तूर, बगैर, बनाम।
• बिला – बिना – बिलाकसूर, बिलावजह।
• बेश – अत्यधिक – बेशकीमती, बेशकीमत।
• नेक – भला – नेकराह, नेकदिल, नेकनाम।
• ऐन – ठीक – ठीक – ऐनवक्त, ऐनजगह, ऐनमौके।
(ख) अंग्रेजी के उपसर्ग –
• सब – छोटा – सब रजिस्ट्रार, सब इन्सपेक्टर, सब कमेटी, सब जज।
• हैड – प्रमुख – हैडमास्टर, हैडऑफिस, हैडकांस्टेबिल।
• एक्स – मुक्त – एक्सप्रेस, एक्स प्रिँसिपल, एक्स कमीश्नर, एक्स स्टूडेण्ट।
• हाफ – आधा – हाफटिकट, हाफरेट, हाफकमीज, हाफपेन्ट।
• को – सहित – को-ऑपरेटिव, को-ऑपरेशन, को-स्टार।
• डिप्टी – स्थानापन्न प्रतिनिधि – डिप्टी मिनिस्टर, डिप्टी मैनेजर, डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी रजिस्ट्रार।
• वाइस – उप – वाइस प्रिँसिपल, वाइस चांसलर, वाइस प्रेसीडेँट।
• जनरल – सामान्य – जनरल मैनेजर, जनरल इन्श्योरेँस।
• चीफ – मुख्य – चीफ मिनिस्टर, चीफ सेक्रेटरी।

उपसर्ग की तरह प्रयुक्त अव्यय

उपर्युक्त उपसर्गों के अतिरिक्त हिन्दी में संस्कृत के कुछ अव्यय, विशेषण और शब्दांश भी उपसर्गों की तरह प्रयुक्त होते हैं। जैसे –

• अ – निषेध – अप्राकृतिक, अकृत्रिम, अधर्म, अनाथ, अपूर्ण, अभाव, अमूल्य।

• अधः – नीचे – अधःपतन, अधोगति, अधोमुख।

• अन् – निषेध – अनन्त, अनादि, अनागत, अनर्थ।

• अन्तर्/अन्तः – भीतर – अन्तःकरण, अन्तःप्रान्तीय, अन्तर्गत, अन्तरात्मा, अन्तर्धान, अन्तर्दशा, अन्तर्यामी, अन्तरिक्ष, अन्तर्मन, अन्तर्ज्ञान, अन्तर्देशीय, अन्तर्द्वन्द्व, अन्तर्राष्ट्रीय।

• अम– अमावस्या, अमान्य।

• अलम् – बहुत, काफी – अलंकरण, अलंकृत, अलंकार।

• आत्म – स्वयं– आत्मकथा, आत्मघात, आत्मबल, आत्मानुभूति, आत्महत्या, आत्मज, आत्मश्लाघा, आत्मसमर्पण, आत्मोत्सर्ग, आत्मज्ञान, आत्मसात्, आत्मविश्वास।

• आविर्/आविः – प्रकट – आविर्भाव, आविर्भूत।

• आविष्/आविः – आविष्कार, आविष्कृत।

• इति – अन्त, ऐसा – इतिश्री, इतिहास, इत्यादि, इतिवृत्त, इतिवार्ता।

• चिर – बहुत – चिरकाल, चिरन्तन, चिरायु, चिरंजीव, चिरस्थायी, चिरपरिचित, चिरप्रतीक्षित, चिरस्मरणीय, चिरनिद्रा।

• तत् – उस समय – तल्लीन, तन्मय, तद्भव, तदनन्तर, तत्काल, तत्क्षण, तत्पश्चात्, तत्सम, तत्कालीन, तदुपरान्त, तत्पर।

• तिरस्/तिरः – हीन, बुरा – तिरस्कार, तिरस्कृत, तिरोभाव, तिरोहित, तिरोधान।

• प्राक् – पहले – प्राक्कथन, प्राक्कलन, प्रागैतिहासिक, प्राग्वैदिक, प्राक्कन, प्राक्कृत।

• न – अभाव – नकुल, नपुंसक, नास्तिक, नग।

• प्रातः – सुबह – प्रातःकाल, प्रातःवन्दना, प्रातःस्मरणीय।

• प्रादुर् – प्रकट – प्रादुर्भाव, प्रादुर्भूत।

• पुनर्/पुनः – फिर – पुनर्जन्म, पुनरागमन, पुनरुदय, पुनर्विवाह, पुनर्मिलन, पुनर्विचार, पुनरुद्धार, पुनर्वास, पुनर्मूल्यांकन, पुनरीक्षण, पुनरुत्थान, पुनर्निर्माण।

• पुरा– प्राचीन – पुरातन, पुरातत्त्व, पुरापथ, पुराण, पुरावशेष, पुरावीन।

• पुरः – पुरोहित, पुरोधा, पुरोगामी।

• पुरस् – आगे – पुरस्कार, पुरश्चरण, पुरस्कृत।

• पूर्व – पहले – पूर्वज, पूर्वाग्रह, पूर्वार्द्ध, पूर्वार्द्ध, पूर्वानुमान, पूर्वनिश्चित, पूर्वाभिमुखी, पूर्वापेक्षा, पूर्वोक्त।

• बहिर्/बहिः – बाहर – बहिरागत, बहिर्जात, बहिर्भाव, बहिरंग, बहिर्द्वन्द्व, बहिर्मुखी, बहिर्गमन।
• बहिस्/बहिः – बाहर – बहिष्कार, बहिष्कृत।
• स – सहित – सजल, सपत्नीक, सहर्ष, सपरिवार, सादर, सकुशल, सहित, सोद्देश्य।
• सत् – सम्मान – सत्कर्म, सत्कार, सद्गति, सज्जन, सत्धर्म, सत्संग, सत्कार्य, सच्चरित्र।
• स्व – अपना – स्वनाम, स्वजाति, स्वशासन, स्वाभिमान, स्वतंत्र, स्वदेश, स्वराज्य, स्वाधीन, स्वधर्म, स्वभाव, स्वार्थ, स्वहित, स्वजन, स्वेच्छा।
• स्वयं – अपने आप – स्वयंभू, स्वयंवर, स्वयंसेवक, स्वयंपाणि, स्वयंसिद्ध।
• सह – साथ – सहाध्यायी, सहपाठी, सहकर्मी, सहोदर, सहयोगी, सहचर, सहयोग, सहकार, सहयात्री, सहानुभूति।

कुछ अन्य शब्द जो उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होते हैं –
• अद्य – अद्यतन, अद्यावधि।
• आवा – आवागमन, आवाजाही।
• उद् – उद्गम, उद्गार।
• कत् – कदम्ब, कदाचार, कदर्थ, कदश्च, कदाकार।
• काम – कामयाब, कामकाज, कामचोर, कामचलाऊ, कामदेव, कामधेनु, कामशास्त्र, कामांध, कामाक्षी, कामाख्या, कामाग्नि, कामातुर, कामायनी, कामोन्माद।
• बर – बरदाश्त, बरबाद, बरकरार, बरख्वास्त।
• भू – भूगोल, भूधर, भूचर, भूतल, भूकम्प, भूगर्भ, भूदेव, भूपति, भूमंडल, भूमध्यसागर, भूख, भूखा, भूस्वामी, भूपालक।
• स्वी – स्वीकार्य, स्वीकार, स्वीकृत।
• मंद – मंदबुद्धि, मंदगति, मंदाग्नि, मंदभाग्य।
• मत – मतदान, मतपत्र, मतदाता, मतवाला, मतगणना, मतसंग्रह, मतभेद, मताधिकार, मतावलम्बी।
• मद – मदमाता, मदमस्त, मदकारी, मदमत्त।
• मधु – मधुकर, मधुमक्खी, मधुसूदन, मधुबन, मधुबाला, मधुमेह, मधुशाला, मधुस्वर।
• मन – मनचला, मनचाहा, मनमोहन, मनभाया, मनहर, मनभावन, मनगढ़ंत, मनमुटाव, मनमौजी, मनमानी, मनसब।
• मरु – मरुभूमि, मरुस्थल, मरुप्रदेश, मरुधर।
• महा – महाभियोग, महाभारत, महायज्ञ, महायान, महारथी, महाराज, महाराष्ट्र,

महासागर, महामंत्री, महाप्रयाण, महाकाल, महावीर।

• मान – मानचित्र, मानदंड, मानहानि, मानदेय, मानसून, मानसरोवर।

• मित – मितभाषी, मितव्यय, मितव्ययी, मिताहार।

• मुँह – मुँहफट, मुँहबोला, मुँहमाँगा, मुँहदिखाई, मुँहतोड़।

• मूल – मूलभूत, मूलधन, मूलमँत्र, मूलग्रन्थ, मूलबंध।

• यथा – यथाशक्ति, यथासंभव, यथासमय, यथावधि, यथाशीघ्र, यथास्थान, यथास्थिति।

• रंग – रंगमंच, रंगशाला, रंगरू□, रंगढंग, रंगरेज, रंगरूट, रंगरसिया।

• रक्त – रक्ततुण्ड, रक्तवर्ण, रक्तस्राव, रक्तकंठ।

• रफू – रफूचक्कर, रफूगर।

• लेखा – लेखाकार, लेखाकर्म, लेखा□ाल, लेखाचित्र, लेखांकन।

• लोक – लेकगीत, लोककथा, लोकाचार, लोकनाथ, लोक□ाल, लोकायुक्त, लोकहित, लोकतंत्र।

• वज्र – वज्र□ाणि, वज्रदंत, वज्रांग, वज्रासन, वज्रायुध।

• वर्ग – वर्गमूल, वर्गफल, वर्गाकार।

• सार्व – सार्वजनिक, सार्वअन्तर, सार्वभौम, सार्वकालिक, सार्वदेशिक।

प्रत्यय

जो शब्दांश किसी मूल शब्द के पीछे या अन्त में जुड़कर नवीन शब्द का निर्माण करके पहले शब्द के अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। कभी–कभी प्रत्यय लगाने पर भी शब्द के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीँ होता है। जैसे— बाल–बालक, मृदु–मृदुल।

प्रत्यय लगने □र शब्द एवं शब्दांश में संधि नहीँ होती बल्कि शब्द अन्तिम वर्ण में मिलने वाले प्रत्यय के स्वर की मात्रा लग जाती है, व्यंजन होने □र वह यथावत रहता है। जैसे— लोहा+आर = लुहार, नाटक+कार = नाटककार।

शब्द–रचना में प्रत्यय कहीँ □र अ□ूर्ण क्रिया, कहीँ □र सम्बन्धवाचक और कहीं □र भाववाचक के लिये प्रयुक्त होते हैँ। जैसे— मानव+ईय = मानवीय। लघु+ता = लघुता। बूढा+आ□ा = बुढा□ा।

हिन्दी में प्रत्यय तीन प्रकार क□ होत□हैं—

(1) सं□कृत क□ प्रत्यय,

(2) हिन्दी क□ प्रत्यय तथा

(3) विदे□ी भाषा क□ प्रत्यय।

सं□कृत क□ प्रत्यय

सं□कृत व्याकरण में शब्दों और मूल धातुओं स□जो प्रत्यय जुड़त□हैं, व□ प्रत्यय दो प्रकार क□ होत□हैं –

1. कृदन्त प्रत्यय –

जो प्रत्यय मूल धातुओं अर्थात् क्रिया □द क□ मूल स्वरू□ क□ अन्त में जुड़कर नय□शब्द का निर्माण करत□हैं, उन्हें कृदन्त या कृत् प्रत्यय कहत□हैं। धातु या क्रिया क□ अन्त में जुड़न□स□बनन□वाल□शब्द सं□ा या विशे□ण होत□ हैं। कृदन्त प्रत्यय क□ निम्नलिखित तीन भे□ होत□हैं –

(1) कर्तृवाचक कृदन्त – व□प्रत्यय जो कर्तावाचक शब्द बनात□हैं, कर्तृवाचक कृदन्त कहलात□हैं। जैस□–

प्रत्यय – शब्द–रू□

• तृ (ता) – कर्त्ता, ने□ा, भ्राता, □ाता, कृत, दाता, ध्याता, ज्ञाता।

• अक – □ाठक, ले□क, □ालक, विचारक, गायक।

(2) विशे□णवाचक कृदन्त – जो प्रत्यय क्रिया□द स□विशे□ण शब्द की रचना करत□हैं, विशे□णवाचक प्रत्यय कहलात□हैं। जैस□–

• त – आगत, विगत, विश्रुत, कृत।

• तव्य – कर्तव्य, गन्तव्य, ध्यातव्य।

• य – नृत्य, □ूज्य, स्तुत्य, खाद्य।

• अनीय – □ठनीय, □ूजनीय, स्मरणीय, उल्ले□नीय, शोचनीय।

(3) भाववाचक कृदन्त – व□प्रत्यय जो क्रिया स□भाववाचक सं□ा का निर्माण करत□हैं, भाववाचक कृदन्त कहलात□हैं। जैस□–

• अन – ले□न, □ठन, हवन, गमन।

• ति – गति, मति, रति।

• अ – जय, लाभ, ले□, विचार।

2. तद्धित प्रत्यय –

जो प्रत्यय क्रिया □दों (धातुओं) क□ अतिरिक्त मूल सं□ा, सर्वनाम या विशे□ण

शब्दों के अन्त में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। जैसे— गुरु, मनुष्य, चतुर, कवि शब्दों में क्रमशः त्व, ता, तर, ता प्रत्यय जोड़ने पर गुरुत्व, मनुष्यता, चतुरतर, कविता शब्द बनते हैं।

तद्धित प्रत्यय के छः भेद हैं –

(1) भाववाचक तद्धित प्रत्यय – भाववाचक दद्धित से भाव प्रकट होता है। इसमें प्रत्यय लगने पर कहीं–कहीं पर आदि–स्वर की वृद्धि हो जाती है। जैसे –

प्रत्यय — शब्द–रूप

• अव – लाघव, गौरव, पाटव।

• त्व – महत्त्व, गुरुत्व, लघुत्व।

• ता – लघुता, गुरुता, मनुष्यता, समता, कविता।

• इमा – महिमा, गरिमा, लघिमा, लालिमा।

• य – पाण्डित्य, धैर्य, चातुर्य, माधुर्य, सौन्दर्य।

(2) सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय – सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय से सम्बन्ध का बोध होता है। इसमें भी कहीं–कहीं पर आदि–स्वर की वृद्धि हो जाती है। जैसे –

• अ – शैव, वैष्णव, तैल, पार्थिव।

• इक – लौकिक, धार्मिक, वार्षिक, ऐतिहासिक।

• इत – पीड़ित, प्रचलित, दुःखित, मोहित।

• इम – स्वर्णिम, अन्तिम, रक्तिम।

• इल – जटिल, फेनिल, बोझिल, पंकिल।

• ईय – भारतीय, प्रान्तीय, नाटकीय, भवदीय।

• य – ग्राम्य, काम्य, हास्य, भव्य।

(3) अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय – इनसे अपत्य अर्थात् सन्तान या वंश में उत्पन्न हुए व्यक्ति का बोध होता है। अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय में भी कहीं–कहीं पर आदि–स्वर की वृद्धि हो जाती है। जैसे –

• अ – पार्थ, पाण्डव, माधव, राघव, भार्गव।

• इ – दाशरथि, मारुति, सौमित्र।

• य – गालव्य, पौलस्त्य, शाक्य, गार्ग्य।

• एय – वार्ष्णेय, कौन्तेय, गांगेय, राधेय।

(4) पूर्णतावाचक तद्धित प्रत्यय – इसमें संख्या की पूर्णता का बोध होता है। जैसे –

• म – प्रथम, पंचम, सप्तम, नवम, दशम।

• थ/ठ – चतुर्थ, षष्ठ।

• तीय – द्वितीय, तृतीय।

(5) तारतम्यवाचक तद्धित प्रत्यय – दो या दो से अधिक वस्तुओं में श्रेष्ठता बतलाने के लिए तारतम्यवाचक तद्धित प्रत्यय लगता है। जैसे –

• तर – अधिकतर, गुरुतर, लघुतर।

• तम – सुन्दरतम, अधिकतम, लघुतम।

• ईय – गरीय, वरीय, लघीय।

• इष्ठ – गरिष्ठ, वरिष्ठ, कनिष्ठ।

(6) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय – गुणवाचक तद्धित प्रत्यय से संज्ञा शब्द गुणवाची बन जाते हैं। जैसे –

• वान् – धनवान्, विद्वान्, बलवान्।

• मान् – बुद्धिमान्, शक्तिमान्, गतिमान्, आयुष्मान्।

• त्य – पाश्चात्य, पौर्वात्य, दक्षिणात्य।

• आलु – कृपालु, दयालु, शंकालु।

• ई – विद्यार्थी, क्रोधी, धनी, लोभी, गुणी।

हिन्दी के प्रत्यय

संस्कृत की तरह ही हिन्दी के भी अनेक प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। ये प्रत्यय **यद्यपि** कृदन्त और तद्धित की तरह जुड़ते हैं, **परन्तु** मूल शब्द हिन्दी के तद्भव या देशज होते हैं। हिन्दी के सभी प्रत्ययों कों निम्न वर्गों में सम्मिलित किया जाता है—

(1) कर्तृवाचक – जिनसे किसी कार्य के करने वाले का बोध होता है, वे कर्तृवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –

प्रत्यय — शब्द–रूप

आर – सुनार, लोहार, , कुम्हार।

ओरा – चटोरा, खदोरा, नदोरा।

इया – दुखिया, सुखिया, रसिया, गडरिया।

इयल – मरियल, सड़ियल, दढ़ियल।

एरा – सपेरा, लुटेरा, कसेरा, लखेरा।

वाला – घरवाला, ताँगेवाला, झाड़ूवाला, मोटरवाला।

• वैया (ऐया) – गवैया, नचैया, रखवैया, खिवैया।

• हारा – लकड़हारा, पनिहारा।

• हार – राखनहार, चाखनहार।

• अक्कड़ – भुलक्कड़, घुमक्कड़, पियक्कड़।

• आकू – लड़ाकू।

• आड़ी – खिलाड़ी।

• ओड़ा – भगोड़ा।

(2) भाववाचक – जिनसे किसी भाव का बोध होता है, भाववाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –

• आ – प्यासा, भूखा, रुखा, लेखा।

• आई – मिठाई, रंगाई, सिलाई, भलाई।

• आका – धमाका, धड़ाका, भड़ाका।

• आपा – मुटापा, बुढापा, रण□ापा।

• आहट – चिकनाहट, कड़वाहट, घबड़ाहट, गरमाहट।

• आस – मिठास, खटास, भड़ास।

• ई – गर्मी, सर्दी, मजदूरी, पहाड़ी, गरीबी, खेती।

• पन – लड़कपन, बचपन, गँवारपन।

(3) सम्बन्धवाचक – जिनसे सम्बन्ध का भाव व्यक्त होता है, वे सम्बन्धवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –

• आई – बहनोई, ननदोई, रसोई।

• आड़ी – खिलाड़ी, पहाड़ी, अनाड़ी।

• एरा – चचेरा, ममेरा, मौसेरा, फुफेरा।

• एड़ी – भँगेड़ी, गँजेड़ी, नशेड़ी।

• आरी – लुहारी, सुनारी, मनिहारी।

• आल – ननिहाल, ससुराल।

(4) लघुतावाचक – जिनसे लघुता या न्यूनता का बोध होता है, वे लघुतावाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –

• ई – रस्सी, कटोरी, टोकरी, □ोलकी।

• इया – खटिया, लुटिया, चुटिया, □बिया, पुड़िया।

• ड़ा – मुखड़ा, दुखड़ा, चमड़ा।

• ड़ी – टुकड़ी, पगड़ी, बछड़ी।

• ओला – खटोला, मझोला, सँपोला।

(5) गणनावाचक प्रत्यय – जिनसे गणनावाचक संख्या का बोध है, वे गणनावाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –

• था – चौथा।

• रा – दूसरा, तीसरा।

• ला – पहला।

• वाँ – पाँचवाँ, दसवाँ, सातवाँ।

• हरा – इकहरा, दुहरा, तिहरा।

(6) सादृश्यवाचक प्रत्यय – जिनसे सादृश्य या समता का बोध होता है, उन्हें सादृश्यवाचक प्रत्यय कहते हैं। जैसे –

• सा – मुझ–सा, तुझ–सा, नीला–सा, चाँद–सा, गुलाब–सा।

• हरा – दुहरा, तिहरा, चौहरा।

• हला – सुनहला, रूपहला।

(7) गुणवाचक प्रत्यय – जिनसे किसी गुण का बोध होता है, वे गुणवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –

• आ – मीठा, ठंडा, प्यासा, भूखा, प्यारा।

• ईला – लचीला, गँठीला, सजीला, रंगीला, चमकीला, रसीला।

• ऐला – मटमैला, कषैला, विषैला।

• आऊ – बटाऊ, पंडिताऊ, नामधराऊ, खटाऊ।

• वन्त – कलावन्त, कुलवन्त, दयावन्त।

• ता – मूर्खता, लघुता, कठोरता, मृदुता।

(8) स्थानवाचक – जिनसे स्थान का बोध होता है, वे स्थानवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे –

• ई – पंजाबी, गुजराती, मराठी, अजमेरी, बीकानेरी, बनारसी, जयपुरी।

• इया – अमृतसरिया, भोजपुरिया, जयपुरिया, जालिमपुरिया।

• आना – हरियाना, राजपूताना, तेलंगाना।

• वी – हरियाणवी, देहलवी।

विदेशी प्रत्यय

हिन्दी में उर्दू के ऐसे प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं, जो मूल रूप से अरबी और फारसी भाषा से अपनाये गये हैं। जैसे –

• आबाद – अहमदाबाद, इलाहाबाद।

• खाना – दवाखाना, छापाखाना।

• गर – जादूगर, बाजीगर, शोरगर।
• ईचा – बगीचा, गलीचा।
• ची – खजानची, मशालची, तोपची।
• दार – मालदार, दूकानदार, जमींदार।
• दान – कलमदान, पीकदान, पायदान।
• वान – कोचवान, बागवान।
• बाज – नशेबाज, दगाबाज।
• मन्द – अक्लमन्द, भरोसेमन्द।
• नाक – दर्दनाक, शर्मनाक।
• गीर – राहगीर, जहाँगीर।
• गी – दीवानगी, ताजगी।
• गार – यादगार, रोजगार।

हिन्दी में प्रयुक्त प्रमुख प्रत्यय व उनसे बने प्रमुख शब्द :–

• अ – शैव, वैष्णव, तैल, पार्थिव, मानव, पाण्डव, वासुदेव, लूट, मार, तोल, लेख, पार्थ, दानव, यादव, भार्गव, माधव, जय, लाभ, विचार, चाल, लाघव, शाक्त, मेल, बौद्ध।
• अक – चालक, पावक, पाठक, लेखक, पालक, विचारक, खटक, धावक, गायक, नायक, दायक।
• अक्कड़ – भुलक्कड़, घुमक्कड़, पियक्कड़, कुदक्कड़, रुअक्कड़, फक्कड़, लक्कड़।
• अंत – गढ़ंत, लड़ंत, भिड़ंत, रटंत, लिपटंत, कृदन्त, फलंत।
• अन्तर – रुपान्तर, मतान्तर, मध्यान्तर, समानान्तर, देशांतर, भाषांतर।
• अतीत – कालातीत, आशातीत, गुणातीत, स्मरणातीत।
• अंदाज – तीरंदाज, गोलंदाज, बर्कंदाज, बेअंदाज।
• अंध – सड़ांध, मदांध, धर्मांध, जन्मांध, दोषांध।
• अधीन – कर्माधीन, स्वाधीन, पराधीन, देवाधीन, विचाराधीन, कृपाधीन, निर्णयाधीन, लेखकाधीन, प्रकाशकाधीन।
• अन – लेखन, पठन, वादन, गायन, हवन, गमन, झाड़न, जूठन, ऐंठन, चुभन, मंथन, वंदन, मनन, चिँतन, ढ़क्कन, मरण, चलन, जीवन।
• अना – भावना, कामना, प्रार्थना।
• अनीय – तुलनीय, पठनीय, दर्शनीय।
• अन्वित – क्रोधान्वित, दोषान्वित, लाभान्वित, भयान्वित, क्रियान्वित, गुणान्वित।

• अन्वय – पदान्वय, खंडान्वय।
• अयन – रामायण, नारायण, अन्वयन।
• आ – प्यासा, लेखा, फेरा, जोड़ा, प्रिया, मेला, ठंडा, भूखा, छाता, छत्रा, हर्जा, खर्चा, पीड़ा, रक्षा, झगड़ा, सूखा, रुखा, अटका, भटका, मटका, भूला, बैठा, जागा, पढ़ा, भागा, नाचा, पूजा, मैला, प्यारा, घना, झूला, ठेला, घेरा, मीठा।
• आइन – ठकुराइन, पंडिताइन, मुंशियाइन।
• आई – लड़ाई, चढ़ाई, भिड़ाई, लिखाई, पिसाई, दिखाई, पंडिताई, भलाई, बुराई, अच्छाई, बुनाई, कढ़ाई, सिँचाई, पढ़ाई, उतराई।
• आऊ – दिखाऊ, टिकाऊ, बटाऊ, पंडिताऊ, नामधराऊ, खटाऊ, चलाऊ, उपजाऊ, बिकाऊ, खाऊ, जलाऊ, कमाऊ, टरकाऊ, उठाऊ।
• आक – लड़ाक, तैराक, चालाक, खटाक, सटाक, तड़ाक, चटाक।
• आका – धमाका, धड़ाका, भड़ाका, लड़ाका, फटाका, चटाका, खटाका, तड़ाका, इलाका।
• आकू – लड़ाकू, पढ़ाकू, उड़ाकू, चाकू।
• आकुल – भयाकुल, व्याकुल।
• आटा – सन्नाटा, खर्राटा, फर्राटा, घर्राटा, झपाटा, थर्राटा।
• आड़ी – कबाड़ी, पहाड़ी, अनाड़ी, खिलाड़ी, अगाड़ी, पिछाड़ी।
• आढ्य – धनाढ्य, गुणाढ्य।
• आतुर – प्रेमातुर, रोगातुर, कामातुर, चिँतातुर, भयातुर।
• आन – उड़ान, पठान, चढ़ान, नीचान, उठान, लदान, मिलान, थकान, मुस्कान।
• आना – नजराना, हर्जाना, घराना, तेलंगाना, राजपूताना, मर्दाना, जुर्माना, मेहनताना, रोजाना, सालाना।
• आनी – देवरानी, जेठानी, सेठानी, गुरुआनी, इंद्राणी, नौकरानी, रूहानी, मेहतरानी, पंडितानी।
• आप – मिलाप, विलाप, जलाप, संताप।
• आपा – बुढापा, मुटापा, रण्डापा, बहिनापा, जलापा, पुजापा, अपनापा।
• आब – गुलाब, शराब, शबाब, कबाब, नवाब, जवाब, जनाब, हिसाब, किताब।
• आबाद – नाबाद, हैदराबाद, अहमदाबाद, इलाहाबाद, शाहजहाँनाबाद।
• आमह – पितामह, मातामह।
• आयत – त्रिगुणायत, पंचायत, बहुतायत, अपनायत, लोकायत, टीकायत, किफायत, रियायत।
• आयन – दांड्यायन, कात्यायन, वात्स्यायन, सांस्कृत्यायन।
• आर – कुम्हार, सुनार, लुहार, चमार, सुथार, कहार, गँवार, नथ्थार।

• आरा – बनजारा, निबटारा, छटकारा, हत्यारा, घसियारा, भटियारा।
• आरी – पुजारी, सुनारी, लुहारी, मनिहारी, कोठारी, बुहारी, भिखारी, जुआरी।
• आरु – दुधारु, गँवारु, बाजारु।
• आल – ससुराल, ननिहाल, घड़ियाल, कंगाल, बंगाल, टकसाल।
• आला – शिवाला, पनाला, परनाला, दिवाला, उजाला, रसाला, मसाला।
• आलु – ईर्ष्यालु, कृपालु, दयालु।
• आलू – झगड़ालू, लजालू, रतालू, सियालू।
• आव – घेराव, बहाव, लगाव, दुराव, छिपाव, सुझाव, जमाव, ठहराव, घुमाव, पड़ाव, बिलाव।
• आवर – दिलावर, दस्तावर, बख्तावर, जोरावर, जिनावर।
• आवट – लिखावट, थकावट, रुकावट, बनावट, तरावट, दिखावट, सजावट, घिसावट।
• आवना – सुहावना, लुभावना, डरावना, भावना।
• आवा – भुलावा, बुलावा, चढ़ावा, छलावा, पछतावा, दिखावा, बहकावा, पहनावा।
• आहट – कड़वाहट, चिकनाहट, घबराहट, सरसराहट, गरमाहट, टकराहट, थरथराहट, जगमगाहट, चिरपिराहट, बिलबिलाहट, गुर्राहट, तड़फड़ाहट।
• आस – खटास, मिठास, प्यास, बिँदास, भड़ास, रुआँस, निकास, हास, नीचास, पलास।
• आसा – कुहासा, मुँहासा, पुंडासा, पासा, दिलासा।
• आस्पद – घृणास्पद, विवादास्पद, संदेहास्पद, उपहासास्पद, हास्यास्पद।
• ओई – बहनोई, ननदोई, रसोई, कन्दोई।
• ओड़ा – भगोड़ा, हँसोड़ा, थोड़ा।
• ओरा – चटोरा, कटोरा, खदोरा, नदोरा, ि□ोरा।
• ओला – खटोला, मँझोला, बतोला, बिचोला, फफोला, सँपोला, पिछोला।
• औटा – बिलौटा, हिरनौटा, पहिलौटा, बिनौटा।
• औता – फिरौता, समझौता, कठौता।
• औती – चुनौती, बपौती, फिरौती, कटौती, कठौती, मनौती।
• औना – घिनौना, खिलौना, बिछौना, सलौना, डिठौना।
• औनी – घिनौनी, बिछौनी, सलौनी।
• इंदा – परिँदा, चुनिँदा, शर्मिंदा, बाशिँदा, जिन्दा।
• इ – दाशरथि, मारुति, राघवि, वारि, सारथि, वाल्मीकि।
• इक – मानसिक, मार्मिक, पारिश्रमिक, व्यावहारिक, ऐतिहासिक, पार्श्विक, सामाजिक, पारिवारिक, औपचारिक, भौतिक, लौकिक, नैतिक, वैदिक, प्रायोगिक, वार्षिक, मासिक, दैनिक, धार्मिक, दैहिक, प्रासंगिक, नागरिक, दैविक, भौगोलिक।

• इका – नायिका, पत्रिका, निहारिका, लतिका, बालिका, कलिका, लेखिका, सेविका, प्रेमिका।
• इकी – वानिकी, मानविकी, यांत्रिकी, सांख्यिकी, भौतिकी, उद्यानिकी।
• इत – लिखित, कथित, चिँतित, याचित, खंडित, पोषित, फलित, द्रवित, कलंकित, हर्षित, अंकित, शोभित, पीड़ित, कटंकित, रचित, चलित, तड़ित, उदित, गलित, ललित, वर्जित, पठित, बाधित, रहित, सहित।
• इतर – आयोजनेतर, अध्ययनेतर, सचिवालयेतर।
• इत्य – लालित्य, आदित्य, पांडित्य, साहित्य, नित्य।
• इन – मालिन, कठिन, बाघिन, मालकिन, मलिन, अधीन, सुनारिन, चमारिन, पुजारिन, कहारिन।
• इनी – भुजंगिनी, यक्षिणी, सरोजिनी, वाहिनी, हथिनी, मतवालिनी।
• इम – अग्रिम, रक्तिम, पश्चिम, अंतिम, स्वर्णिम।
• इमा – लालिमा, गरिमा, लघिमा, पूर्णिमा, हरितिमा, मधुरिमा, अणिमा, नीलिमा, महिमा।
• इयत – इंसानियत, कैफियत, माहियत, हैवानित, खासियत, खैरियत।
• इयल – मरियल, दढ़ियल, चुटियल, सड़ियल, अड़ियल।
• इया – लठिया, बिटिया, चुटिया, डिबिया, खटिया, लुटिया, मुखिया, चुहिया, बंदरिया, कुतिया, दुखिया, सुखिया, आढ़तिया, रसोइया, रसिया, पटिया, चिड़िया, बुढ़िया, अमिया, गडरिया, मटकिया, लकुटिया, घटिया, रेशमिया, मजाकिया, सुरतिया।
• इल – पंकिल, रोमिल, कुटिल, जटिल, धूमिल, तुंडिल, फेनिल, बोझिल, तमिल, कातिल।
• इश – मालिश, फरमाइश, पैदाइश, पैमाइश, आजमाइश, परवरिश, कोशिश, रंजिश, साजिश, नालिश, कशिश, तफ्तिश, समझाइश।
• इस्तान – कब्रिस्तान, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान, नखलिस्तान, कजाकिस्तान।
• इष्णु – सहिष्णु, वर्धिष्णु, प्रभाविष्णु।
• इष्ट – विशिष्ट, स्वादिष्ट, प्रविष्ट।
• इष्ठ – घनिष्ठ, बलिष्ठ, गरिष्ठ, वरिष्ठ।
• ई – गगरी, खुशी, दुःखी, भेदी, दोस्ती, चोरी, सर्दी, गर्मी, पार्वती, नरमी, टोकरी, झंडी, ोलकी, लंगोटी, भारी, गुलाबी, हरी, सुखी, बिक्री, मंडली, द्रोपदी, वैदेही, बोली, हँसी, रेती, खेती, बुहारी, धमकी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी, राजस्थानी, जयपुरी, मद्रासी, पहाड़ी, देशी, सुन्दरी, ब्राह्मणी, गुणी, विद्यार्थी, क्रोधी, लालची, लोभी, पाखण्डी, विदुषी, विदेशी, अकेली, सखी, साखी, अलबेली, सरकारी, तन्दुरी, सिन्दुरी, किशोरी, हेराफेरी, कामचोरी।

• ईचा – बगीचा, गलीचा, सईचा।
• ईन – प्रवीण, शौकीन, प्राचीन, कुलीन, शालीन, नमकीन, रंगीन, ग्रामीण, नवीन, संगीन, बीन, तारपीन, गमगीन, दूरबीन, मशीन, जमीन।
• ईना – कमीना, महीना, पश्मीना, नगीना, मतिहीना, मदीना, जरीना।
• ईय – भारतीय, जातीय, मानवीय, राष्ट्रीय, स्थानीय, भवदीय, पठनीय, पाणिनीय, शास्त्रीय, वायवीय, पूजनीय, वंदनीय, करणीय, राजकीय, देशीय।
• ईला – रसीला, जहरीला, पथरीला, कंकरीला, हठीला, रंगीला, गँठीला, शर्मीला, सुरीला, नुकीला, बर्फीला, भड़कीला, नशीला, लचीला, सजीला, फुर्तीला।
• ईश – नदीश, कपीश, कवीश, गिरीश, महीश, हरीश, सतीश।
• उ – सिँधु, लघु, भानु, गुरु, अनु, भिक्षु, शिशु, , वधु, तनु, पितु, बुद्धु, शत्रु, आयु।
• उक – भावुक, कामुक, भिक्षुक, नाजुक।
• उवा/उआ – मछुआ, कछुआ, बबुआ, मनुआ, कलुआ, गेरुआ।
• उल – मातुल, पातुल।
• ऊ – झाड़ू, बाजारू, घरू, झेँपू, पेटू, भोँपू, गँवारू, ढालू।
• ऊटा – कलूटा।
• ए – चले, पले, फले, ढले, गले, मिले, खड़े, पड़े, डरे, मरे, हँसे, फँसे, जले, किले, काले, ठहरे, पहरे, रोये, चने, पहने, गहने, मेरे, तेरे, तुम्हारे, हमारे, सितारे, उनके, उसके, जिसके, बकरे, कचरे, लुटेरे, सुहावने, डरावने, झूले, प्यारे, घने, सूखे, मैले, थैले, बेटे, लेटे, आए, गए, छोटे, बड़े, फेरे, दूसरे।
• एड़ी – नशेड़ी, भँगेड़ी, गँजेड़ी।
• एय – गांगेय, आग्नेय, आंजनेय, पाथेय, कौँतेय, वार्ष्णेय, मार्कंडेय, कार्तिकेय, राधेय।
• एरा – लुटेरा, सपेरा, मौसेरा, चचेरा, ममेरा, फुफेरा, चितेरा, ठठेरा, कसेरा, लखेरा, भतेरा, कमेरा, बसेरा, सवेरा, अन्धेरा, बघेरा।
• एल – फुलेल, नकेल, ढकेल, गाँवड़ेल।
• एला – बघेला, अकेला, सौतेला, करेला, मेला, तबेला, ठेला, रेला।
• एत – साकेत, संकेत, अचेत, सचेत, पठेत।
• ऐत – लठैत, डकैत, लड़ैत, टिकैत, फिकैत।
• ऐया – गवैया, बजैया, रचैया, खिवैया, रखैया, कन्हैया, लगैया।
• ऐल – गुस्सैल, रखैल, खपरैल, मुँछैल, दँतैल, बिगड़ैल।
• ऐला – विषैला, कसैला, वनैला, मटैला, थनैला, मटमैला।
• क – बालक, सप्तक, दशक, अष्टक, अनुवादक, लिपिक, चालक, शतक, दीपक, पटक, झटक, लटक, खटक।

• कर – दिनकर, दिवाकर, रुचिकर, हितकर, प्रभाकर, सुखकर, प्रलंयकर, भयंकर, पढ़कर, लिखकर, चलकर, सुनकर, पीकर, खाकर, उठकर, सोकर, धोकर, जाकर, आकर, रहकर, सहकर, गाकर, छानकर, समझकर, उलझकर, नाचकर, बजाकर, भूलकर, तड़पकर, सुनाकर, चलाकर, जलाकर, आनकर, गरजकर, लपककर, भरकर, डरकर।
• करण – सरलीकरण, स्पष्टीकरण, गैसीकरण, द्रवीकरण, पंजीकरण, ध्रुवीकरण।
• कल्प – कुमारकल्प, कविकल्प, भृतकल्प, विद्वतकल्प, कायाकल्प, संकल्प, विकल्प।
• कार – साहित्यकार, पत्रकार, चित्रकार, संगीतकार, काश्तकार, शिल्पकार, ग्रंथकार, कलाकार, चर्मकार, स्वर्णकार, गीतकार, बलकार, बलात्कार, फनकार, फुँफकार, हुँकार, छायाकार, कहानीकार, अंधकार, सरकार।
• का – गुटका, मटका, छिलका, टपका, छुटका, बड़का, कालका।
• की – बड़की, छुटकी, मटकी, टपकी, अटकी, पटकी।
• कीय – स्वकीय, परकीय, राजकीय, नाभिकीय, भौतिकीय, नारकीय, शासकीय।
• कोट – नगरकोट, पठानकोट, राजकोट, धूलकोट, अंदरकोट।
• कोटा – परकोटा।
• खाना – दवाखाना, तोपखाना, कारखाना, दौलतखाना, कैदखाना, मयखाना, छापाखाना, डाकखाना, कटखाना।
• खोर – मुफ्तखोर, आदमखोर, सूदखोर, जमाखोर, हरामखोर, चुगलखोर।
• ग – उरग, विहग, तुरग, खड़ग।
• गढ़ – जयगढ़, देवगढ़, रामगढ़, चित्तौड़गढ़, कुशलगढ़, कुम्भलगढ़, हनुमानगढ़, लक्ष्मणगढ़, डूँगरगढ़, राजगढ़, सुजानगढ़, किशनगढ़।
• गर – जादूगर, नीलगर, कारीगर, बाजीगर, सौदागर, कामगर, शोरगर, उजागर।
• गाँव – चिरगाँव, गोरेगाँव, गुड़गाँव, जलगाँव।
• गा – तमगा, दुर्गा।
• गार – कामगार, यादगार, रोजगार, मददगार, खिदमतगार।
• गाह – ईदगाह, दरगाह, चरागाह, बंदरगाह, शिकारगाह।
• गी – मर्दानगी, जिंदगी, सादगी, एकबारगी, बानगी, दीवानगी, ताजगी।
• गीर – राहगीर, उठाईगीर, जहाँगीर।
• गीरी – कुलीगीरी, मुँशीगीरी, दादागीरी।
• गुना – दुगुना, तिगुना, चौगुना, पाँचगुना, सौगुना।
• ग्रस्त – रोगग्रस्त, तनावग्रस्त, चिन्ताग्रस्त, विवादग्रस्त, व्याधिग्रस्त, भयग्रस्त।
• घ्न – कृतघ्न, पापघ्न, मातृघ्न, वातघ्न।
• चर – जलचर, नभचर, निशाचर, थलचर, उभयचर, गोचर, खेचर।

• चा – देगचा, चमचा, खोमचा, पोमचा।
• चित् – कदाचित्, किंचित्, कश्चित्, प्रायश्चित्।
• ची – अफीमची, तोपची, बावरची, नकलची, खजांची, तबलची।
• ज – अंबुज, पयोज, जलच, वारिज, नीरज, अग्रज, अनुज, पंकज, आत्मज, सरोज, उरोज, धीरज, मनोज।
• जा – आत्मजा, गिरिजा, शैलजा, अर्कजा, भानजा, भतीजा, भूमिजा।
• जात – नवजात, जलजात, जन्मजात।
• जादा – शहजादा, रईसजादा, हरामजादा, नवाबजादा।
• ज्ञ – विशेषज्ञ, नीतिज्ञ, मर्मज्ञ, सर्वज्ञ, धर्मज्ञ, शास्त्रज्ञ।
• ठ – कर्मठ, जरठ, षष्ठ।
• ड़ा – दुःखड़ा, मुखड़ा, पिछड़ा, टुकड़ा, बछड़ा, हिँजड़ा, कपड़ा, चमड़ा, लँगड़ा।
• ड़ी – टुकड़ी, पगड़ी, बछड़ी, चमड़ी, दमड़ी, पंखुड़ी, अँतड़ी, टंगड़ी, लँगड़ी।
• त – आगत, विगत, विश्रुत, रंगत, संगत, चाहत, कृत, मिल्लत, गत, हत, व्यक्त, बचत, खपत, लिखत, पढ़त, बढ़त, घटत, आकृष्ट, तुष्ट, संतुष्ट (सम्+तुष्+त)।
• तन – अधुनातन, नूतन, पुरातन, सनातन।
• तर – अधिकतर, कमतर, कठिनतर, गुरुतर, ज्यादातर, दृढ़तर, लघुतर, वृहत्तर, उच्चतर, कुटिलतर, दृढ़तर, निम्नतर, निकटतर, महत्तर।
• तम – प्राचीनतम, नवीनतम, तीव्रतम, उच्चतम, श्रेष्ठतम, महत्तम, विशिष्टतम, अधिकतम, गुरुतम, दीर्घतम, निकटतम, न्यूनतम, लघुतम, वृहत्तम, सुंदरतम, उत्कृष्टतम।
• ता – श्रोता, वक्ता, दाता, ज्ञाता, सुंदरता, मधुरता, मानवता, महत्ता, बंधुता, दासता, खाता, पीता, डूबता, खेलता, महानता, रमता, चलता, प्रभुता, लघुता, गुरुता, समता, कविता, मनुष्यता, कर्त्ता, नेता, भ्राता, पिता, विधाता, मूर्खता, विद्वता, कठोरता, मृदुता, वीरता, उदारता।
• ति – गति, मति, पति, रति, शक्ति, भक्ति, कृति।
• ती – ज्यादती, कृती, ढ़लती, कमती, चलती, पढ़ती, फिरती, खाती, पीती, धरती, भरती, जागती, भागती, सोती, धोती, सती।
• तः – सामान्यतः, विशेषतः, मूलतः, अंशतः, अंततः, स्वतः, प्रातः, अतः।
• त्र – एकत्र, सर्वत्र, अन्यत्र, नेत्र, पात्र, अस्त्र, शस्त्र, शास्त्र, चरित्र, क्षेत्र, पत्र, सत्र।
• त्व – महत्त्व, लघुत्व, स्त्रीत्व, नेतृत्व, बंधुत्व, व्यक्तित्व, पुरुषत्व, सतीत्व, राजत्व, देवत्व, अपनत्व, नारीत्व, पत्नीत्व, स्वामित्व, निजत्व।
• थ – चतुर्थ, पृष्ठ (पृष्+थ), षष्ठ (षष्+थ)।

• था – सर्वथा, अन्यथा, चौथा, प्रथा, पृथा, वृथा, कथा, व्यथा।
• थी – सारथी, परमार्थी, विद्यार्थी।
• द – जलद, नीरद, अंबुद, पयोद, वारिद, दुःखद, सुखद, अंगद, मकरंद।
• दा – सर्वदा, सदा, यदा, कदा, परदा, यशोदा, नर्मदा।
• दान – पानदान, कद्रदान, रोशनदान, कलमदान, इत्रदान, पीकदान, खानदान, दीपदान, धूपदान, पायदान, कन्यादान, शीशदान, भूदान, गोदान, अन्नदान, वरदान, वाग्दान, अभयदान, क्षमादान, जीवनदान।
• दानी – मच्छरदानी, चूहेदानी, नादानी, वरदानी, खानदानी।
• दायक – आनन्ददायक, सुखदायक, कष्टदायक, पीड़ादायक, आरामदायक, फलदायक।
• दायी – आनन्ददायी, सुखदायी, उत्तरदायी, कष्टदायी, फलदायी।
• दार – मालदार, हिस्सेदार, दुकानदार, हवलदार, थानेदार, जमींदार, फौजदार, कर्जदार, जोरदार, ईमानदार, लेनदार, देनदार, खरीददार, जालीदार, गोटेदार, लहरदार, धारदार, धारीदार, सरदार, पहरेदार, बूँटीदार, समझदार, हवादार, ठिकानेदार, ठेकेदार, परतदार, शानदार, फलीदार, नोकदार।
• दारी – समझदारी, खरीददारी, ईमानदारी, ठेकेदारी, पहरेदारी, लेनदारी, देनदारी।
• दी – वरदी, सरदी, दर्दी।
• धर – चक्रधर, हलधर, गिरिधर, महीधर, विद्याधर, गंगाधर, फणधर, भूधर, शशिधर, विषधर, धरणीधर, मुरलीधर, जलधर, जालन्धर, शृंगधर, अधर, किधर, उधर, जिधर, नामधर।
• धा – बहुधा, अभिधा, समिधा, विविधा, वसुधा, नवधा।
• धि – पयोधि, वारिधि, जलधि, उदधि, संधि, विधि, निधि, अवधि।
• न – नमन, गमन, बेलन, चलन, फटकन, झाड़न, धड़कन, लगन, मिलन, साजन, जलन, फिसलन, ऐंठन, उलझन, लटकन, फलन, राजन, मोहन, सौतन, भवन, रोहन, जीवन, प्रण, प्राण, प्रमाण, पुराण, ऋण, परिमाण, तृण, हरण, भरण, मरण।
• नगर – गंगानगर, श्रीनगर, रामनगर, संजयनगर, जयनगर, चित्रनगर।
• नवीस – फड़नवीस, खबरनवीस, नक्शानवीश, चिटनवीस, अर्जीनवीस।
• नशीन – पर्दानशीन, गद्दीनशीन, तख्तनशीन, जाँनशीन।
• ना – नाचना, गाना, कूदना, टहलना, मारना, पढ़ना, माँगना, दौड़ना, भागना, तैरना, भावना, कामना, कमीना, महीना, नगीना, मिलना, चलना, खाना, पीना, हँसना, जाना, रोना, तृष्णा।
• नाक – दर्दनाक, शर्मनाक, खतरनाक, खौफनाक।
• नाम – अनाम, गुमनाम, सतनाम, सरनाम, हरिनाम, प्रणाम, परिणाम।

• नामा – अकबरनामा, राजीनामा, मुख्तारनामा, सुलहनामा, हुमायूँनामा, अर्जीनामा, रोजनामा, पंचनामा, हलफनामा।
• निष्ठ – कर्मनिष्ठ, योगनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, राजनिष्ठ, ब्रह्मनिष्ठ।
• नी – मिलनी, सूँघनी, कतरनी, ओढ़नी, चलनी, लेखनी, मोरनी, चोरनी, चाँदनी, छलनी, धौंकनी, मथनी, कहानी, करनी, जीवनी, छँटनी, नटनी, चटनी, शेरनी, सिँहनी, कथनी, जननी, तरणी, तरुणी, भरणी, तरनी, मँगनी, सारणी।
• नीय – आदरणीय, करणीय, शोचनीय, सहनीय, दर्शनीय, नमनीय।
• नु – शान्तनु, अनु, तनु, भानु, समनु।
• प – महीप, मधुप, जाप, समताप, मिलाप, आलाप।
• पन – लड़कपन, पागलपन, छुटपन, बचपन, बाँझपन, भोलापन, बड़प्पन, पीलापन, अपनापन, गँवारपन, आलसीपन, अलसायापन, वीरप्पन, दीवानापन।
• पाल – द्वारपाल, प्रतिपाल, महीपाल, गोपाल, राज्यपाल, राजपाल, नागपाल, वीरपाल, सत्यपाल, भोपाल, भूपाल, कृपाल, नृपाल।
• पाली – आम्रपाली, भोपाली, रुपाली।
• पुर – अन्तःपुर, सीतापुर, रामपुर, भरतपुर, धौलपुर, गोरखपुर, फिरोजपुर, फतेहपुर, जयपुर।
• पुरा – जोधपुरा, हरिपुरा, श्यामपुरा, जालिमपुरा, नरसिँहपुरा।
• पूर्वक – विधिपूर्वक, दृढ़तापूर्वक, निश्चयपूर्वक, सम्मानपूर्वक, श्रद्धापूर्वक, बलपूर्वक, प्रयासपूर्वक, ध्यानपूर्वक।
• पोश – मेजपोश, नकाबपोश, सफेदपोश, पलंगपोश, जीनपोश, चिलमपोश।
• प्रद – लाभप्रद, हानिप्रद, कष्टप्रद, संतोषप्रद, उत्साहप्रद, हास्यप्रद।
• बंद – कमरबंद, बिस्तरबंद, बाजूबंद, हथियारबंद, कलमबंद, मोहरबंद, बख्तरबंद, नजरबंद।
• बंदी – चकबंदी, घेराबंदी, हदबंदी, मेड़बंदी, नाकाबंदी।
• बाज – नशेबाज, दगाबाज, चालबाज, धोखेबाज, पतंगबाज, खेलबाज।
• बान – मेजबान, गिरहबान, दरबान, मेहरबान।
• बीन – तमाशबीन, दूरबीन, खुर्दबीन।
• भू – प्रभु (प्र+भू), स्वयंभू।
• मंद – दौलतमंद, फायदेमंद, अक्लमंद, जरूरतमंद, गरजमंद, मतिमंद, भरोसेमंद।
• म – हराम, जानम, कर्म (कृ+म), धर्म, मर्म, जन्म, मध्यम, सप्तम, छद्म, चर्म, रहम, वहम, प्रीतम, कलम, हरम, श्रम, परम।
• मत् – श्रीमत्।

• मत – जनमत, सलामत, रहमत, बहुमत, कयामत।
• मती – श्रीमती, बुद्धिमती, ज्ञानमती, वीरमती, रूपमती।
• मय – दयामय, जलमय, मनोमय, तेजोमय, विष्णुमय, अन्नमय, तन्मय, चिन्मय, वाङ्मय, अम्मय, भक्तिमय।
• मात्र – नाममात्र, लेशमात्र, क्षणमात्र, पलमात्र, किँचित्मात्र।
• मान – बुद्धिमान, मूर्तिमान, शक्तिमान, शोभायमान, चलायमान, गुंजायमान, हनुमान, श्रीमान, कीर्तिमान, सम्मान, सन्मान, मेहमान।
• य – दृश्य, सादृश्य, लावण्य, वात्सल्य, सामान्य, दांपत्य, सानिध्य, तारुण्य, पाशचात्य, वैधव्य, नैवेद्य, धैर्य, गार्हस्थ्य, सौभाग्य, सौजन्य, औचित्य, कौमार्य, शौर्य, ऐश्वर्य, साम्य, प्राच्य, पार्थक्य, पाण्डित्य, सौन्दर्य, माधुर्य, स्तुत्य, वन्द्य, खाद्य, पूज्य, नृत्य।
• या – शय्या, विद्य, चर्या, मृगया, समस्या, क्रिया, खोया, गया, आया, खाया, गाया, कमाया, जगाया, हँसाया, सताया, पढ़ाया, भगाया, हराया, खिलाया, पिलाया।
• र – नम्र, शुभ्र, क्षुद्र, मधुर, नगर, मुखर, पाण्डुर, कुंजर, प्रखर, विधुर, भ्रमर, कसर, कमर, खँजर, कहार, बहार, सुनार।
• रा – दूसरा, तीसरा, आसरा, कमरा, नवरात्रा, पिटारा, निबटारा, सहारा।
• री – बाँसुरी, गठरी, छतरी, चकरी, चाकरी, तीसरी, दूसरी, भोजपुरी, नागरी, जोधपुरी, बीकानेरी, बकरी, वल्लरी।
• रू – दारू, चारू, शुरू, घुंघरू, झूमरू, डमरू।
• ल – मंजुल, शीतल, पीतल, ऊर्मिल, घायल, पायल, वत्सल, श्यामल, सजल, कमल, कायल, काजल, सवाल, कमाल।
• ला – अगला, पिछला, मँझला, धुँधला, लाड़ला, श्यामला, कमला, पहला, नहला, दहला।
• ली – सूतली, खुजली, ढपली, घंटाली, सूपली, टीकली, पहली, जाली, खाली, सवाली।
• वंत – बलवंत, दयावंत, भगवंत, कुलवंत, जामवंत, कलावंत।
• व – केशव, राजीव, विषुव, अर्णव, सजीव, रव, शव।
• वत् – पुत्रवत्, विधिवत्, मातृवत्, पितृवत्, आत्मवत्, यथावत्।
• वर – प्रियवर, स्थावर, ताकतवर, ईश्वर, नश्वर, जानवर, नामवर, हिम्मतवर, मान्यवर, वीरवर, स्वयंवर, नटवर, कमलेश्वर, परमेश्वर, महेश्वर।
• वाँ – पाँचवाँ, सातवाँ, दसवाँ, पिटवाँ, चुनवाँ, ढलवाँ, कारवाँ, आठवाँ।
• वा – बचवा, पुरवा, बछवा, मनवा।
• वाई – बनवाई, सुनवाई, तुलवाई, लदवाई, पिछवाई, हलवाई, पुरवाई।
• वाड़ा – रजवाड़ा, हटवाड़ा, जटवाड़ा, पखवाड़ा, बाँसवाड़ा, भीलवाड़ा, दंतेवाड़ा।
• वाड़ी – फुलवाड़ी, बँसवाड़ी।

• वान् – रूपवान्, भाग्यवान्, धनवान्, दयावान्, बलवान्।
• वान – गुणवान, कोचवान, गाड़ीवान, प्रतिभावान, बागवान, धनवान, पहलवान।
• वार – उम्मीदवार, माहवार, तारीखवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार, कदवार, पतवार, वंदनवार।
• वाल – कोतवाल, पल्लीवाल, पालीवाल, धारीवाल।
• वाला – पानवाला, लिखनेवाला, दूधवाला, पढ़नेवाला, रखवाला, हिम्मतवाला, दिलवाला, फलवाला, रिक्शेवाला, ठेलेवाला, घरवाला, ताँगेवाला।
• वाली – घरवाली, बाहरवाली, मतवाली, ताँगेवाली, नखरावाली, कोतवाली।
• वास – रनिवास, वनवास।
• वी – तेजस्वी, तपस्वी, मेधावी, मायावी, ओजस्वी, मनस्वी, जाह्नवी, लुधियानवी।
• वैया – गवैया, खिवैया, रचैया, लगैया, बजैया।
• व्य – तालव्य, मंतव्य, कर्तव्य, ज्ञातव्य, ध्यातव्य, श्रव्य, वक्तव्य, दृष्टव्य।
• श – कर्कश, रोमश, लोमश, बंदिश।
• शः – क्रमशः, कोटिशः, शतशः, अक्षरशः।
• शाली – प्रतिभाशाली, गौरवशाली, शक्तिशाली, भाग्यशाली, बलशाली।
• शील – धर्मशील, सहनशील, पुण्यशील, दानशील, विचारशील, कर्मशील।
• शाही – लोकशाही, तानाशाही, इमामशाही, कुतुबशाही, नौकरशाही, बादशाही, झाड़शाही, अमरशाही, विजयशाही।
• सा – मुझ-सा, तुझ-सा, नीला-सा, मीठा-सा, चिकीर्षा, पिपासा, जिज्ञासा, लालसा, चिकित्सा, मीमांसा, चाँद-सा, गुलाब-सा, प्यारा-सा, छोटा-सा, पीला-सा, आप-सा।
• साज – जालसाज, जीनसाज, घड़ीसाज, जिल्दसाज।
• सात् – आत्मसात्, भस्मसात्, जलसात्, अग्निसात्, भूमिसात्।
• सार – मिलनसार, एकसार, शर्मसार, खाकसार।
• स्थ – तटस्थ, मार्गस्थ, उदरस्थ, हृदयस्थ, कंठस्थ, मध्यस्थ, गृहस्थ, दूरस्थ, अन्तःस्थ।
• हर – मनोहर, खंडहर, दुःखहर, विघ्नहर, नहर, पीहर, कष्टहर, नोहर, मुहर।
• हरा – इकहरा, दुहरा, तिहरा, चौहरा, सुनहरा, रूपहरा, छरहरा।
• हार – तारनहार, पालनहार, होनहार, सृजनहार, राखनहार, खेवनहार, खेलनहार, सेवनहार, नौसरहार, गलहार, कंठहार।
• हारा – लकड़हारा, चूड़ीहारा, मनिहारा, पणिहारा, सर्वहारा, तारनहारा, मारनहारा, पालनहारा।
• हीन – कर्महीन, बुद्धिहीन, कुलहीन, बलहीन, शक्तिहीन, मतिहीन, विद्याहीन, धनहीन,

गुणहीन।

• हुआ – चलता हुआ, सुनता हुआ, पढ़ता हुआ, करता हुआ, रोता हुआ, पीता हुआ, खाता हुआ, हँसता हुआ, भागता हुआ, दौड़ता हुआ, हाँफता हुआ, निकलता हुआ, गिरता हुआ, तैरता हुआ, सोचता हुआ, नाचता हुआ, गाता हुआ, बहता हुआ, बुझता हुआ, डूबता हुआ।

समास

'समास' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– संक्षिप्त करना। सम्+आस् = 'सम्' का अर्थ है– अच्छी तरह पास एवं 'आस्' का अर्थ है– बैठना या मिलना। अर्थात् दो शब्दों को पास–पास मिलाना।

'जब परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के बीच की विभक्ति हटाकर, उन्हें मिलाकर जब एक नया स्वतन्त्र शब्द बनाया जाता है, तब इस मेल को समास कहते हैं।'

परस्पर मिले हुए शब्दों को समस्त–पद अर्थात् समास किया हुआ, या सामासिक शब्द कहते हैं। जैसे– यथाशक्ति, त्रिभुवन, रामराज्य आदि।

समस्त पद के शब्दों (मिले हुए शब्दों) को अलग–अलग करने की प्रक्रिया को 'समास–विग्रह' कहते हैं। जैसे– यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार।

हिन्दी में समास प्रायः नए शब्द–निर्माण हेतु प्रयोग में लिए जाते हैं। भाषा में संक्षिप्तता, उत्कृष्टता, तीव्रता व गंभीरता लाने के लिए भी समास उपयोगी हैं। समास प्रकरण संस्कृत साहित्य में अति प्राचीन प्रतीत होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी कहा है—"मैं समासों में द्वन्द्व समास में हूँ।"

जिन दो मुख्य शब्दों के मेल से समास बनता है, उन शब्दों को खण्ड या अवयव या पद कहते हैं। समस्त पद या सामासिक पद का विग्रह करने पर समस्त पद के दो पद बन जाते हैं– पूर्व पद और उत्तर पद। जैसे– घनश्याम में 'घन' पूर्व पद और 'श्याम' उत्तर पद है।

जिस खण्ड या पद पर अर्थ का मुख्य बल पड़ता है, उसे प्रधान पद कहते हैं। जिस पद पर अर्थ का बल नहीं पड़ता, उसे गौण पद कहते हैं। इस आधार पर (संस्कृत की दृष्टि से) समास के चार भेद माने गए हैं–

1. जिस समास में पूर्व पद प्रधान होता है, वह—'अव्ययीभाव समास'।
2. जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है, वह—'तत्पुरुष समास'।
3. जिस समास में दोनों पद प्रधान हों, वह—'द्वन्द्व समास' तथा
4. जिस समास में दोनों पदों में से कोई प्रधान न हो, वह—'बहुब्रीहि समास'।

हिन्दी में समास के छः भेद प्रचलित हैं। जो निम्न प्रकार हैं—

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. द्वन्द्व समास
4. बहुब्रीहि समास
5. कर्मधारय समास
6. द्विगु समास।

1. अव्ययीभाव समास–

जिस समस्त पद में पहला पद अव्यय होता है, अर्थात् अव्यय पद के साथ दूसरे पद, जो संज्ञा या कुछ भी हो सकता है, का समास किया जाता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। प्रथम पद के साथ मिल जाने पर समस्त पद ही अव्यय बन जाता है। इन समस्त पदों का प्रयोग क्रियाविशेषण के समान होता है।

अव्यय शब्द वे हैं जिन पर काल, वचन, पुरुष, लिँग आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् रूप परिवर्तन नहीं होता। ये शब्द जहाँ भी प्रयुक्त किये जाते हैं, वहाँ उसी रूप में ही रहेंगे। जैसे– यथा, प्रति, आ, हर, बे, नि आदि।

पद के क्रिया विशेषण अव्यय की भाँति प्रयोग होने पर अव्ययीभाव समास की निम्नांकित स्थितियाँ बन सकती हैं–

(1) अव्यय+अव्यय–ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, इधर-उधर, आस-पास, जैसे-तैसे, यथा-शक्ति, यत्र-तत्र।

(2) अव्ययों की पुनरुक्ति– धीरे-धीरे, पास-पास, जैसे-जैसे।

(3) संज्ञा+संज्ञा– नगर-डगर, गाँव-शहर, घर-द्वार।

(4) संज्ञाओं की पुनरुक्ति– दिन-दिन, रात-रात, घर-घर, गाँव-गाँव, वन-वन।

(5) संज्ञा+अव्यय– दिवसोपरान्त, क्रोध-वश।
(6) विशेषण संज्ञा– प्रतिदिवस, यथा अवसर।
(7) ृ दन्त+ृ दन्त– जाते-जाते, सोते-जागते।
(8) अव्यय+विशेषण– भरस , यथासम्भव।

अव्ययीभाव समास े उदाहरण:
समस्त–पद — विग्रह
यथारूप – रूप े अनुसार
यथायोग्य – जितना योग्य हो
यथाशक्ति – शक्ति े अनुसार
प्रतिक्षण – प्रत्ये क्षण
भरपूर – पूरा भरा हुआ
अत्यन्त – अन्त से अधि
रातोँरात – रात ही रात में
अनुदिन – दिन पर दिन
निरन्ध्र – रन्ध्र से रहित
आमरण – मरने त
आजन्म – जन्म से ले र
आजीवन – जीवन पर्यन्त
प्रतिशत – प्रत्ये शत (सौ) पर
भरपेट – पेट भर र
प्रत्यक्ष – अक्षि (आँखोँ) े सामने
दिनोँदिन – दिन पर दिन
सार्थ – अर्थ सहित
सप्रसंग – प्रसंग े साथ
प्रत्युत्तर – उत्तर े बदले उत्तर
यथार्थ – अर्थ े अनुसार
आ ं ठ – ं ठ त
घर–घर – हर घर/प्रत्ये घर
यथाशीघ्र – जितना शीघ्र हो
श्रद्धापूर्व – श्रद्धा े साथ
अनुरूप – जैसा रूप है वैसा

अकारण – बिना कारण के
हाथों हाथ – हाथ ही हाथ में
बेधड़क – बिना धड़क के
प्रतिपल – हर पल
नीरोग – रोग रहित
यथाक्रम – जैसा क्रम है
साफ–साफ – बिल्कुल स्पष्ट
यथेच्छ – इच्छा के अनुसार
प्रतिवर्ष – प्रत्येक वर्ष
निर्विरोध – बिना विरोध के
नीरव – रव (ध्वनि) रहित
बेवजह – बिना वजह के
प्रतिबिम्ब – बिम्ब का बिम्बब
दानार्थ – दान के लिए
उपकूल – कूल के समीप की
क्रमानुसार – क्रम के अनुसार
कर्मानुसार – कर्म के अनुसार
अन्तर्व्यथा – मन के अन्दर की व्यथा
यथासम्भव – जहाँ तक सम्भव हो
यथावत् – जैसा था, वैसा ही
यथास्थान – जो स्थान निर्धारित है
प्रत्युपकार – उपकार के बदले किया जाने वाला उपकार
मन्द–मन्द – मन्द के बाद मन्द, बहुत ही मन्द
प्रतिलिपि – लिपि के समकक्ष लिपि
यावज्जीवन – जब तक जीवन रहे
प्रतिहिंसा – हिंसा के बदले हिंसा
बीचों–बीच – बीच के बीच में
कुशलतापूर्वक – कुशलता के साथ
प्रतिनियुक्ति – नियमित नियुक्ति के बदले नियुक्ति
एकाएक – एक के बाद एक
प्रत्याशा – आशा के बदले आशा
प्रतिक्रिया – क्रिया से प्रेरित क्रिया

सकुशल – कुशलता के साथ
प्रतिध्वनि – ध्वनि की ध्वनि
स□रिवार – □रिवार के साथ
दरअसल – असल में
अनजाने – जाने बिना
अनुवंश – वंश के अनुकूल
□ल–□ल – प्रत्येक □ल
चेहरे–चेहरे – हर चेहरे □र
प्रतिदिन – हर दिन
प्रतिक्षण – हर क्षण
सशक्त – शक्ति के साथ
दिनभर – □रे दिन
निडर – बिना डर के
भरसक – शक्ति भर
सानंद – आनंद सहित
व्यर्थ – बिना अर्थ के
यथामति – मति के अनुसार
निर्विकार – बिना विकार के
अतिवृष्टि – वृष्टि की अति
नीरंध्र – रंध्र रहित
यथावि□ – जैसी वि□ नि□ारित है
प्रतिघात – घात के बदले घात
अनुदान – दान की तरह दान
अनुगमन – गमन के □ीछे गमन
प्रत्यारो□ – आरो□ के बदले आरो□
अभूत□ूर्व – जो □ूर्व में नहीं हुआ
आ□ादमस्तक – □ाद (□ाँव) से लेकर मस्तक तक
यथासमय – जो समय नि□ारित है
घड़ी–घड़ी – घड़ी के बाद घड़ी
अत्युत्तम – उत्तम से अ□िक
अनुसार – जैसा सार है वैसा
निर्विवाद – बिना विवाद के

यथेष्ट – जितना चाहिए उतना
अनुकरण – करण के अनुसार करना
अनुसरण – सरण के बाद सरण (जाना)
अत्याधुनिक – आधुनिक से भी आधुनिक
निरामिष – बिना आमिष (माँस) के
घर–घर – घर ही घर
बेखटके – बिना खटके
यथासामर्थ्य – सामर्थ्य के अनुसार

2. तत्पुरुष समास–

जिस समास में दूसरा पद अर्थ की दृष्टि से प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इस समास में पहला पद सञ्ज्ञा अथवा विशेषण होता है इसलिए वह दूसरे पद विशेष्य पर निर्भर करता है, अर्थात् दूसरा पद प्रधान होता है। तत्पुरुष समास का लिँग–वचन अन्तिम पद के अनुसार ही होता है। जैसे– जलधारा का विग्रह है– जल की धारा। 'जल की धारा बह रही है' इस वाक्य में 'बह रही है' का सम्बन्ध धारा से है जल से नहीँ। धारा के कारण 'बह रही' क्रिया स्त्रीलिँग में है। यहाँ बाद वाले शब्द 'धारा' की प्रधानता है अतः यह तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास में प्रथम पद के साथ कर्त्ता और सम्बोधन कारकोँ को छोड़कर अन्य कारक चिह्नोँ (विभक्तियोँ) का प्रायः लोप हो जाता है। अतः पहले पद में जिस कारक या विभक्ति का लोप होता है, उसी कारक या विभक्ति के नाम से इस समास का नामकरण होता है। जैसे – द्वितीया या कर्मकारक तत्पुरुष = स्वर्गप्राप्त – स्वर्ग को प्राप्त।

कारक चिह्न इस प्रकार हैँ –

क्र.स□	कारक का नाम	चिह्न
1—	कर्ता	– ने
2—	कर्म	– को
3—	करण	– से (के द्वारा)
4—	सम्प्रदान	– के लिए
5—	अपादान	– से (पृथक भाव में)
6—	सम्बन्ध	– का, की, के, रा, री, रे

7— अधिकरण – में, पर, ऊपर
8— सम्बोधन – हे!, अरे! ओ!

चूँकि तत्पुरुष समास में कर्ता और सम्बोधन कारक–चिह्नों का लोप नहीं होता अतः इसमें इन दोनों के उदाहरण नहीं हैं। अन्य कारक चिह्नों के आधार पर तत्पुरुष समास के भेद इस प्रकार हैं –

(1) कर्म तत्पुरुष –

समस्त पद विग्रह
हस्त□त – हाथ को □त
जाति□त – जाति को □या हुआ
मुँहतोड़ – मुँह को तोड़ने वाला
दुःखहर – दुःख को हरने वाला
यशप्राप्त – यश को प्राप्त
पदप्राप्त – पद को प्राप्त
ग्राम□त – ग्राम को □त
स्वर्□ प्राप्त – स्वर्□ को प्राप्त
देश□त – देश को □त
आशातीत – आशा को अतीत(से परे)
चिड़ीमार – चिड़ी को मारने वाला
कठफोड़वा – काष्ठ को फोड़ने वाला
दिलतोड़ – दिल को तोड़ने वाला
जीतोड़ – जी को तोड़ने वाला
जीभर – जी को भरकर
लाभप्रद – लाभ को प्रदान करने वाला
शरणा□त – शरण को आया हुआ
रोज□ारोन्मुख – रोज□ार को उन्मुख
सर्वज्ञ – सर्व को जानने वाला
□□नचुम्बी – □□न को चूमने वाला
परलोक□मन – परलोक को □मन
चित्तचोर – चित्त को चोरने वाला
ख्याति प्राप्त – ख्याति को प्राप्त
दिनकर – दिन को करने वाला

जितेन्द्रिय – इंद्रियों को जीतने वाला
चक्रधर – चक्र को धारण करने वाला
धरणीधर – धरणी (पृथ्वी) को धारण करने वाला
गिरिधर – गिरि को धारण करने वाला
हलधर – हल को धारण करने वाला
मरणातुर – मरने को आतुर
कालातीत – काल को अतीत (परे) करके
वयप्राप्त – वय (उम्र) को प्राप्त

(ख) करण तत्पुरुष –
तुलसीकृत – तुलसी द्वारा कृत
अकालपीड़ित – अकाल से पीड़ित
श्रमसाध्य – श्रम से साध्य
कष्टसाध्य – कष्ट से साध्य
ईश्वरदत्त – ईश्वर द्वारा दिया गया
रत्नजड़ित – रत्न से जड़ित
हस्तलिखित – हस्त से लिखित
अनुभव जन्य – अनुभव से जन्य
रेखांकित – रेखा से अंकित
गुरुदत्त – गुरु द्वारा दत्त
सूरकृत – सूर द्वारा कृत
दयार्द्र – दया से आर्द्र
मुँहमाँगा – मुँह से माँगा
मदमत्त – मद (नशे) से मत्त
रोगातुर – रोग से आतुर
भुखमरा – भूख से मरा हुआ
कपड़छान – कपड़े से छाना हुआ
स्वयंसिद्ध – स्वयं से सिद्ध
शोकाकुल – शोक से आकुल
मेघाच्छन्न – मेघ से आच्छन्न
अश्रुपूर्ण – अश्रु से पूर्ण
वचनबद्ध – वचन से बद्ध

वाग्युद्ध – वाक् (वाणी) से युद्ध
क्षुधातुर – क्षुधा से आतुर
शल्यचिकित्सा – शल्य (चीर-फाड़) से चिकित्सा
आँखों देखा – आँखों से देखा

(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष –
देशभक्ति – देश के लिए भक्ति
गुरुदक्षिणा – गुरु के लिए दक्षिणा
भूतबलि – भूत के लिए बलि
प्रौढ़ शिक्षा – प्रौढ़ों के लिए शिक्षा
यज्ञशाला – यज्ञ के लिए शाला
शपथपत्र – शपथ के लिए पत्र
स्नानागार – स्नान के लिए आगार
कृष्णार्पण – कृष्ण के लिए अर्पण
युद्धभूमि – युद्ध के लिए भूमि
बलिपशु – बलि के लिए पशु
पाठशाला – पाठ के लिए शाला
रसोईघर – रसोई के लिए घर
हथकड़ी – हाथ के लिए कड़ी
विद्यालय – विद्या के लिए आलय
विद्यामन्दिर – विद्या के लिए मन्दिर
□ाक गाड़ी – □ाक के लिए गाड़ी
सभाभवन – सभा के लिए भवन
आवेदन पत्र – आवेदन के लिए पत्र
हवन सामग्री – हवन के लिए सामग्री
कारागृह – कैदियों के लिए गृह
परीक्षा भवन – परीक्षा के लिए भवन
सत्याग्रह – सत्य के लिए आग्रह
छात्रावास – छात्रों के लिए आवास
युववाणी – युवाओं के लिए वाणी
समाचार पत्र – समाचार के लिए पत्र
वाचनालय – वाचन के लिए आलय

चिकित्सालय – चिकित्सा के लिए आलय
बंदीगृह – बंदी के लिए गृह

(घ) अपादान तत्पुरुष –
रोगमुक्त – रोग से मुक्त
लोकभय – लोक से भय
राजद्रोह – राज से द्रोह
जलरिक्त – जल से रिक्त
नरकभय – नर से भय
देशनिष्कासन – देश से निष्कासन
दोषमुक्त – दोष से मुक्त
बंधनमुक्त – बंधन से मुक्त
जातिभ्रष्ट – जाति से भ्रष्ट
कर्तव्यच्युत – कर्तव्य से च्युत
पदमुक्त – पद से मुक्त
जन्मांध – जन्म से अंधा
देशनिकाला – देश से निकाला
कामचोर – काम से जी चुराने वाला
जन्मरोगी – जन्म से रोगी
भयभीत – भय से भीत
पदच्युत – पद से च्युत
धर्मविमुख – धर्म से विमुख
पदाक्रान्त – पद से आक्रान्त
कर्तव्यविमुख – कर्तव्य से विमुख
पथभ्रष्ट – पथ से भ्रष्ट
सेवामुक्त – सेवा से मुक्त
गुण रहित – गुण से रहित
बुद्धिहीन – बुद्धि से हीन
धनहीन – धन से हीन
भाग्यहीन – भाग्य से हीन

(ङ) सम्बन्ध तत्पुरुष –

देवदास – देव का दास

लखपति – लाखों का पति (मालिक)

करोड़पति – करोड़ों का पति

राष्ट्रपति – राष्ट्र का पति

सूर्योदय – सूर्य का उदय

राजपुत्र – राजा का पुत्र

जगन्नाथ – जगत् का नाथ

मन्त्रिपरिषद् – मन्त्रियों की परिषद्

राजभाषा – राज्य की (शासन) भाषा

राष्ट्रभाषा – राष्ट्र की भाषा

जमींदार – जमीन का दार (मालिक)

भूकम्प – भू का कम्पन

रामचरित – राम का चरित

दुःखसागर – दुःख का सागर

राजप्रासाद – राजा का प्रासाद

गङ्गाजल – गङ्गा का जल

जीवनसाथी – जीवन का साथी

देवमूर्ति – देव की मूर्ति

सेनापति – सेना का पति

प्रसङ्गानुकूल – प्रसङ्ग के अनुकूल

भारतवासी – भारत का वासी

पराधीन – पर के अधीन

स्वाधीन – स्व (स्वयं) के अधीन

मधुमक्खी – मधु की मक्खी

भारतरत्न – भारत का रत्न

राजकुमार – राजा का कुमार

राजकुमारी – राजा की कुमारी

दशरथ सुत – दशरथ का सुत

ग्रन्थावली – ग्रन्थों की अवली

दीपावली – दीपों की अवली (कतार)

गीताञ्जलि – गीतों की अञ्जलि

कवितावली – कविता की अवली
पदावली – पदों की अवली
कर्माधीन – कर्म के अधीन
लोकनायक – लोक का नायक
रक्तदान – रक्त का दान
सत्रावसान – सत्र का अवसान
राष्ट्र का पिता
अश्वमेध – अश्व का मेध
माखनचोर – माखन का चोर
नन्दलाल – नन्द का लाल
दीनानाथ – दीनों का नाथ
दीनबन्धु – दीनों (गरीबों) का बन्धु
कर्मयोग – कर्म का योग
ग्रामवासी – ग्राम का वासी
दयासागर – दया का सागर
अक्षांश – अक्ष का अंश
देशान्तर – देश का अन्तर
तुलादान – तुला का दान
कन्यादान – कन्या का दान
गोदान – गौ (गाय) का दान
ग्रामोत्थान – ग्राम का उत्थान
वीर कन्या – वीर की कन्या
पुत्रवधू – पुत्र की वधू
धरतीपुत्र – धरती का पुत्र
वनवासी – वन का वासी
भूतबंगला – भूतों का बंगला
राजसिंहासन – राजा का सिँहासन

(च) अधिकरण तत्पुरुष –
ग्रामवास – ग्राम में वास
आपबीती – आप पर बीती
शोकमग्न – शोक में मग्न

जलमग्न – जल में मग्न
आत्मनिर्भर – आत्म पर निर्भर
तीर्थाटन – तीर्थों में अटन (भ्रमण)
नरश्रेष्ठ – नरों में श्रेष्ठ
गृहप्रवेश – गृह में प्रवेश
घुड़सवार – घोड़ा पर सवार
वाक्पटु – वाक् में पटु
धर्मरत – धर्म में रत
धर्मांध – धर्म में अंधा
लोककेन्द्रित – लोक पर केन्द्रित
काव्यनिपुण – काव्य में निपुण
रणवीर – रण में वीर
रणधीर – रण में धीर
रणजीत – रण में जीतनेवाला
रणकौशल – रण में कौशल
आत्मविश्वास – आत्मा पर विश्वास
वनवास – वन में वास
लोकप्रिय – लोक में प्रिय
नीतिनिपुण – नीति में निपुण
ध्यानमग्न – ध्यान में मग्न
सिरदर्द – सिर में दर्द
दृष्टाटन – दृष्टा में अटन
कविपुंगव – कवियों में पुंगव (श्रेष्ठ)
पुरुषोत्तम – पुरुषों में उत्तम
रसगुल्ला – रस में डूबा हुआ गुल्ला
दहीबड़ा – दही में डूबा हुआ बड़ा
रेलगाड़ी – रेल (पटरी) पर चलनेवाली गाड़ी
मुनिश्रेष्ठ – मुनियों में श्रेष्ठ
नरोत्तम – नरों में उत्तम
वाग्वीर – वाक् में वीर
पर्वतारोहण – पर्वत पर आरोहण (चढ़ना)
कर्मनिष्ठ – कर्म में निष्ठ

युधिष्ठिर – युद्ध में स्थिर रहने वाला
सर्वोत्तम – सर्व में उत्तम
कार्यकुशल – कार्य में कुशल
दानवीर – दान में वीर
कर्मवीर – कर्म में वीर
कविराज – कवियों में राजा
सत्तारूढ़ – सत्ता पर आरूढ़
शरणागत – शरण में आया हुआ
गजारूढ़ – गज पर आरूढ़

♦ तत्पुरुष समास के उपभेद –

उपर्युक्त भेदों के अलावा तत्पुरुष समास के दो उपभेद होते हैं –

(i) अलुक् तत्पुरुष – इसमें समास करने पर पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता है। जैसे–

युधिष्ठिर—युद्धि (युद्ध में) + स्थिर = ज्येष्ठ पाण्डव
मनसिज—मनसि (मन में) + ज (उत्पन्न) = कामदेव
खेचर—ख (आकाश) + चर (विचरने वाला) = पक्षी

(ii) नञ् तत्पुरुष – इस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है किन्तु प्रथम पद संस्कृत के नकारात्मक अर्थ के द्योतक वाले 'अ' और 'अन्' उपसर्ग संयुक्त होता है। इसमें निषेध अर्थ में 'न' के स्थान पर यदि बाद में व्यंजन वर्ण हो तो 'अ' तथा बाद में स्वर हो तो 'न' के स्थान पर 'अन्' हो जाता है। जैसे–

अनाथ – न (अ) नाथ
अन्याय – न (अ) न्याय
अनाचार – न (अन्) आचार
अनादर – न (अन्) आदर
अजन्मा – न जन्म लेने वाला
अमर – न मरने वाला
अडिग – न डिगने वाला
अशक्य – नहीं है शक्यनीय जो
अनभिज्ञ – न अभिज्ञ
अकर्म – बिना कर्म के
अनादर – आदर से रहित

अधर्म – धर्म से रहित
अनदेखा – न देखा हुआ
अचल – न चल
अछूत – न छूत
अनिच्छुक – न इच्छुक
अनाश्रित – न आश्रित
अगोचर – न गोचर
अनावृत – न आवृत
नालायक – नहीँ है लायक जो
अनन्त – न अन्त
अनादि – न आदि
असंभव – न संभव
अभाव – न भाव
अलौकिक – न लौकिक
अनपढ़ – न पढ़ा हुआ
निर्विवाद – बिना विवाद के

3. द्वन्द्व समास –

जिस समस्त पद में दोनों अथवा सभी पद प्रधान हों तथा उनके बीच में समुच्चयबोधक–'और, या, अथवा, आदि' का लोप हो गया हो, तो वहाँ द्वन्द्व समास होता है। जैसे –

अन्नजल – अन्न और जल
देश–विदेश – देश और विदेश
राम–लक्ष्मण – राम और लक्ष्मण
रात–दिन – रात और दिन
खट्टामीठा – खट्टा और मीठा
जला–भुना – जला और भुना
माता–पिता – माता और पिता
दूधरोटी – दूध और रोटी
पढ़ा–लिखा – पढ़ा और लिखा
हरि–हर – हरि और हर
राधाकृष्ण – राधा और कृष्ण

राधेश्याम – राधे और श्याम
सीताराम – सीता और राम
गौरीशंकर – गौरी और शंकर
अड़सठ – आठ और साठ
पच्चीस – पाँच और बीस
छात्र–छात्राएँ – छात्र और छात्राएँ
कन्द–मूल–फल – कन्द और मूल और फल
गुरु–शिष्य – गुरु और शिष्य
राग–द्वेष – राग या द्वेष
एक–दो – एक या दो
दस–बारह – दस या बारह
लाख–दो–लाख – लाख या दो लाख
पल–दो–पल – पल या दो पल
आर–पार – आर या पार
पाप–पुण्य – पाप या पुण्य
उल्टा–सीधा – उल्टा या सीधा
कर्तव्याकर्तव्य – कर्तव्य अथवा अकर्तव्य
सुख–दुख – सुख अथवा दुख
जीवन–मरण – जीवन अथवा मरण
धर्माधर्म – धर्म अथवा अधर्म
लाभ–हानि – लाभ अथवा हानि
यश–अपयश – यश अथवा अपयश
हाथ–पाँव – हाथ, पाँव आदि
नोन–तेल – नोन, तेल आदि
रुपया–पैसा – रुपया, पैसा आदि
आहार–निद्रा – आहार, निद्रा आदि
जलवायु – जल, वायु आदि
कपड़े–लत्ते – कपड़े, लत्ते आदि
बहू–बेटी – बहू, बेटी आदि
पाला–पोसा – पाला, पोसा आदि
साग–पात – साग, पात आदि
काम–काज – काम, काज आदि

खेत–खलिहान – खेत, खलिहान आदि
लूट–मार – लूट, मार आदि
पेड़–पौधे – पेड़, पौधे आदि
भला–बुरा – भला, बुरा आदि
दाल–रोटी – दाल, रोटी आदि
ऊँच–नीच – ऊँच, नीच आदि
धन–दौलत – धन, दौलत आदि
आगा–पीछा – आगा, पीछा आदि
चाय–पानी – चाय, पानी आदि
भूल–चूक – भूल, चूक आदि
फल–फूल – फल, फूल आदि
खरी–खोटी – खरी, खोटी आदि

4. बहुव्रीहि समास –

जिस समस्त पद में कोई भी पद प्रधान नहीं हो, अर्थात् समास किये गये दोनों पदों का शाब्दिक अर्थ छोड़कर तीसरा अर्थ या अन्य अर्थ लिया जा, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे – 'लम्बोदर' का सामान्य अर्थ है– लम्बे उदर (पेट) ाला, परन्तु लम्बोदर सामास में अन्य अर्थ होगा – लम्बा है उदर जिसका ह—गणेश।
अजानुबाहु – जानुओं (घुटनों) तक बाहुएँ हैं जिसकी ह—िष्णु
अजातशत्रु – नहीं पैदा हुआ शत्रु जिसका—कोई व्यक्ति िशेष
ज्रपाणि – ह जिसके पाणि (हाथ) में ज्र है—इन्द्र
मकरध्ज – जिसके मकर का ध्ज है ह—कामदे
रतिकांत – ह जो रति का कांत (पति) है—कामदे
आशुतोष – ह जो आशु (शीघ्र) तुष्ट हो जाते हैं—शि
पंचानन – पाँच है आनन (मुँह) जिसके ह—शि
ाग्दे ी – ह जो ाक् (भाषा) की दे ी है—सरस् ती
युधिष्ठिर – जो युद्ध में स्थिर रहता है—धर्मराज (ज्येष्ठ पाण्)
ष ानन – ह जिसके छह आनन हैं—कार्तिकेय
ससऋषि – े जो सात ऋषि हैं—सात ऋषि िशेष जिनके नाम निश्चित हैं
त्रि ेणी – तीन ेणियों (नदियों) का संगमस्थल—प्रयाग
पंच टी – पाँच ट ृक्षों के समूह ाला स्थान—मध्य प्रदेश में स्थान िशेष
रामायण – राम का अयन (आश्रय)—ाल्मीकि रचित काव्य

पंचामृत – पाँच प्रकार का अमृत—दूध, दही, शक्कर, गोबर, गोमूत्र का रसायन विशेष
षड्दर्शन – षट् दर्शनों का समूह—छह विशिष्ट भारतीय दर्शन–न्याय, सांख्य, द्वैत आदि
चारपाई – चार पाए हों जिसके—खाट
विषधर – विष को धारण करने वाला—साँप
अष्टाध्यायी – आठ अध्यायों वाला—पाणिनि कृत व्याकरण
चक्रधर – चक्र धारण करने वाला—श्रीकृष्ण
पतझड़ – वह ऋतु जिसमें पत्ते झड़ते हैं—बसंत
दीर्घबाहु – दीर्घ हैं बाहु जिसके—विष्णु
पतिव्रता – एक पति का व्रत लेने वाली—वह स्त्री
तिरंगा – तीन रंगो वाला—राष्ट्रध्वज
अंशुमाली – अंशु है माला जिसकी—सूर्य
महात्मा – महान है आत्मा जिसकी—ऋषि
वक्रतुण – वक्र है तुण जिसकी—गणेश
दिगम्बर – दिशाएँ ही हैं वस्त्र जिसके—शिव
घनश्याम – जो घन के समान श्याम है—कृष्ण
प्रफुल्लकमल – खिले हैं कमल जिसमें—वह तालाब
महावीर – महान है जो वीर—हनुमान व भगवान महावीर
लोकनायक – लोक का नायक है जो—जयप्रकाश नारायण
महाकाव्य – महान है जो काव्य—रामायण, महाभारत आदि
अनंग – वह जो बिना अंग का है—कामदेव
एकदन्त – एक दंत है जिसके—गणेश
नीलकण्ठ – नीला है कण्ठ जिनका—शिव
पीताम्बर – पीत (पीले) हैं वस्त्र जिसके—विष्णु
कपीश्वर – कपि (वानरों) का ईश्वर है जो—हनुमान
वीणापाणि – वीणा है जिसके पाणि में—सरस्वती
देवराज – देवों का राजा है जो—इन्द्र
हलधर – हल को धारण करने वाला
शशिधर – शशि को धारण करने वाला—शिव
दशमुख – दस हैं मुख जिसके—रावण
चक्रपाणि – चक्र है जिसके पाणि में – विष्णु
पंचानन – पाँच हैं आनन जिसके—शिव
पद्मासना – पद्म (कमल) है आसन जिसका—लक्ष्मी

मनोज – मन से जन्म लेने वाला—कामदेव
गिरिधर – गिरि को धारण करने वाला—श्रीकृष्ण
वसुंधरा – वसु (धन, रत्न) को धारण करती है जो—धरती
त्रिलोचन – तीन हैं लोचन (आँखें) जिसके—शिव
वज्रांग – वज्र के समान अंग हैं जिसके—हनुमान
शूलपाणि – शूल (त्रिशूल) है पाणि में जिसके—शिव
चतुर्भुज – चार हैं भुजाएँ जिसकी—विष्णु
लम्बोदर – लम्बा है उदर जिसका—गणेश
चन्द्रचूड़ – चन्द्रमा है चूड़ (ललाट) पर जिसके—शिव
पुण्रीकाक्ष – पुण्रीक (कमल) के समान अक्षि (आँखें) हैं जिसकी—विष्णु
रघुनन्दन – रघु का नन्दन है जो—राम
सूतपुत्र – सूत (सारथी) का पुत्र है जो—कर्ण
चन्द्रमौलि – चन्द्र है मौलि (मस्तक) पर जिसके—शिव
चतुरानन – चार हैं आनन (मुँह) जिसके—ब्रह्मा
अंजनिनन्दन – अंजनि का नन्दन (पुत्र) है जो—हनुमान
पंकज – पंक् (कीचड़) में जन्म लेता है जो—कमल
निशाचर – निशा (रात्रि) में चर (विचरण) करता है जो—राक्षस
मीनकेतु – मीन के समान केतु हैं जिसके—विष्णु
नाभिज – नाभि से जन्मा (उत्पन्न) है जो—ब्रह्मा
वीणावादिनी – वीणा बजाती है जो—सरस्वती
नगराज – नग (पहाड़ों) का राजा है जो—हिमालय
वज्रदन्ती – वज्र के समान दाँत हैं जिसके—हाथी
मारुतिनंदन – मारुति (पवन) का नंदन है जो—हनुमान
शचिपति – शचि का पति है जो—इन्द्र
वसन्तदूत – वसन्त का दूत है जो—कोयल
गजानन – गज (हाथी) जैसा मुख है जिसका—गणेश
गजवदन – गज जैसा वदन (मुख) है जिसका—गणेश
ब्रह्मपुत्र – ब्रह्मा का पुत्र है जो—नारद
भूतनाथ – भूतों का नाथ है जो—शिव
षटपद – छह पैर हैं जिसके—भौंरा
लंकेश – लंका का ईश (स्वामी) है जो—रावण

सिन्धुजा – सिन्धु में जन्मी है जो—लक्ष्मी
दिनकर – दिन को करता है जो—सूर्य

5. कर्मधारय समास –

जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो तथा पहला पद विशेषण अथवा उपमान (जिसकी द्वारा उपमा दी जाए) हो और दूसरा पद विशेष्य अथवा उपमेय (जिसकी द्वारा तुलना की जाए) हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

इस समास के दो रूप हैं–

(i) विशेषता वाचक कर्मधारय– इसमें प्रथम पद द्वितीय पद की विशेषता बताता है।

जैसे–

महाराज – महान् है जो राजा
महापुरुष – महान् है जो पुरुष
नीलाकाश – नीला है जो आकाश
महाकवि – महान् है जो कवि
नीलोत्पल – नील है जो उत्पल (कमल)
महापुरुष – महान् है जो पुरुष
महर्षि – महान् है जो ऋषि
महासंयोग – महान् है जो संयोग
शुभागमन – शुभ है जो आगमन
सज्जन – सत् है जो जन
महात्मा – महान् है जो आत्मा
सद्बुद्धि – सत् है जो बुद्धि
मंदबुद्धि – मंद है जिसकी बुद्धि
मंदाग्नि – मंद है जो अग्नि
बहुमूल्य – बहुत है जिसका मूल्य
पूर्णांक – पूर्ण है जो अंक
भ्रष्टाचार – भ्रष्ट है जो आचार
शिष्टाचार – शिष्ट है जो आचार
अरुणाचल – अरुण है जो अचल
शीतोष्ण – जो शीत है जो उष्ण है
देवर्षि – देव है जो ऋषि है
परमात्मा – परम है जो आत्मा

अंधविश्वास – अंधा है जो विश्वास
कृतार्थ – कृत (पूर्ण) हो गया है जिसका अर्थ (उद्देश्य)
दृढ़प्रतिज्ञ – दृढ़ है जिसकी प्रतिज्ञा
राजर्षि – राजा है जो ऋषि है
अंधकूप – अंधा है जो कूप
कृष्ण सर्प – कृष्ण (काला) है जो सर्प
नीलगाय – नीली है जो गाय
नीलकमल – नीला है जो कमल
महाजन – महान् है जो जन
महादेव – महान् है जो देव
श्वेताम्बर – श्वेत है जो अम्बर
पीताम्बर – पीत है जो अम्बर
अधपका – आधा है जो पका
अधखिला – आधा है जो खिला
लाल टोपी – लाल है जो टोपी
सद्धर्म – सत् है जो धर्म
कालीमिर्च – काली है जो मिर्च
महाविद्यालय – महान् है जो विद्यालय
परमानन्द – परम है जो आनन्द
दुरात्मा – दुर् (बुरी) है जो आत्मा
भलमानुष – भला है जो मनुष्य
महासागर – महान् है जो सागर
महाकाल – महान् है जो काल
महाद्वीप – महान् है जो द्वीप
कापुरुष – कायर है जो पुरुष
बड़भागी – बड़ा है भाग्य जिसका
कलमुँहा – काला है मुँह जिसका
नकटा – नाक कटा है जो
जवाँ मर्द – जवान है जो मर्द
दीर्घायु – दीर्घ है जिसकी आयु
अधमरा – आधा मरा हुआ
निर्विवाद – विवाद से निवृत्त

महाप्रज्ञ – महान् है जिसकी प्रज्ञा
नलकूप – नल से बना है जो कूप
परकटा – पर हैं कटे जिसके
दुमकटा – दुम है कटी जिसकी
प्राणप्रिय – प्रिय है जो प्राणों को
अल्पसङ्ख्यक – अल्प हैं जो सङ्ख्या में
पुच्छलतारा – पूँछ है जिस तारे की
नवागन्तुक – नया है जो आगन्तुक
वक्रतुण्ड – वक्र (टेढ़ी) है जो तुण्ड
चौसिँगा – चार हैं जिसके सींग
अधजला – आधा है जो जला
अतिवृष्टि – अति है जो वृष्टि
महारानी – महान् है जो रानी
नराधम – नर है जो अधम (पापी)
नवदम्पत्ति – नया है जो दम्पत्ति

(ii) उपमान वाचक कर्मधारय– इसमें एक पद उपमान तथा द्वितीय पद उपमेय होता है। जैसे –
बाहुदण्ड – बाहु है दण्ड समान
चन्द्रवदन – चन्द्रमा के समान वदन (मुख)
कमलनयन – कमल के समान नयन
मुखारविन्द – अरविन्द रूपी मुख
मृगनयनी – मृग के समान नयनों वाली
मीनाक्षी – मीन के समान आँखों वाली
चन्द्रमुखी – चन्द्रमा के समान मुख वाली
चन्द्रमुख – चन्द्र के समान मुख
नरसिंह – सिंह रूपी नर
चरणकमल – कमल रूपी चरण
क्रोधाग्नि – अग्नि के समान क्रोध
कुसुमकोमल – कुसुम के समान कोमल
ग्रन्थरत्न – रत्न रूपी ग्रन्थ
पाषाण हृदय – पाषाण के समान हृदय

देहलता – देह रूपी लता
कनकलता – कनक के समान लता
करकमल – कमल रूपी कर
वचनामृत – अमृत रूपी वचन
अमृतवाणी – अमृत रूपी वाणी
विद्याधन – विद्या रूपी धन
वज्रदेह – वज्र के समान देह
संसार सागर – संसार रूपी सागर

6. द्विगु समास –

जिस समस्त पद में पूर्व पद संख्यावाचक हो और पूरा पद समाहार (समूह) या समुदाय का बोध कराए उसे द्विगु समास कहते हैं। संस्कृत व्याकरण के अनुसार इसे कर्मधारय का ही एक भेद माना जाता है। इसमें पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण तथा उत्तर पद संज्ञा होता है। स्वयं 'द्विगु' में भी द्विगु समास है। जैसे –
एकलिंग – एक ही लिंग
दोराहा – दो राहों का समाहार
तिराहा – तीन राहों का समाहार
चौराहा – चार राहों का समाहार
पंचतत्त्व – पाँच तत्वों का समूह
शताब्दी – शत (सौ) अब्दों (वर्षों) का समूह
पंचवटी – पाँच वश्टों (वृक्षों) का समूह
नवरत्न – नौ रत्नों का समाहार
त्रिफला – तीन फलों का समाहार
त्रिभुवन – तीन भुवनों का समाहार
त्रिलोक – तीन लोकों का समाहार
त्रिशूल – तीन शूलों का समाहार
त्रिवेणी – तीन वेणियों का संगम
त्रिवेदी – तीन वेदों का ज्ञाता
द्विवेदी – दो वेदों का ज्ञाता
चतुर्वेदी – चार वेदों का ज्ञाता
तिबारा – तीन हैं जिसके द्वार
सप्ताह – सात दिनों का समूह

चवन्नी – चार आशनों का समाहार
अठवारा – आठवें दिन क□ लगन□वाला बाजार
पंचामृत – पाँच अमृतों का समाहार
त्रिलाक्षी – तीन लाक्षों का
सतसई – सात सई (सौ) (पदों) का समूह
एकांकी – एक अंक है जिसका
एकतरफा – एक है ज□ तरफ
इकलौता – एक है ज□
चतुर्वर्ग – चार हैं ज□ वर्ग
चतुर्भुज – चार भुजाओं वाली आकृति
त्रिभुज – तीन भुजाओं वाली आकृति
पन्सषी – पाँच सष वाला बाट
द्विगु – द□ गायों का समाहार
चौपड़ – चार फड़ों का समूह
षट्कण – छः कण वाली बंद आकृति
दुपहिया – द□ पहियों वाला
त्रिमूर्ति – तीन मूर्तियों का समूह
दशाब्दी – दस वर्षों का समूह
पंचतंत्र – पाँच तंत्रों का समूह
नवरात्र – नौ रातों का समूह
सप्तर्षि – सात ऋषियों का समूह
दुनाली – द□ नालों वाली
चौपाया – चार पायों (पैरों) वाला
षट्पद – छः पैरों वाला
चौमासा – चार मासों का समाहार
इकतीस – एक व तीस का समूह
सप्तसिन्धु – सात सिन्धुओं का समूह
त्रिकाल – तीन कालों का समाहार
अष्टधातु – आठ धातुओं का समूह

अर्थ के आधार पर वाक्य भेद

अर्थ के आधार पर आठ प्रकार के वाक्य होते हैं-

5. **विधानवाचक वाक्य -** वह वाक्य जिससे किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है, विधिसूचक वाक्य कहलाता है। जैसे- श्रीराम के पिता का नाम दशरथ था। राम घर जाता है। आदि

6. **नकारात्मक/ निषेधात्मक वाक्य -** जिन वाक्यों मे किसी बात के न होने का बोध हो उन्हें नकारात्मक वाक्य कहते हैं जैसे - मोहन घर नहीं जाता है। आदि।

7. **प्रश्नवाचक वाक्य -** जिन वाक्यों से किसी प्रकार के प्रश्न किये जाने का बोध हो उन्हें प्रश्न वाचक वाक्य कहते हैं जैसे - क्या राम घर जाता है? आदि।

8. **विस्मयादिवाचक वाक्य -** वह वाक्य जिससे किसी प्रकार की गहरी अनुभूति (दया , प्रेम, दुख) का प्रदर्शन किया जाता है, विस्मयादि बोधक वाक्य कहलाता है। जैसे - वाह ! तुमने तो कमाल कर दिया आदि।

9. **आज्ञा या विधिवाचक वाक्य -** वे वाक्य जिनके द्वारा किसी प्रकार की आज्ञा या अनुमति का बोध हो उन्हें **आज्ञा वाचक** वाक्य कहते हैं। जैसे - बाजार से फल लेकर आओ। कृपया बैठ जाइये। आदि

10. **इच्छावाचक वाक्य -** जिन वाक्यों में किसी इच्छा के होने का बोध हो उन्हें इच्छा वाचक वाक्य कहते हैं जैसे - भगवान आपकी सारी इच्छा पूरी करे। आदि

11. **संदेहवाचक वाक्य -** जिन वाक्यों में किसी संदेह के होने का बोध हो उन्हें संदेह वाचक वाक्य कहते हैं जैसे - हो सकता है आज मोहन आ जाये। आदि

12. **संकेतवाचक वाक्य -** जिन वाक्यों से किसी संकेत के होने का बोध हो उन्हें संकेत वाचक वाक्य कहते हैं। जैसे - अगर वर्षा न होती तो खेती सूख जाती। आदि

अलंकार

'अलंकार' **शब्द** का अर्थ है - आभूषण या गहना | जिस प्रकार आभूषण धारण करने से स्त्री के सौंदर्य में वृद्धि हो जातीहै, उसी प्रकार काव्य में अलंकारों के प्रयोग से काव्य के सौंदर्य में वृद्धि हो जाती है अर्थात् चमत्कार उत्पन्न हो जाता है।

काव्य में चमत्कार **शब्दों** के प्रयोग या अर्थ के द्वारा उत्पन्न होता है। इसी आधार पर अलंकार के दो **मुख्य**भेद माने गए हैं। इन्हें सुविधा हेतु चार्ट के माध्यम से समझा जा सकता है-

अलंकार

(क) शब्दालंकार जहाँ शब्द-प्रयोग द्वारा चमत्कार उत्पन्न किया गया हो।

(ख)अर्थालंकार जहाँ अर्थ के द्वारा चमत्कार उत्पन्न किया गया हो।

उदाहरण-कालिका-सी किलकि कलेऊ देति काल को। उदाहरण-हाथी-सा टीला।

शब्दालंकारके भेद

(**क**)अनुप्रास अलंकार

(**ख**)यमक अलंकार

(**ग**)श्लेष अलंकार

अर्थालंकार के भेद

(**क**) उपमा अलंकार

(**ख**) रूपक अलंकार

(**ग**)उत्प्रेक्षा अलंकार

(**घ**)मानवीकरण अलंकार

प्रमुख अलंकारों की परिभाषा तथा उदाहरण-

(क) अनुप्रास अलंकार-जब काव्य में समान वर्णों की **आवृत्ति**होती है, एक ही वर्ण दो या दो से अधिक बार प्रयुक्त हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण-(**क**)मन की मन ही माँझ रही।

(**ख**) चाहत हुतीं गुहारि जितहिं तै, उत तै धार बही।

(ख) यमक अलंकार-जब एक ही **शब्द** दो या दो से अधिक बार प्रयुक्त हो और हर बार उसका अर्थ भिन्न हो तब वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण- कहे कवि बेनी, बेनी **ब्याल** की चुराई लीन्हीं।

यहाँ **'**बेनी**'शब्द** दो बार दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है -

(क)**'**बेनी**'**-कवि का नाम (ख)**'**बेनी**'**-चोटी।

उदाहरण(ख) ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहन वारी
ऊँचे घोर मंदर केअंदर रहाती हैं।

यहाँ **'**मंदर**' शब्द** दो बार दो अर्थों में प्रयुक्त है -
(क)महल (ख)पर्वतों की गुफा।

(ग) श्लेष अलंकार- जब काव्य में **शब्द** एक बार ही प्रयुक्त हो किंतु उसके एक से अधिक अर्थ निकलते हों, तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण-चरण धरत चिंता करत, चितवत चारों ओर
'सुवरण' को खोजत फिरैं-कवि, व्यभिचारी, चोर।

यहाँ 'सुवरण' **शब्द** एक ही बार प्रयुक्त हुआ है किन्तु उसके तीन अर्थ निकल रहे हैं -

क. कवि के लिए- सुंदर वर्ण (**शब्द**)
ख. व्यभिचारी के लिए-सुंदर रंग-रूप
फ. चोर के लिए-सोना

उदाहरण-मधुवन की छाती को देखो
सूखी कितनी उसकी कलियाँ।

यहाँ कलियाँ **शब्द**के दो अर्थ हैं -
क. कलियाँ -पुष्प के खिलने से पूर्व की अवस्था
ख. कलियाँ-यौवन से पूर्व की अवस्था

(ख) प्रमुख अर्थालंकारके भेद-

(क) उपमा अलंकार-जब गुण धर्म की अत्यंत समानता के कारण एक व्यक्ति या वस्तु की तुलना दूसरी किसी प्रसिद्ध व्यक्ति/वस्तु से की जाए तब वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उपमा के चार प्रमुख अंग होते हैं -
उपमेय-जिसकी तुलना की जा रही हो।
उपमान-जिससे तुलना की जा रही हो।

साधारण धर्म-वह विशेषता या गुण**,** धर्म जिसके कारण तुलना की जा रही हो।

वाचक **शब्द**-जिस **शब्द** से समानता या उपमा का बोध होता है।
उदाहरण-पीपर-पात,सरिस मनडोला।

उपमान= पीपर-पात(पीपल का पत्ता),वाचक**शब्द** = सरिस, उपमेय= मन, साधारण धर्म = डोला(हिला)।

उदाहरण-हाय फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।

यहाँफूल-उपमान है। जिससे तुलना की जा रही है।
बच्ची उपमेय है -जिसकी तुलना की जा रही है।

सी- वाचक **शब्द** है। जिससे तुलना का बोध हा रहा है।
कोमल- साधारण धर्म है। जिस गुण के कारण तुलना की जा रही है।

(विशेष- सा,से, सी, सम, सरिस, जैसे **शब्दों** का प्रयोग होता है।)

(ख) **<u>रूपक अलंकार</u>** – जहाँ गुणधर्म की अत्यधिक समानता के कारण एक वस्तु को दूसरी वस्तु ही मान लिया जाए अर्थात् उपमेय में उपमान का अभेद आरोपण कर दिया जाए , वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण–प्रीति–नदी मैं पाऊँ न बोरयौ।

यहाँ प्रीति को नदी मान लिया गया है।

उदाहरण– शशि–मुख पर घूँघट डाले, अंचल में दीप छिपाए।

यहाँ मुख को चंद्रमा ही मान लिया गया है।

(ग) **उत्प्रेक्षा अलंकार–** जहाँ गुणों की समानता के कारण उपमेय में उपमान की कल्पना या **संभावना**व्यक्त की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उदाहरण– ले चला साथ मैं तुझे कनक,
ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण–झनक। (कवि स्वयं में भिक्षुक के रूप कीकल्पनाकरता है।)

<u>उदाहरण–</u>सोहत ओढ़े पीत–पट,स्याम सलोने गात।
मनो नीलमणि सैलपर, आतप पर् यो प्रभात ||

(साँवले कृष्ण को पीले वस्त्रों में सुसज्जित देखकरनीलमणि पर्वत पर प्रभात कीकल्पना की गई है)

(विशेष–जानो, मानो, मनहुँ,जनहुँ, ज्यों आदि का प्रयोग)

(घ) **मानवीकरण अलंकार–** जब जड़ अर्थात् अचेतन वस्तुओं को चेतन या सजीव रूप में चित्रित किया जाए, मानव सदृश क्रियाएँ करते दिखाया जाए तब वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

उदाहरण–

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सुंध्या–सुंदरी परी–सी,
धीरे–धीरे–धीरे।

यहाँ संध्या काल को एक सुंदर युवती के रूप में चित्रित किया है।

उदाहरण–

सिंधु सेज पर धरा वधू तनिक संकुचित बैठी–सी।
यहाँधरती को वधू रूप में चित्रित किया गया है।

उदाहरण–

कंज–कली नायिका लतान सिर सारी दै।
यहाँ कमल की कली को नायिका के रूप में चित्रित किया गया है।

अभ्यासप्रश्न

निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

1. 'कालिंदी कूल कदंब की डारन' इस पंक्ति में कौन–सा अलंकार है ?
2. 'सत की नाव खेवटियासतगुरू' में कौन–सा अलंकार है ?
3. 'कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर' पंक्ति में **कौनसा** अलंकार है **?**
4. "लखन उतर आहुति सरिस"में कौन–सा अलंकार है ?
5. 'बालक बोलि बधौ नहीं तोही' इस पंक्ति में कौन–सा अलंकार है ?
6. **तुम** तो काल हाँकि जनु लावा' पंक्ति में कौन–सा अलंकार है ?
7. 'बढ़त देखि जल सम वचन' पंक्ति में **कौनसा** अलंकार है ?
8. आई ज्ञान की आँधी रे पंक्ति में **कौनसा** अलंकार हैं ?
9. 'अपनी कृति से और कहो या करदूँ '– पंक्ति में **कौनसा** अलंकार है ?
10. किस पाहुन ज्यों आए हो गाँव में शहर के" पंक्ति मे **कौनसा** अलंकार है ?
11. 'मेघ आए बड़े बन ठन के संवर के' इस पंक्ति में **कौनसा** अलंकार है ?
12. 'प्रकृति का अनुराग–अँचल हिल रहा है' पंक्ति में कौन–सा अलंकार है **?**
13. 'मानों झूम रहे हैं तरू भी मंद पवन के झोकों से' पंक्ति में **कौनसा** अलंकार है ?
14. "रोमांचित–सी लगती वसुधा"पंक्ति में **कौनसा** अलंकार है ?
15. 'इस काले संकट सागर पर' पंक्ति में **कौनसा** अलंकार है **?**
16. 'पानी गए न उबरैं मोती मानुस चून' पंक्ति में **कौनसा** अलंकार है **?**
17. 'प्रीति– नदी में पाँव न बोरयो' पंक्ति में **कौनसा** अलंकार है **?**

18. 'सुबरन को खोजत फिरत कवि, व्यभिचारी, चोर' पंक्ति में **कौनसा** अलंकार है ?

उत्तर- **संकेत**-1.अनुप्रास, (2)रूपक, (3)यमक, (4)**उपमा**, (5)अनुप्रास, **(6)उत्प्रेक्षा**, (7) उपमा, (8) **रूपक** (9) अनुप्रास, (10) **उत्प्रेक्षा**,(11) मानवीकरण, (12) **रूपक** (13) उत्प्रेक्षा, (14) **उपमा**(15) रूपक, (16) श्लेष, (17) रूपक, (18) श्लेष।

प्रतिवेदन

केन्द्रीय विद्यालय म्याउ का वार्षिकोत्सव

दिनांक ८-१२ -२०११

को सामुदायिक भवन **म्याउ** में हुआ । इसके मुख्य अतिथि श्री एस. राय.आइ.\सी.(अतिरिक्त स. उपायुक्त) और श्री टी. मारा (अतिरिक्त उपायुक्त) थे। अभी तक का सबसे अच्छा कार्यक्रम रहा । इस कार्यक्रम की शुरूआत स्थानीय प्रधानाचार्य ने मुख्य अतिथियो के स्वागत से की। इसके बाद कक्षा १० के विद्यार्थियों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया । इसके बाद पुरस्कार वितरण प्रारम्भ हुआ जैसा कि हर साल वितरित किया जाता है। इस सत्र में अशोक सदन को प्रथमस्थान , रमन सदन को द्वितीय स्थान , सुभास सदन को तृतीय स्थान, टैगोर सदन को चर्तुथ स्थान प्राप्त किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, कक्षा ८ की छात्राओं ने सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया। सभी कक्षाओं के बच्चों ने सबका मनोरंजन किया । इस कार्यक्रम में हिन्दी एवं अंग्रेजी के नाटक प्रस्तुत किये गये। प्राथमिक कक्षा की छात्राओं ने फ़ैसन शो प्रस्तुत किया। आखिरी कार्यक्रम वरिष्ठ कक्षा की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत पन्जाबी नृत्य था । मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम का आनन्द उठाया और सबको बधाई दी । अन्त में राष्ट्र गान प्रस्तुत किया गया जिसमें सभी लोग उपस्थित हुए और कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

पत्र-लेखन

पाठ्यक्रम में निम्नलिखित पत्र दिए गए हैं-

क. औपचारिक पत्र- प्रार्थना पत्र, आवेदन पत्र, शिकायती पत्र

ख. अनौपचारिक पत्र- बधाई पत्र, धन्यवाद पत्र, शुभकामना पत्र, सांत्वना पत्र

औपचारिक – पत्र

पत्र का प्रारूप	***संबंध***	***प्रार भ***	
	समापन		
आवेदन-पत्र	प्रधानाचार्य	मान्यवर,	महोदय,
	भवदीय, निवेदन		
	माननीय, श्रीमान जी	आपका आज्ञाकारी	
	संबधित अधिकारी का पद	मान्य/मान्यवर माननीय	प्रार्थी,
विनीत,			श्रीयुत,
महोदय	भवदीय		
कार्यालयी पत्र	संपादक ,नगरनिगम अधिकारी,	माननीय,	मान्यवर,
	भवदीय, प्रार्थी,		
	केन्द्रीय मंत्री, रेलवे अधीक्षक आदि	महोदय,	आदरणीय
	निवेदक, विनीत		

क. औपचारिक पत्रों में <u>विषय-लिखकर</u> रेखांकित कीजिए।

ख. औपचारिक पत्रावली का एक सुनियोजित ढाँचा होता है। उसके शीर्ष भाग में पाने वाले का पता भी बाई ओर लिखा जाता है। मध्य भाग को समाप्त करने के बाद धन्यवाद लिखा जाता है उसके बाद स्वनिर्देश का उल्लेख होता है।

फ. आदर्श पत्र वह होता है जिसका आरंभ और समापन एक ही पृष्ठ पर हो।

अनौपचारिक –पत्र

पत्र का प्रारूप	**प्रारंभ**	**संबंध**	**समापन**
अनौपचारिक-पत्र	बड़ों के लिए	भाई	साहब,
	आपका/आपकी/सुपुत्री		
बधाई- पत्र	आदरणीय, पूज्य	दादाजी, मामाजी,	पिताजी
	सुपुत्र/पौत्र/प्रपौत्र		
धन्यवाद पत्र	श्रद्धेय, परम आदरणीय	बहन जी, नाना जी,	
	नाती/नातिन/ ातीजा		

शुभकामना पत्र	ाान्य, पूजनीय	नाना जी, चाचा जी	भतीजी के साथ नाम
सांत्वना पत्र	छोटे तथा बराबर के साथियों	ताऊ जी, छोटा भाई	बड़ा भाई/बहन, आपका
	के लिए–प्रिय उसका	बहन, मित्र, सहेली	/आपकी मित्र/सहेली
	नाम लिखें		के साथ नाम

कार्यालयी पत्र का प्रारूप

पत्र सं या .....

दिल्ली सरकार,

शिक्षा विभाग।

प्रेषक .....

.....

दिनांक .....

सेवा में ,

विषय:–

मान्यवर,

मुझे आपके पत्र सं. ..... दिनांक .....के संदर्भ में यह स्पष्टीकरण देना है कि

.....।

भवदीय

.....

(हस्ताक्षर)

नाम व पद

.....

संलग्न प्रतियाँ

(क) .....

(ख) .....

आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रतिलिपि प्रेषित-

(क) .....

(ख) .....

आवेदन पत्र का प्रारूप

सेवा में

प्राचार्य महोदय,

.....

विषय .....।

मान्यवर, माननीय

मैं निवेदन करता हूँ कि

.....

.....

....

प्रार्थी .....

क ख ग

तिथि .....

औपचारिक -पत्र

शिकायती पत्र

प्रश्न- आपके नगर की एक प्रसिद्ध डेयरी में दूध तथा दूध से निर्मित पदार्थों में मिलावट की जाती है। नगर के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र द्वारा जानकारी देते हुए उचित कार्यवाही के लिए अनुरोध कीजिए।

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

दिल्ली नगर निगम,

राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।

विषय:-दूध एवं दुग्ध पदार्थों में मिलावट संबंधी जानकारी विषयक।

महोदय,

मैं आपका ध्यान रघुवीर क्षेत्र में चल रही 'गुप्ता' डेयरी द्वारा मिलावट के अनैतिक धंधे की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस डेयरी में दूध वितरित होता है तथा दूध से बने पदार्थ पनीर, दही, खोया आदि बनाकर बेचे जाते हैं। इन पदार्थों में भारी मिलावट की जाती है। इसकी

शिकायत कई बार की गई है, पर मालिक स्वास्थ्य कर्मचारियों को रिश्वत देकर अपना काम निरंतर जारी किये हुए है। यह डेयरी लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रही है।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि इस डेयरी पर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाए, जिससे यहाँ मिलावट पर रोक लगाई जा सके।

सधन्यवाद।

भवदीय

रमेश

संयोजक,

जन चेतना मंच, रघुवीर नगर,

नई दिल्ली।

दिनांक – .....

आवेदन-पत्र

क एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में लिपिक पदों के रिक्त स्थानों को भरने के लिए 'रोजगार समाचार' में विज्ञापन आया है, उसका हवाला देते हुए सचिव के नाम आवेदन-पत्र लिखिए।

सेवा में,

सचिव महोदय,

एन.सी.ई.आर.टी.।

नई दिल्ली।

विषय-**लिपिक पद की नियुक्ति हेतु आवेदन-पत्र**

महोदय,

निवेदन है कि साप्ताहिक-पत्र 'रोजगार-समाचार' दिनांक ख्क.क्क.ख्त( ) के विज्ञापन के अनुसार लिपिक पद हेतु आवेदन-पत्र प्रेषित है।

नाम	:	शशांक शर्मा
पिता का नाम	:	श्री वी.के.शर्मा
जन्म तिथि	:	क-.क.क-त्त्र
पत्र व्यवहार हेतु पता	:	बी-फम्त्र,प्रेम बिहार से€टर म्ख, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर
शैक्षणिक योग्यता	:	

कक्षा	विद्यालय	बोर्ड/वि.वि.	उत्तीर्ण वर्ष	प्राप्तांक	विषय
दस	रा.स.शि.उ.	सी.बी.एस.ई	ख्क	फ१/१	हिन्दी,अंग्रेजी,
गणित अध्ययन					मा.आनन्द
विहार					
	दिल्ली				
बारह	रा.स.शि.उ.	सी.बी.एस.ई.	ख्फ	ख्-१/१	
अंग्रेजी,गणित,रसायन, विज्ञान					

बी.सी.ए. आई.एम.एस.नोएडा चौ.च.सि.मेरठ ख्त्त ब्ख्भ्/स्त्र क प्यूटर

विशेष-

क. मुझे टंकण में विशेष कुशलता प्राप्त है।

ख प्रकाशन विभाग में कार्य करने का लगभग दस माह का अनुभव प्राप्त है, जिसका प्रमाण-पत्र आवेदन-पत्र के साथ संलग्न है।

अतः अपेक्षा करता हूँ कि साक्षात्कार हेतु अवसर प्रदान करेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

शशांक शर्मा

दिनांक क्त.क्क.ख

संलग्नक सूची-

क. कक्षा दस का प्रमाण-पत्र

ख कक्षा बारह का प्रमाण-पत्र

फ. बी. सी. ए. का प्रमाण-पत्र

ब.अनुभव प्रमाण-पत्र

भ.चरित्र प्रमाण-पत्र।

संपादक को पत्र

प्रश्न- किसी प्रख्यात समाचार पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखकर रेल आरक्षण व्यवस्था में हुए सुधार की प्रशंसा कीजिए।

सेवा में,

संपादक,

नवभारत टाइ स

नई दिल्ली

दिनांक ....

विषय- **रेल आरक्षण की नई व्यवस्था**

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से रेल आरक्षण में आए सुधार की प्रशंसा करना चाहता हूँ ताकि इसका लाभ सभी यात्री उठा सकें।

रेलवे ने ई-टिकटिंग व्यवस्था लागू कर घर बैठे कंप्यूटर पर रेल टिकटों का आरक्षण करना आरंभ कर दिया है। इससे आरक्षण कार्यालय जाने और लंबी-लंबी लाइनों में लगने के झंझट से छुटकारा मिल गया है। टिकटों की कालाबाजारी भी प्रायः समाप्त हो गई है। इस व्यवस्था के लिए

रेल मंत्रालय बधाई का पात्र है। आशा है रेलवे भविष्य में भी जनहितकारी योजनाएँ लागू करता रहेगा।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

रमाकांत पाल

संयोजक, दैनिक रेल यात्री संघ, साहिबाबाद

अनौपचारिक-पत्र

प्रश्न- छात्रवास में रहने वाले छोटे भाई को एक पत्र लिखिए जिसमें योग एवं प्राणायाम का महत्त्व बताया गया हो और नियमित रूप से इनका अभ्यास करने का सुझाव भी दिया गया हो।

ए-फ्ख्म्,नवीन नगर,

दिल्ली।

दिनांक .....

प्रिय अनुज,

शुभाशीर्वाद।

तुहारा पत्र मिला। पत्र से प्रतीत होता है कि छात्रावास में रहकर तुम कुछ अस्वस्थ से रहने लगे हो। इसका उपाय यह है कि तुम प्रतिदिन योग और प्राणायाम का अ यास करो। योग से शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं प्राणायाम प्राणवायु को सुचारू रूप से पूरे शरीर में संचारित करता है। तुम टी.वी. पर बाबा रामदेव का योग कार्यक्रम देखकर इन क्रियाओं को भली प्रकार कर सकते हो। कुछ ही दिनों में तुम्हें इसका अच्छा असर देखने को मिल जाएगा। इसके लिए प्रात: काल 5 बजे का समय सबसे अच्छा होगा। योग एवं प्राणायाम का महत्व तो प्राचीन काल से रहा है। तुम्हें इन क्रियाओं को दैनिक जीवन का हिस्सा बना लेना चाहिए।

मैं आशा करता हूँ कि तुम पूर्णत: स्वस्थ हो जाओगे।

तुम्हारा शुभ चिंतक

रमेश वर्मा

निबंध लेखन

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए- अंक -१०

(क) **गर्माती पृथ्वी –विनाश का आरम्भ** : धरती पर ही जीवन संभव ,पृथ्वी के समक्ष चुनौतियाँ ,पृथ्वी का निरंतर बढ़ता तापमान, कारण –प्रदूषण और ग्रीन हाउस गैसें, बढ़ते तापमान के दुष्प्रभाव, संभावित उपाय और हमारी भूमिका,उपसंहार|

(ख) **किसी पर्वतीय स्थल की यात्रा का वर्णन** : यात्रा पर जाने के कार्यक्रम का सुझाव, स्थान का चयन, जाने की तैयारी, रास्ते में दिखाई देने वाले दृश्य, दर्शनीय स्थलों का भ्रमण, अनुभव, यात्रा से वापसी, उपसंहार

(ग) **'बीता समय फिर लौटता नहीं** ' : समय का महत्व, समय का सदुपयोग अनिवार्य, समय गँवाने से हानियाँ, उपसंहार |

पाठ्यपुस्तक

गद्यांश आधारित **प्रश्न**(5 अंक)

दो बैलों की कथा

1. कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी–कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख–दुख, हानि–लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों–मुनियों के जितने गुण हैं वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुच गए हैं पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा।

1 कुत्ते को गरीब जानवर कहा गया क्योंकि
क वह बहुत कामजोर प्राणी है । ख वह बहुत निर्धन पशु है ।
ग वह दया का पात्र है । घ उपरोक्त सभी
2 गधे क्या नही करते ?
क चुपचाप मार खाना ख असंतोष प्रकट करना
ग खुश होना घ जो मिले उसे खा लेना
3 किसके चहेरे पर सदा उदासी छाई रहती है ?
क कुत्ता ख बैल
ग सांड घ गधा
4 सुख–दुख, हानि–लाभ **कौन नहीं** बदलते

क ऋषि मुनि ख साधु

ग गधे घ उपरोक्त सभी

5 सुख दुख में कौन सा समास है

क बहुव्रीहि ख द्विगु

घ द्वन्द्व घ अव्ययी भाव समास

2. झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती। दोनों पछाइ जाति के थे.देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते–रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने–सामने या आस–पास बैठे हुए एक–दूसरे से मूक–भाषा में विचार–विनिमय करते थे। एक, दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक–दूसरे को चाटकर और सूघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी–कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे.विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल–धप्पा होने लगता है।

1 झूरी काछी कौन था ?

क बैलों का मालिक ख बैलो का व्यापारी

ग बैलो का खरीददार घ काजीहाऊस का चौकीदार

2 हीरा और मोती कैसे थे ?

क दिखने में सुंदर ख काम में चौकस

ग कद में ऊचे घ उपरोक्त सभी

3 हीरा और मोती की वह कौन सी विशेषता है जिससे मनुष्य वंचित हट

क भाईचारे की भावना ख विचार विनिमय का गुण

ग कठोर परिश्रम करने की शक्ति घ एक दुसरे कए मन की बात जान लेना

4 बैल अपना पऽम कैसे प्रकट करते हैं

क जुगाली करके ख चाटकर

ग सींग मिलाकर घ उपरोक्त सभी

5 विग्रह का अर्थ है

क मजाक ख प्रेम

ग दोस्ती घ झगड़ा

3. आधी रात से ऊपर जा चुकी थी। दोनों गधे अभी तक खड़े सोच रहे थे कि भागें या न भागें, और मोती अपने मित्रो की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था। जब वह हार गया, तो हीरा ने कहा.तुम जाओ, मुझे यहीं पड़ा रहने दो। शायद कहीं भेंट हो जाए। मोती ने आँखों में आसू लाकर कहा.तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो, हीरा ? हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे हैं। आज तुम विपत्ति में पड़ गए, तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊ!। हीरा ने कहा.बहुत मार पड़ेगी। लोग समझ जाएगे, यह तुम्हारी शरारत है। मोती गर्व से बोला.जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधन पड़ा, उसके लिए अगर मुझ पर मार पड़े, तो क्या चिंता! इतना तो हो ही गया कि नौ–दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।

1 कांजीहौस से गधे क्यो नही भागे ?
क वे दीवार टूटने से बेखबर थे । ख वे वहा¡ सुखी थे ।
ग वे डरते थे । घ वे कायर थे ।
2 रस्सी कौन तोड़ने लगा ?
क हीरा ख मोती
ग गधे घ उपरोक्त तीनों
3 मोती हीरा को छोड़कर क्यों नहीं गया ?
क वह कांजीहौस में रहना चाहता था ।
ख उसे हीरा की चिंता थी।
ग वह मित्र को छोडकर भागना नही चाहता था ।
घ उसे हीरा ने मना किया था ।
4 मोती ने ऐसा क्यो कहा .जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधन पड़ा, उसके लिए अगर मुझ पर मार पड़े, तो क्या चिंता! इतना तो हो ही गया कि नौ–दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।
क उसे अपनी परवाह नही थी ।
ख वह मार खाने से नही डरता था ।
ग उसने हार मान लिया था ।
घ वह दूसरे की आजादी के लिए सब कष्ट सहने को तैयार था ।
5 अपराध में किस उपसर्ग का प्रयोग है ?
क उप ख अप ग अपर घ राध

ल्हासा की **ओर**

डाड़े तिब्बत में सबसे खतरे की जगहें हैं। सोलह–सत्रह हज़ार फीट की ।ऊँचाई होने के कारण उनके दोनों तरफ़ मीलों तक कोई गाँव–गिराव नहीं होते। नदियों के मोड़ और पहाड़ों के कोनों के कारण बहुत दूर तक आदमी को देखा नहीं जा सकता। डाकुओं के लिए यही सबसे अच्छी जगह है। तिब्बत में गाँव में आकर खून हो जाए, तब तो खूनी को सज़ा भी मिल सकती है, लेकिन इन निर्जन स्थानों में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफ़िया–विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहाँ! गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता। डकैत पहिले आदमी को मार डालते हैं, उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं।
1 डाड़े तिब्बत में सबसे खतरनाक जगहें क्यों हैं ?
क यह सोलह–सत्रह हज़ार फीट की ऊँचाई पर है।
ख यहाँ आस–पास मीलों तक कोई गाँव नहीं है।
ग डाकुओं के लिए यह सुरक्षित जगह है।
घ उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं।
2 डाकुओं के लिए डा!ड़े सबसे अच्छी जगह क्यों हैं ? 1
क पुलिस उनसे डरती है।
ख बहुत से यात्री लूटने के लिए मिल जाते हैं।
ग लूट और हत्या का कोई गवाह नहीं मिल पाता।
घ सुनसान जगह है।
3 यहाँ खून होने पर खूनी को सजा क्यों नहीं मिल पाती ? 1

क क्योंकि वहाँ जमींदारी प्रथा है।
ख क्योंकि वहाँ! कोई न्यायालय नहीं है।
ग खूनी से सब डरते हैं।
घ क्योंकि खून करने वाले के खिलाफ कोई गवाह नहीं होता।
4 डाड़े की आवासीय स्थिति कैसी है ?
क यहाँ दूर–दूर तक कोई गाँव नहीं है।
ख यहाँ गाँव बहुत पास–पास हैं।
ग यहाँ गाँव की आबादी कम है।
घ यहाँ गाँव की सघन आबादी है।
5 'निर्जन' शब्द में उपसर्ग है–
क नि। ख निर्। ग नीर। घ निज।

<u>उपभोक्तावाद की संस्कृति</u>

1. धीरे–धीरे सब कुछ बदल रहा है। एक नयी जीवन–शैली अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। उसके साथ आ रहा है एक नया जीवन–दर्शन.उपभोक्तावाद का दर्शन। उत्पादन बढ़ाने पर जोर है चारों ओर। यह उत्पादन आपके लिए है आपके भोग के लिए है, आपके सुख के लिए है। 'सुख' की व्याख्या बदल गई है। उपभोग–भोग ही सुख है। एक सूक्ष्म बदलाव आया है नई स्थिति में। उत्पाद तो आपके लिए हैं, पर आप यह भूल जाते हैं कि जाने–अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहें हैं ।

1 आज किसका प्रभाव बढ़ रहा है
क उत्पादन ख बाजार ग उपभोक्तावाद घ नयी जीवन शैली
2 उपभोक्तावाद में किस पर बल दिया जा रहा है
क भोग विलासिता पर ख उत्पादन बढ़ाने पर
ग सुख बढ़ाने पर घ चरित्र बदलने पर
3 सुख की वर्तमान परिभाषा क्या है\
क उत्पादन बढ़ाना ही सुख है। ख उपभोग–भोग ही सुख है।
ग दिखावा करने में सुख है । घ उपरोक्त सभी
4 उपभोक्तावादी जीवन–शैली के कारण क्या बदल रहा है\
क चरित्र ख सुख की परिभाषा
ग जीवन के प्रति दृष्टिकोण घ उपरोक्त सभी
5 इस गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम है\
क उपभोक्तावाद की संस्कृति, श्यामाचरण दुबे
ख लहासा की ओर]राहुल सांकृत्यायन
ग सांवले सपनों की याद]जाबिर हुसैन
घ नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया ,
चपला देवी

2. हम सांस्कृतिक अस्मिता की बात कितनी ही करें परंपराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। कड़वा सच तो यह है कि हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं, पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं। हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा की अंधी

प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ्त में आते जा रहे हैं। संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं।

1 उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमारी परपराओं और आस्थाओं को किस प्रकार प्रभावित किया है? 1

क उनका विकास हुआ है।

ख उनका अवमूल्यन तथा क्षरण हुआ है।

ग उनमें परिवर्तन आया है।

घ ये यथावत हैं।

2 बौद्धिक दासता स्वीकारने का आशय है– 1

क मानसिक गुलामी।

ख दास बन जाना।

ग हम पश्चिमी संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं।

घ अपनी संस्कृति को बचाना।

3 हमारी नई संस्कृति कैसी है? 1

क अनुकरण की संस्कृति है। ख मूल्यों की संस्कृति है।

ग सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। घ समद्धिशाली संस्कृति है।

4 हम दिग्भ्रमित क्यों हो रहे हैं? 1

क आधुनिक होने के कारण।

ख अंधी प्रतिस्पर्धा के कारण।

ग बौद्धिक दासता के कारण।

घ संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण।

5 'अस्मिता' शब्द का अर्थ है– 1

क आदर। ख कार्यक्रम। ग अस्तित्व। घ सम्मान।

3. इस संस्कृति के फैंलाव का परिणाम क्या होगा? यह गंभीर चिंता का विषय है। हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है। जीवन की गुणवता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती। न बहुविज्ञापित शीतल पेयों से। भले ही वे अंतर्राष्ट्रीय हों। पीजा और बर्गर कितने ही आधुनिक हों, हैं वे कूड़ा खाद्य। समाज में वर्गो की दूरी बढ़ रही है, सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है। जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आवेश और अशांति को जन्म दे रहा है। जैसे–जैसे दिखावे की यह संस्कृति फैंलेगी, सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी। हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य–भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं, हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादाएँ टूट रही हैं, नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति–केंद्रकता बढ़ रही है, स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाए! आसमान को छू रही हैं।

1 उपभोक्तावादी संस्कृति के फैंलाव का परिणाम क्या होगा?

ा सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय

ज्ञ समाज में वर्गो की दूरी बढ़ना

हं व्यक्ति–केंद्रकता बढना

घ उपरोक्त सभी

2 जीवन की गुणवता किससे नहीं सुधरती

क दूध ख आलू ग चावल ढाल घ कूड़ा खाद्य

3 कौन से कूड़ा खाद्य आधुनिक समझे जाते हैं
क पीजा ज्ञ बर्गर ग शीतल पे; घ उपरोक्त सभी
4 उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ने का परिणाम नही है
क विकास के विराट उद्देश्य से पीछे हटना
ख स्वार्थ परमार्थ पर हावी होना
ग नैतिक मानदंड ाक्एव होना
घ लक्ष्य–भ्रम से पीड़ित होना

5 **क्या** आवेश और अशांति को जन्म दे रहा है।
क शिक्षा में अंतर ख खान पान का अंतर
ग जीवन स्तर का बढ़ता अंतर घ विकास का वर्तमान स्वरूप

साँवले सपनों की याद

इस हुजूम में आगे–आगे चल रहे हैं, सालिम अली। अपने कंधें पर सैलानियो की तरह अपने अंतहीन सफर को बोझ उठाए । लेकिन यह सफर पिछले तमाम सफरों से भिन्न है। भीड़–भाड़ की जिंदगी और तनाव के माहौल से सालिम अली का यह आखिरी पलायन है। अब तो वेा उस वन–पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं, जो जिंदगी को आखिरी गीत गाने के बाद मौत की गोद में जा बसा हो। कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा । उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर सही विकल्पों का चयन कीजिए.

(१) अंतहीन सफर का आशय है
क बहुत लम्बी यात्राा ख मृत्यु के उपरांत अंतिम यात्रा
ग जंगलों में भटक जाना घ हुजूम में आगे चलना

(२) सालिम अली का यह आखिरी पलायन कैसे था ?
क अपना काम छोड़ रहे थे
ख अपना दफ़्तर छोड़ के भाग रहे थे
ग विदेश जाकर बस रहे थे
घ मौत के आगोश में चले गए ।

(३) सालिम किस वन पक्षी की तरह थे
क जो बंधनों में रह कर गीत गाता है।
ख जो पानी में खेलता है।
ग जो मुक्त प्रकृति में गीत गाता है।
घ जो आकाश में ऊँचा उड़ता है ।

(४) प्रकृति से सालिम अली का संबंध कैसा था ?
क प्रकृति उनके लिए उपयोग की वस्तु थी
ख वे प्रकृति पर विजय पाना चाहते थे
ग वे प्रकृति का दोहन कर सफल होना चाहते थे
घ वे प्रकृति का आत्मीय हिस्सा बन कर रहते थे

(५) 'सपनों के गीत गाना' का तात्पर्य है
क अपना पंसदीदा कार्य करना
ख नींद में गाने गाना

ग गाने में सपनों का वर्णन करना
घ झूठी बाते करना
2 नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गये थे। सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे। जो लोग उनके भ्रमणशील स्वभाव और उनकी यायावरी से परिचित हैं, उन्हें महसूस होता है कि वो आज भी पक्षियों के सुराग में ही निकले हैं, और बस अभी गले में लंबी दूरबीन लटकाए अपने खोजपूर्ण नतीजों के साथ लौट आएगे। जब तक वो नहीं लौटते, क्या उन्हें गया हुआ मान लिया जाए! मेरी आखें नम हैं, सालिम अली, तुम लौटोगे ना!

(१) नैसर्गिक जिंदगी के प्रतिरूप का आशय है
क पक्षियों से प्रेम
ख प्रकृति से गहरा लगाव रखने वाले
ग सबसे मिलजुलकर रहनेवाले
घ भ्रमण प्रेमी

(२) सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे। इस कथन द्वारा लेखक क्या कहना चाहते हैं ।
क वे सदा अपनी अलग दुनिया सजाते रहे।
ख वे समुद्र यात्रा करते रहे ।
ग वे सदा प्रकृति से निकट संबंध बनाये रहे ।
घ उपरोक्त में से कोई नही

(३) भ्रमणशील स्वभाव और यायावरी का आशय किससे है
क तलाशने ख घूमने फिरने
ग यात्रा करने घ उपरोक्त में से कोई नही

(४) सालिम अली किसकी खोज करते रहे
क गौरया की ख दुर्लभ पक्षियों की
ग मोर की घ हाथियों की

(५) इस गद्यांश के पाठ के लेखक हैं
क महादेवी वर्मा ख प्रेमचंद
ग जाकिर हुसैन घ जाबिर हुसैन
उत्तर संकंकेतेत
दो बैलों की कथा
गद्यांश (1) 1 ग 2 ख 3 घ 4 घ 5 ग
गद्यांश (2) 1 क 2 घ 3 घ 4 ख 5 घ
गद्यांश (3) 1 घ 2 ग 3 घ 4 क 5 ख
ल्हासा की आरेरे
गद्यांश (1) 1 घ 2 ग 3 घ 4 क 5 ख
उपभोक्तावाद की संस्कृति
गद्यांश (1) 1 ग 2 ख 3 ख 4 घ 5 क
गद्यांश (2) 1 ख 2 ग 3 क 4 घ 5 ग

गद्यांश (3) 1 घ 2 घ 3 घ 4 ग 5 ग
सावँवँ ले सपनों ं की याद
गद्यांश (1) i ख ii घ iii ग iv घ v क
गद्यांश (2) i क ii ग iii ख iv ख v घ
गद्य पाठ पर आधारित लघुउत्तरीय प्रश्न (2x5 अंकंक)
दो बैलों ं की कथा
1. कांजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी ?
उत्तर – कांजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी इसलिए ली जाती होगी ताकि कैद पशु की वास्तविक संख्या का पता चल सके और पता लगाया जा सके कि उनमें से कोई भाग तो नही गया या मर तो नही गया ।
2. छोटी बच्ची को बैलों ं के प्रति प्रेम क्यों ं उमड़ आया ?
उत्तर – बैलों के समान छोटी बच्ची भी जुल्म का शिकार थी इसलिए उसके मन में उनके लिए दया उमड़ पड़ी ।उसकी सौतेली माता उसके प्रति कठोर बर्ताव करती थी अत: उस कोमल मन की बालिका ने जब गया को हीरा मोती पर अत्याचार करते देखा तो उसका मन पसीज गया ।
3- कहानी में बैलों के माध्यम से कौन–कौन से नीति–विषयक मूल्य उभर कर आए हैं ?
उत्तर –कहानी में बैलों के माध्यम से **कौन-कौन से** नीति–विषयक मूल्य उभर कर आए हैं –
1 विपत्ति के समय हमेशा मित्र की सहायता करना चाहिए ।
2 अपनी आजादी के लिए हमेशा सजग व संघर्षशील रहना चाहिए ।
3 किसी की आजादी नही छीनना चाहिए ।
4 अपने समुदाय के हित के लिए अपने हितों का त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए ।
5 पशु पक्षियों के प्रति दया का बर्ताव करना चाहिए ।
6 स्त्रियों व बच्चों के प्रति सम्मानजनक बर्ताव करना चाहिए ।
4-कहानी में प्रेमचंद ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न कर किस नए अर्थ की ओर संकेत किया है ?
उत्तर – प्रेमचंद ने गधे की सहनशीलता ,सीधेपन, कभी क्रोध न करने, हानि-लाभ सुख-दुख में समान रहने, आदि गुणों के आधार पर उसे बेवकूफ के स्थान पर संत स्वभाव का प्राणी करार दिया है जो बहुत अधिक सीधेपन के कारण सम्मान का पात्र नही समझा जाता ।
5. किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी ?
उत्तर – पहली घटना मटर के खेत की थी जब मोती मटर खाने खेत मे घुसा और इसी बीच खेत के रखवालों ने उसे घेर लिया । पैर कीचड़ में फँस जाने वह भाग न सका और पकड़ लिया गया ।मित्र को मुसीबत में छोड़कर हीरा नही भागा और वापस आ गया ।उसे भी पकड़ लिया गया । दूसरी घटना कांजीहौस की थी जब मोती के प्रयासों से काजीहौस की दीवार टूट गयी और वहाँ कैद पशुओं को आजादी मिल गयी पर हीरा के बंधन न

टूटने के कारण मोती उसे छोड़कर नही गया ।इसतरह दोनों मित्रों ने मुसीबत में सच्ची मित्रता का परिचय दिया ।

6- 'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।' . हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – प्रेमचंद नारी के प्रति सम्मानजनक व्यवहार के पक्षधर थे। वे उनके विरूद्ध हिंसा को अनुचित मानते थे ।हमारे देश में प्राचीनकाल नारी को सम्मानीय माना जाता रहा है इसलिए उनपर जुल्म करना या उन्हे कठोर दण्ड देने के खिलाफ थे ।

7- किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों को कहानी में ं किस तरह व्यक्त किया गया है ? ?

उत्तर – इस कहानी में बताया गया है कि किसानों का अपने पालतु पशुओं से भावनात्मक संबंध होता है ।झूरी अपने बैलों को अपने पुत्रों की भाति स्नेह करता था और उन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था ।बैल भी अपने स्वामी के प्रति पूरी निष्ठा रखते है थे और उसके लिए कड़ा परिश्रम करने सदा तैयार थे ।

8. 'इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगें'.मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर –मोती उग्र व क्रॉतिकारी प्रकृति का बैल था ।कांजीहौस में उसके प्रयास
से वहाँ कैद अन्य पशुओं को आजादी मिल गई किन्तु हीरा के गले में रस्सी पड़ी होने के कारण वे स्वयं आजाद न हो सके ।इतना होने पर भी उसे इस बात का संतोष है कि उसके प्रयत्नो से दूसरे जीवों को आजादी मिल गई ।मोती के इस कथन से उसके एक निस्वार्थ क्रातिकारी स्वभाव का पता चलता है जिसे लिए स्वयं की आजादी से महत्वपूर्ण है अपनी जाति और समुदाय की मुक्ति ।

9- आशय स्पष्ट कीजिए.

क अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों ं में ं **श्रेष्ठता** का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

ख उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शांत होती पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

उत्तर क – मनुष्य स्वयं को सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहता है किन्तु उसके पास वह गुप्त शक्ति नही है कि अन्य प्राणियो की तरह दूसरे प्राणी के मन की बात जान ले ।मनुष्य विचार विनिमय के लिए भाषा या बोली पर आश्रित है।गाय बैलों की भाँति वह मूक भाषा में बातचीत नहीं कर सकता।

उत्तर ख – छोटी बालिका ने जब जुल्म के शिकार हीरा मोती को एक एक रोटी खिलाया तो उनकी भूख शांत नही हुई पर दोनों के हृदय को इस बात की संतुष्टि मिली कि उस घर में कोई तो है जिसे उनकी परवाह है और जिनके मन में उनके लिए स्नेह है ।

ल्हासा की ओरेरे

1 तिब्बत की कौन–कौन–सी बाते लेखक को अच्छी लगीं ?

उत्तर – लेखक को यह बात अच्छी लगी कि तिब्बत में भारत की तरह जाति प्रथा छुआछूत परदा प्रथा आदि बुराई नही थी ।इसलिए किसी के यहाँ आसानी से प्रवेश कर सकते थे और चाय आदि बनवा सकते थे ।

2 तिब्बत में ं सबसे खतरनाक जगह कौन सी है और क्यों?

उत्तर – तिब्बत में सबसे खतरनाक स्थान डाँडे है । सोलह सत्रह हजार फीट ऊँचे स्थान होने कारण दूर तक कोई गाँव नही होता इसलिए डाकुओं का भय बना रहता है ।

3 तिब्बत में ं हथियारों ं का कानून न होने के कारण यात्रियों ं को किसप्रकार का भय रहता है ?

उत्तर –तिब्बत में हथियारो का कानून न होने के कारण लोग पिस्तौल बंदूक को लाठी की तरह लेकर फिरते हैं इसलिए यात्रियों को जान का खतरा बना रहता है ।

4 लेखक लडकोर के मार्ग में ं किस कारण पिछड़ गया ?

उत्तर – लेखक लडकोर के मार्ग में किस कारण पिछड़ गया क्योंकि वह जिस घोड़े की सवारी कर रहा था वह धीमा था और एक स्थान पर वे दूसरे रास्ते चले गये तब उन्हें लौटना पड़ा ।

5 लेखक ने शेकर विहार में ं यजमान के पास सुमति को जाने से रोका परन्तु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों ं नही किया ?

उत्तर –लेखक ने दूसरी बार सुमति को रोकने का प्रयास क्यों नही किया क्योंकि बुद्धवचन के अनुवाद की हस्तलिखित 103 पोथियाँ पढ़ने में व्यस्त हो गये।लेखक एकांत में उन ग्रन्थो को पढ़ना चाहते थे ।

<u>उपभोक्तावाद की संस्कृति</u>

1. लेखक के अनुसार जीवन में ं 'सुख' से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर – लेखक के अनुसार 'सुख' की व्याख्या बदल गई है। उपभोग–भोग ही सुख माना जाने लगा है। जीवन में सुख पाने का मतलब बाजार में प्रचारित वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग करना माना जाने लगा है ।

2- आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है ?

उत्तर – आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित कर रही है ।जैसे हम विज्ञापन में प्रचारित वस्तुओं का अधिक से अधिक प्रयोग करने लगे हैं । हम गुणवत्ता को अनदेखा करके कुड़ा खाद्य खाने लगे हैं ।प्रसाधन सामग्रियों का इस्तेमाल बढ़ गया है ।उपभोक्तावादी समाज के अनुरूप हम फैशनपरस्त बन गये हैं ।

3- लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के उपभोक्ता संस्कृति लिए चुनौती क्यों ंकहा है ?

उत्तर – लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती कहा है क्योंकि हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य–भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं, हम झूठी तुष्टि के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादाएँ टूट रही हैं, नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति–केंद्रकता बढ़ रही है,

स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएँ आसमान को छू रही हैं।

4. आशय स्पष्ट कीजिए.

1 जाने–अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित **होते** जा रहे हैं।

2 प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं;, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों ं न हो।

उत्तर 1 आज के परिवेश में हम सबके चरित्र पर उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है और हम बाजार में उपलब्ध वस्तुओ पर निर्भर करने लगे है। जैसे कुछ वर्ष पहले मोबाइल कुछ अमीरो के उपयोगी मानी जाती थी पर सब मोबाइल के बिना स्वयं को अधूरा महसूस करते है ।

उत्तर 2 – उपभोक्तावादी समाज में झूठी शान की खातिर कुछ लोग मजाक का पात्र बनने लगे है । अमरीका और यूरोप के कुछ देशों में आप मरने के पहले ही अपने अंतिम संस्कार और अनंत विश्राम का प्रबंध भी एक कीमत पर कर लेते है। आपकी कब्र के आसपास सदा हरी घास होगी ।

चाहें तो वहाँ फव्वारे होंगे और मंद मवनि में निरंतर संगीत भी। कल भारत में भी यह संभव हो सकता है। अमरीका में आज जो हो रहा है, कल वह भारत में भी आ सकता है।

6. आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।

उत्तर – वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए न कि उसका विज्ञापन क्योंकि विज्ञापनों में किसी वस्तु को बढ़ा चढाकर पेश किया जाता है । विज्ञापनों में झूठे दावे किए जाते हैं ।

सावँले सपनों की याद

1. किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया?

उत्तर – बचपन के दिनों में, उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली नीलेकंठ की वह गौरैया सारी जिंदगी उन्हें खोज के नए–नए रास्तों की तरफ ले जाती रही। इस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया ।

2. सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्यावरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आँखें ं नम हो गई थीं?

उत्तर – सालिम अली ने उन्हे बताया होगा कि पर्यावरण में आ रहे बदलाव के कारण अनेक पक्षी लुप्त होने के कगार पर है । भविष्य में हम इनमें से अनेक दुर्लभ पक्षियों को देख नही सकेंगे । गॉव की खेती भी इससे प्रभावित होगी। यह सुनकर चौधरी चरण सिंह के ऑखों में पानी आ गया होगा ।

3. लॉरेंस की पत्नी फीडा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरी छत पर बैठैने वाली गोरैया लॉरेंस के बारे में ं ढेर सारी बातें जानती है?

उत्तर – लॉरेंस की पत्नी ने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि लॉरेंस प्रकृति प्रेमी थे और प्रकृति को सजीव मानकर उनसे सीधे जुड़े होंगे । वे अकसर पक्षियों की दुनिया में जाकर उनका अवलोकन करते होंगे ।

4. आशय स्पष्ट कीजिए.

कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा!
उत्तर – इसका आशय यह है कि सालिम अली पक्षियों की दुनिया छोड़कर जा चुके है । उनका निधन हो चुका है इसलिए कोई उन्हे शरीर की गमीऔर धड़कन देकर जावित करना चाहे तो यह असभंव है ।
5 सालिम अली और डी. एच. लॉरेंस में क्या समानता थी ?
उत्तर – सालिम अली पक्षी विज्ञानी थे और डी एच लॉरेंस कवि और उपन्यासकार थे ।वे दोनों प्रकृति प्रेमी थे ।उनका प्रकृति से गहरा लगाव तथा संबंध था ।दोनों प्रकृति की सुरक्षा करके मानव जीवन को बचाना चाहते थे ।दोनों को पक्षियो से लगाव था तथा वे उनको लुप्त होने से बचाना चाहते थे ।

काव्यांश आधारित प्रश्न (5)

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. हिंदू मूआ राम कहि मुसलमान खुदाई।
कहै कबीर सो जीवता, जो दुहु के निकट न जाई।।
(क) कबीर के अनुसार जीवित कौन है ?
उत्तर – कबीर के अनुसार साम्प्रदायिक भेदभाव और कट्टरता से दूर रहने वाला मनुष्य ही जीवित है।
(ख) कबीर ने किनको मरे हुए व्यक्तियों के समान माना है
उत्तर – कबीर ने हिन्दू और मूसलमान के नाम पर कट्टर बने लोगों को मरे हुए के समान माना है।
(ग) कबीर किस प्रकार का मनुष्य चाहते हैं ?
उत्तर – कबीर हिन्दू–मुसलमान के भेदभाव से परे रहने वाला उदार मनुष्य चाहते हैं।
2. मोकों कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में!
ना तो कौने क्रिया–कर्म में, नही योग बैराग में
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पलभर की तलाश में।
कहैं कबीर सुनों भई साधो, सब स्वाँसो की स्वाँस में।।
(क) कवि एवं कविता का नाम लिखिए –
उत्तर – कवि–कबीर, कविता–सबद
(ख) मनुष्य ईश्वर को कहाँ–कहाँ ढूँढता है ?
उत्तर – मंदिर, मस्जिद, तीर्थ, योग एवं धार्मिक कर्मकांडों में।
(ग) कवि ने ईश्वर प्राप्ति के लिए क्या स्थान बताया है ?
उत्तर – अपने अंर्तमन में।
(घ) ''कौने क्रिया कर्म में'' वाक्य में कौन सा अलंकार है ?
उत्तर – अनुप्रास।
(ड.) ''स्वाँसो की स्वाँस'' से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर – हर जगह, हर प्राणी का हृदय।
3. खा–खाकर कुछ पायेगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।
सम खा तभी होगा समभावी,
खुलेगी साँकल बंद द्वार की।

(क) ''खा–खाकर'' से क्या तात्पर्य है ?
उत्तर – भोग, उपभोग में लगे रहना।
(ख) 'समभावी' किसे कहा गया है ?
उत्तर – जो भोग एवं त्याग के बीच मार्ग अपनाता है।
(ग) बंद द्वार की साँकल खुलने से क्या होगा ?
उत्तर – प्रभु–प्रेम प्राप्त होगा। साधक का मन भक्ति में रमेगा।
4. आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम–सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई ?
(क) ''सुषुम–सेतु'' किसे कहा गया है ?
उत्तर – सुषुम्ना नाड़ी की साधना को।
(ख) कवयित्री का दिन कैसे बीत गया ?
उत्तर – हठयोग–साधना में।
(ग) ''जेब टटोलना'' से क्या आशय है ?
उत्तर – अपने जीवन की उपलब्धियों के बारे में विचार करना।
(घ) ''माझी'' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
उत्तर – ईश्वर के लिए।
(ड.) सुषुम–सेतु में कौन–सा अलंकार है ?
उत्तर – अनुप्रास।
5. मनुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरिछत्र पुरंदर धारन।
जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कलिंदी कूल कदंब की डारन।।
(क) रसखान अगले जन्म में कहाँ निवास करना चाहते हैं ?
उत्तर – ब्रज भूमि में।
(ख) रसखान मनुष्य रूप में अगले जन्म में क्या बनना चाहते हैं ?
उत्तर – गाय चराने वाले ग्वाला।
(ग) यह सवैया किस भाषा में रचा गया है ?
उत्तर – ब्रजभाषा।
(घ) ''कालिंदी कूल कदंब की डारन'' में कौन सा अलंकार है ?
उत्तर – अनुप्रास।
(ड.) कवि पक्षी बनकर कहाँ बसेरा करना चाहता है ?
उत्तर – यमुना–तट पर कदंब के पेड़ों की डाल पर।
6. मोरपरवा सिर उपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।।
भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।
(क) गोपी कृष्ण का रूप धारण करने के लिए क्या–क्या करना चाहती हैं ?
उत्तर – सिर पर मोर पंख धारण, गले में गुंज की माला पहनना, पीले वस्त्र धारण, हाथों में लाठी लेकर ग्वालों के संग घूमना चाहती हैं ?
(ख) गोपी होंठों पर मुरली क्यों नहीं रखना चाहती ?
उत्तर – क्योंकि गोपी मुरली के प्रति सौतिया डाह रखती है, कृष्ण

सदा मुरली बजाने में लीन रहते हैं गोपियों पर ध्यान नही देते अतः वह मुरली से ईर्ष्या करती हैं।
(ग) पद्यांश से अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छाँटकर लिखिए।
उत्तर – ''गोधन ग्वारनि संग फिरौगी''।
7. क्या ? – देख न सकती जंजीरों का गहना ?
हथकड़ियाँ क्यों ? यह ब्रिटिश राज का गहना,
कोल्ह का चर्रक चूँ ? – जीवन की तान,
गिट्टी पर अँगुलियों ने लिखे गान!
हूँ मोट खीचता लगा पेट पर जूआ,
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ।
दिन में करूणा क्यों जगे, रूलानेवाली,
इसलिए रात में गजब ढा रही आली ?
(क) कवि ने ब्रिटिश राज का गहना किसे कहा है ?
उत्तर – पैरों की बेड़ियाँ और हाथों की हथकड़ियों कों।
(ख) जेल में कवि को शारीरिक दंड के रूप में कौन–कौन से काम करने पड़ते थे ?
उत्तर – हथौड़े से पत्थर तोड़ना, कोल्हू चलाना, रस्सी बांधकर मोट खींचना आदि।
(ग) ''खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ'' – आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – कवि यातनाएँ सहकर, अंग्रेजों के सामने अपराजेय रहकर उनकी अकड़ को तोड़ता है।
8. क्यों हूक पड़ी ?
वेदना बोझ वाली–सी;
कोकिल बोलो तो!
क्या लूटा ?
मृदुल वैभव की
रखवाली–सी,
कोकिल बोलो तो!
क्या हुई बावली ?
अर्धरात्रि को चीखी,
कोकिल बोलो तो!
किस दावानल की
ज्वालाएँ है दीखी ?
कोकिल बोलो तो!
(क) कवि एवं कविता का नाम लिखो।
उत्तर – कवि – माखनलाल चतुर्वेदी।
कविता – कैदी और कोकिला
(ख) कोयल किस समय चीखी ?
उत्तर – आधी रात के समय।
(ग) कवि ने कोयल की आवाज को 'हूक' क्यों कहा है ?
उत्तर – क्योंकि कोयल की आवाज में दुख और वेदना की अनुभूति थी।
(घ) ''दावानल की ज्वालाएँ'' का क्या आशय है ?
उत्तर – बहुत भारी दुख।

(ड.) ''मृदुल वैभव की रखवाली–सी किसे कहा गया है ?
उत्तर – कोयल को।
9. फैली खेतों में दूर तलक
मखमल की कोमल हरियाली,
लिपटीं जिसमें रवि की किरणें
चाँदी की सी उजली जाली।
तिनकों के हरे–हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भू–तल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील फलक!
(क) कवि ने हरियाली को मखमल के समान कोमल क्यों कहा है ?
उत्तर – हरियाली की कोमलता व मधुरता के कारण।
(ख) हरी घास पर पड़ी ओंस की बूँदों को देखकर कवि क्या कहता है ?
उत्तर – ओंस की बूंदें सूर्य के प्रकाश में हरित रक्त का आभाष देती है।
(ग) हरियाली पर सूर्य की किरणें कैसी लग रही हैं ?
उत्तर – चाँदी की उजली जाली के समान लग रही हैं।
(घ) ''चाँदी की सी उजली जाली'' में कौन सा अलंकार है ?
उत्तर – उपमा।
(ड.) काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'नभ' का पर्यायवाची शब्द लिखिए।
उत्तर – आकाश, गगन, व्योम।
10. रोमांचित सी लगती वसुधा
आई जौ गेहूँ में बाली,
अरहर सनई की सोने की
किंकणियाँ है शोभाशाली!
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली, पीली,
लो, हरित धरा से झाँक रही
नीलम की कलि, तीसी नीली!
(क) वसुधा किस प्रकार रोमांचित सी लग रही है ?
उत्तर – गेहूँ और जौ की बालियों को उगाकर।
(ख) सरसों किस प्रकार अपना प्रभाव उत्पन्न कर रही है ?
उत्तर – अपने पीले रंग एवं तैलीय सुगंधित वातावरण से।
(ग) अरहर और सनई किस प्रकार, शोभाशाली लग रहे हैं ?
उत्तर – अरहर और सनई की फलियों के सुनहरी रंग और बजती हुई फलियाँ, वसुधा की कमर पर घूँघरूदार करधनी के रूप में शोभाशाली लग रही हैं।

काव्य खण्ड पर आधारित लघूत्तरीय प्रश्न (2×5=10)

प्रश्न 1. निम्नलिखित लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए –
साखियाँ एवं सबद (कबीर)
1.कबीर ने संसार को स्वान–रूप क्यों कहा है ?
उत्तर – जैसे हाथी को चलते देखकर कुत्ता अवश्य भौंकता है, वैसे ही किसी को ऊँची साधना में लगे देखकर लोग उसकी निंदा करते हैं। इसलिए संसार को स्वान रूप कहा गया है।
2.कबीर के अनुसार सच्चा संत कौन है ?
उत्तर – सच्चा संत वही है जो सभी बैर–विरोधों से हटकर ईश्वर का

भजन करता है।
3.कबीर ने ईश्वर प्राप्ति का क्या उपाय बताया है?
उत्तर – अपने अंर्तमन में खोजने की प्रेरणा दी है।
4.ज्ञान की आँधी आने पर व्यक्ति के व्यवहार में क्या–क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं?
उत्तर – सारे पाप नष्ट हो जाते हैं, मन का भ्रम दूर हो जाता है। माया,मोह,स्वार्थ,धन,तृष्णा आदि विकार समाप्त हो जाते हैं। और मन में भक्ति और प्रेम की वर्षा होती है जिससे जीवन में आनंद छा जाता है।
5.आंधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भीतौं। आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – ज्ञान रूपी आंधी के पश्चात् भक्ति रूपी जल की वर्षा हुई जिसके प्रेम में हरि के सब भक्त भीग गए।
वाख (ललद्यद)
1. कवयित्री ललद्यद किस रस्सी से कौन–सी नाव खींचना चाहती है?
उत्तर – वह जीवन की कच्चे धागे रूपी रस्सी से प्रभु भक्ति की नाव खींचना चाहती है?
2. ललद्यद के अनुसार परमात्मा–प्राप्ति के मार्ग में कौन–कौन सी बाधाएँ सामने आती हैं?
उत्तर – मनुष्य की नश्वरता, सांसारिक भोग, अहंकार, हठयोग, सांप्रदायिक भेदभाव एवं अज्ञानता।
3. कवयित्री ललद्यद ने परमात्मा प्राप्ति के लिए क्या उपाय बताया है?
उत्तर – परमात्मा प्राप्ति के लिए दिल में हूक उठना आवश्यक है, त्याग एवं भोग में सामंजस्य स्थापित करके अपने आत्मज्ञान द्वारा।
4. कवयित्री ने कच्चे सकोरे किसे कहा है?
उत्तर – जीवन की नश्वरता को।
5. 'ज्ञानी है तो स्वयं को जान' आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – कवयित्री के अनुसार ज्ञानी मनुष्य वही है जिसे आत्मज्ञान है। जो स्वयं को जानता है।
सवैयै (रसखान)
1. गोपी श्रीकृष्ण द्वारा अपनाई गई वस्तुओं को क्यों धारण करना चाहती है?
उत्तर –गोपी श्रीकृष्ण से प्रेम करते हुए उसका सानिध्य चाहती है।
2. रसखान का ब्रजभूमि के प्रति प्रेम किस प्रकार प्रकट हुआ है?
उत्तर –रसखान अगले जन्मों में बार–बार ब्रजभूमि पर ही जन्म लेना चाहते हैं। वे मनुष्य के रूप में ग्वालों के संग रहना, पशु के रूप में नंद बाबा के गायों के साथ, पत्थर के रूप में गोवर्धन पर्वत में रहना, पक्षी के रूप में यमुना किनारे कदम के वृक्ष में बसेरा करना चाहती हैं।
3. आपके विचार से रसखान कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में कृष्ण का सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है?
उत्तर –क्योंकि रसखान को ब्रजभूमि से अगाध प्रेम है। वे प्रत्येक वस्तु से किसी न किसी रूप में समीपता चाहते हैं।

4. गोपी कृष्ण की मूरली को अपने अधरों पर क्यों नहीं रखना चाहती ?
उत्तर – गोपी को कृष्ण की मुरली से सौतिया डाह है, क्योंकि कृष्ण को मुरली अतिप्रिय है। श्रीकृष्ण जब मुरली बजाते हैं तो वे अन्यत्र ध्यान नहीं देते। इसी लिए गोपी मुरली को अपने अधरों पर नहीं रखना चाहती।
5. 'माई री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहैं, न जैहैं, न जैहैं'' – भाव स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – गोपियां कृष्ण की मधुर मुस्कान पर अपना सर्वस्व भुला चुकी हैं, लाख मना करने पर भी वह अपने आपको रोक नहीं पाती। गोपियाँ कृष्ण की मुरली की दीवानी न हो कर कृष्ण की मधुर मुस्कान की दीवानी है।

<u>कैदी और कोकिला (माखनलाल चतुर्वेदी)</u>

1. हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है ?
उत्तर –क्योंकि हथकड़ियाँ स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाना है। जोकि प्रत्येक भारतीय के लिए सौभाग्य की बात है।
2.'मृदुल वैभव की रखवाली–सी, कोकिला बोलो तो' – पक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर –कवि कोयल से पूछ रहा है कि तुम रात में क्यों कूक रही हो ? क्या तुमने अपने देश के वैभव और सम्पन्नता को लुटते देखा है ? क्योंकि कभी तुम इस वैभव की रखवाली किया करती थी पर आज विवश हो।
3. 'कैदी और कोकिल' कविता की जेल में बंद कैदी की दशा कैसी थी ?
उत्तर –जेल में बंद कैदी दयनीय दशा में जी रहे थे। वे ऊँची– ऊँची काली दीवारों में कैद थे। उन्हें कालकोठरी में जंजीरों से बाँधकर रखा जाता था और कठोर परिश्रम कराया जाता था।
4. कवि को कैदी के रूप में जेल में क्या–क्या काम करने पड़ते थे ?
उत्तर – कवि को जेल में कैदी के रूप में कोल्हू का बैल बनना पड़ता था और हथौड़े से पत्थर तोड़नी पड़ती थी।
5. कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों हो रही थी ?
उत्तर – क्योंकि कोयल स्वतंत्र है जबकि कवि बंदी है। कोयल हरियाली का आनंद ले रही है जबकि कवि अंधेरी कोठरी में जीने के लिए विवश है। कोयल का गान की सभी सराहना करते हैं। जबकि कवि के लिए रोना भी गुनाह है।
6. किस शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है और क्यों ?
उत्तर – ब्रिटिश शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है क्योंकि ब्रिटिश शासकों ने बेकसूर भारतीयों पर घोर अत्याचार किए। उन्हें तरह–तरह की यातनाएँ दी।
7. कोकिल को 'काली' की संज्ञा क्यों दी गयी है ?
उत्तर क्योंकि काली युद्धोन्माद की देवी है। कोकिल भी रंग में काली है, उसका मधुर स्वर आजादी का प्रतीक है। वह अपनी अंतरात्मा से आवाज़ कर रही है। मु क्ति का संघर्ष छेड़ने की प्रेरणा देने के कारण ही कवि ने कोकिल को काली की संज्ञा दी है।

ग्रामश्री (**सुमित्रा**नंदन पंत)

प्रश्न 1. कवि ने गाँव को 'हरता जन मन' क्यों कहा है?
उत्तर क्योंकि गाँव की शोभा अनुपम है खेतों में दूर–दूर तक हरियाली फैली हुई है, सूरज की धूप चमक रही है। तरह–तरह के फूलों पर रंगीन तितलियाँ मँडरा रही हैं। और मिठे फल पैदा होने लगे हैं। सब्जियाँ खूब फल–फूल रहे हैं गंगा के किनारे तरबूजों की खेती फैलने लगी है। पक्षी आनंद–विहार कर रहे हैं। ये सभी मनमोहक दृश्यों के कारण गाँव को हरता जन मन कहा गया है।

प्रश्न 2. भाव स्पष्ट कीजिए –
बालू के साँपों से अंकित
गंगा की सतरंगी रेती
उत्तर गंगा तट की रेत बल–खाते साँप की तरह लहरदार है और वह विविध रंगों वाली है।

प्रश्न 3. 'हिल हरित रूधिर है रहा झलक' का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर घास के हरे–हरे तिनकों पर सूर्य के प्रकाश की **उज्ज्वलता** से लगता है मानो उनकी नसों में हरा खून दौड़ रहा है।

प्रश्न 4. गाँव को 'मरकत डिब्बे सा खुला' क्यों कहा गया है?
उत्तर गाँव में चारो ओर मखमली हरियाली और रंगों की लाली छाई हुई है। विविध फसलें लहलहा रही है। वातावरणर मनमोहक सुगंधों से भरपूर है। रंगीन तितलियाँ उड़ रही है। सूरज की मीठी–मीठी धूप रत्नों के समान जगमगा रही है। इसलिए इस गाँव की तुलना मरकत डिब्बे से की गयी है।

प्रश्न 5. सुरखाब और मगरौठी गंगा के तट पर किस प्रकार आनंद लेते हैं?
उत्तर –सुरखाब पक्षी गंगा के बहते जल पर तैर रहा है और मगरौठी किनारे की ठण्डक पर सोई हुई है। इस प्रकार वे आनंद मग्न हैं

प्रश्न 6. शिशिर ऋतु में कौन–कौन से फल और सब्जियाँ उगते हैं?
उत्तर – शिशिर ऋतु में आड़ू, अनार, अमरूद, बेर आदि फल पक जाते हैं तथा आमों की मंजरियाँ उग आती हैं। सब्जियों में कटहल, आलू, गोभी, बैंगन, मूली, आँवला, पालक, घनिया, टमाटर, मिर्च आदि फल–फूल जाते हैं।

पूरक पुस्तक ः कृतिका भाग 1

लघूत्तरीय **1×3=6**

दीर्घ उत्तरीय **1×4=4**

इस जल प्रलय में ः फणीश्वरनाथ रेणु

इस पाठ में रेणुजी ने बाढ़ की विभीषिका को प्रत्यक्ष रूप से देखा और अनुभव किया है ।लेखक उस क्षेत्र का रहने वाला है **जहाँ** विभिन्न नदियों के बाढ़ पीड़ित शरण लेते हैं।यह पाठ मूल रूप से आपदा प्रबंधन से जुड़ा हुआ है। ज़िन्दगी है तो आपदाएँ भी हैं। प्रबंधन में आत्मनिर्भरता आवश्यक है।जो स्वयम् का प्रबंधन कर लेता है वही दूसरों की भी मदद कर सकता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 बाढ़ की खबर सुनकर लोग किस तरह की तैयारी में जुट गए?

अथवा

अपने इलाके में बाढ़ आने की आशंका होने पर लेखक ने क्या क्या प्रबंध किया?

उत्तर– लोगों ने जैसे ही बाढ़ की खबर सुनी दैनिक जीवन की आवश्यक **वस्तुएँ** जैसे आलू,. मोमबत्ती,दियासलाइ, पीने का पानी और आवश्यक **दवाएँ** एकत्र करने में जुट गए।जिससे पानी से घिरने के बाद इन वस्तुओं का अभाव न झेलना पड़े।लेखक ने भी उपर्युक्त सामग्री अपने घर में रख ली थी।

प्रश्न 2 लेखक की बाढ़ से घिरे द्वीप पर टहलने की इच्छा अधूरी क्यों रह गई?

उत्तर – लेखक बाढ़ से घिरे द्वीप पर टहल कर अपने पैरों को आराम देना चाहता था। लेकिन उस द्वीप पर **साँप-बिच्छू**, चींटी, चींटे,लोमड़ी, सियार आदि के अलावा अन्य जीवों ने पहले से आश्रय ले रखा था इसी कारण लेखक की इच्छा अधूरी रह गई ।

प्रश्न 3 मुसहरी जाति के लोग जिन्दादिली के प्रमाण होते हैं। सिद्ध कीजिए।

उत्तर मुसहरी एक आदिवासी जाति है। बाढ़ से घिरे भूर्खे प्यासे मुसहरी **मछलियाँ** चूहे खाने को विवश थे लेकिन ढोल की थाप पर अभिनय करते हुए आनन्दित थे एवं खिलखिला रहे थे।विषम परिस्थितियों में भी **हँसने** खिलखिलाने से सिद्ध होता हे कि मुसहरी जाति के लोग जिन्दादिली के प्रमाण हैं।

प्रश्न 4- नौजवान के पानी में उतरते ही कुत्ता भी पानी में कूद गया।दोनों ने ऐसा क्यों किया?

उत्तर - नौजवान के पानी में उतरते ही कुत्ता भी पानी में कूद गया। क्यों कि दोनों भावनात्मकरूप से एक दूसरे से जुड़े थे।इसीलिए अपने कुत्ते को नाव से उतार देने की बात सुनकर नौजवान भी नाव से कूद गया।और मालिक को पानी में कूदता देख कुत्ता भी पानी में कूद गया।

प्रश्न 5 बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में कौन- कौन सी बीमारी फैलने की आशंका रहती है?

उत्तर- बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में पकाही घाव, हैजा, आंत्रशोथ,मलेरिया जैसी बीमारी फैलने की आशंका रहती है।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1 लेखक ने एक ओर बाढ़ -पीड़ितों की मदद की है तो दूसरी तरफ इस विषय पर बहुत कुछ लिखा भी है- स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखक परती क्षेत्र का होने के कारण अपने गॉव के अन्य लोगों की तरह तैरना नहीं जानता था। इसके बाद भी दस साल की उम्र से ही वह ब्वॉय -स्काउट, स्वयं सेवक ,राजनीतिक कार्यकर्त्ता अथवा रिलीफवर्कर की हैसियत से बाढ़ -पीड़ित क्षेत्र में कार्य करता रहा । इसके साथ ही हाई स्कूल में बाढ़ पर लेख लिखकर प्रथम स्थान प्राप्त किया।लेखक ने 'धर्म युग ' में 'कथादशक' के अंतर्गत बाढ़ की पुरानी कहानी को नए पाठ के साथ प्रस्तुत किया। जय गंगा मैया, डायन कोसी, हड्डियों का पुल आदि रिपोर्ताज के साथ उनके द्वारा लिखे अनेक उपन्यासों में बाढ़ की विनाशलीला के चित्र अंकित हैं।

प्रश्न2 सवेरे साढ़े पाँच बज़े पानी आने की खबर सुनकर लेखक की क्या प्रतिकिया हुई ?उसने क्या दृश्य देखा।

उत्तर- सवेरे साढ़े पाँच बज़े पानी आने की खबर सुनकर लेखक आँखें मलता छत पर गया।पानी से घिरे लोग चीख -पुकार रहे हैं।चारों ओर शोर ही शोर है। पानी का बहाव तेज है। घर के पीछे तक पानी आ गया है। लगातार तेज बढ़ते पानी को कुछ लोग गंगा का बता रहे हैं, कुछ सोन का।बढ़ते हुए पानी में मकान की दीवारं पेड़ों के तने डूबते जा रहे हैं।उसके देखते -देखते गोलपार्क डूब गया।चाय वाले की झोपड़ी बह गई।इन दृश्यों को देखकर लेखक सोचता है कि उसके पास यदि मूवी कैमरा या टेपरिकार्डर होता तो फोटो खींचता तथा आवाज़ और शोर शराबे को टेप कर लेता।

मेरे संग की औरतें ः मृदुला गर्ग

एक आत्मसंस्मरणात्मक गद्य है। इसमें लेखिका ने अपने परिवार की औरतों —नानी, माँ तथा अपनी चार बहनों के बारे में बताया है। उनके घरेलू ,आर्थिक, सामाजिक तथा शैक्षिक स्थिति से परिचित कराया है।सामाजिक रूढ़ियों में जकड़ा व्यक्ति भी वैचारिक स्तर पर आज़ाद हो सकता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

श्न 1 लेखिका की परदादी ने ऐसी कौन -सी बात कह दी, जिसे सुन सभी हैरान रह गए?

उत्तर- लेखिका की परदादी को पौत्र की नहीं पौत्री की चाहत थी। उन्होंने भगवान से पतोहू की पहली संतान लड़की माँगी। उस समय यह दुआ सभी को चौकाने वाली लगी।समाज सदा से लड़के की कामना करता रहा है, पर परदादी ने वह दुआ माँगी जिसे समाज बोझ समझता रहा था।उनकी मन्नत को जानकर सभी हैरान रह गए क्योंकि उन्होंने यह बात सभी को बता दी थी।

प्रश्न 2 लेखिका की नानी अपने अन्तिम समय में मुँहजोर क्यों हो गई थीं?

उत्तर -लेखिका की नानी अपनी बेटी का विवाह एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी से करवाना चाहती थीं। उन्हें लगा कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी बेटी का विवाह किसी सरकारी नौकर से कर दिया जाएगा। अतः अपने अन्तिम समय में समय की कमी तथा बेटी के विवाह की चिंता के कारण वे मुँहजोर हो गईं थी।

प्रश्न 3 अचला कौन थी तथा उसने क्या- क्या किया?

उत्तर-अचला लेखिका की सबसे छोटी बहन थी । उसने पिता का कहना मानकर अर्थ शास्त्र में एम ए किया फिर पत्रकारिता का कोर्स किया। विवाह के बाद गृहस्थी में मन नहीं लगने के कारण लेखिका बन गई।

प्रश्न 4 लेखिका की माँ की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- लेखिका की माँ परम्परावादी नहीं थीं। वह निष्पक्ष, ईमानदार तथा सत्यवादी होने के साथ- साथ एक अच्छी परामर्शदाता भी थीं। यही कारण था कि उन्हें घर वाले सम्मान देते एवं बाहरवाले दोस्त बन जाते थे।

प्रश्न 5 लेखिका की बहन चित्रा की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- चित्रा स्वयं नहीं पढ़ती थी पर दूसरों को पढ़ाने में रूचि लेती थी, इसीसे परीक्षा में उसके कम अंक आते थे। वह खुले विचारों की लड़की थी। उसने अपने लिए स्वयं लड़का पसंद किया और उसी से विवाह किया।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर</u>

श्न 1 लेखिका की दादी ने चोर का जीवन किस प्रकार बदल दिया?

उत्तर -एक बार हवेली के सारे पुरूष किसी बारात में चले गए और औरतें रतजगा कर रही थीं। घर की पुरखिन दादी माँ एक कमरे में सोई थीं । मौके का फायदा उठाकर एक चोर घर में घुस गया। दादी की आँख खुली उन्होंने पूछा 'कौन' ?चोर ने जवाब दिया 'जी मैं।' दादी ने कुएँ से पानी लाने का आदेश दिया। चोर घबराया हुआ पानी लाने चला गया। पानी लेकर लौटते समय उसे पहरेदार ने पकड़ लिया। दादी ने लोटे का आधा पानी स्वयं पीया और आधा चोर को पिलाकर कहा- "आज से हम दोनो माँ बेटे हुए, चाहे तो तू चोरी कर,चाहे खेती।" चोर ने चोरी का धन्धा छोड़ खेती अपना ली ।इस प्रकार उसका जीवन बदल गया।

प्रश्न 2 लेखिका ने डालमिया नगर में नारी- चेतना जगाने का प्रयास किस प्रकार किया?

उत्तर- लेखिका शादी के बाद बिहार के पिछड़े कस्बे डालमीया नगर में रहने गईं। यहाँ का समाज इतना पुरातन पंथी था कि मर्द औरतें चाहे पति- पत्नी क्यों न हों, एक साथ

बैठ कर सिनेमा नहीं देख सकते थे। अभिनय की शौकीन लेखिका ने साल भर के प्रयास से वहाँ के स्त्री- पुरूषों को एक साथ नाटक में काम करने के लिए तैयार कर लिया। वे महिलाएँ जो अपने पति के साथ फिल्म तक नहीं देखने जाती थीं, अब पराए मर्द के साथ नाटक में काम करने के लिए राजी हो गईं। लेखिका के साथ मिलकर अनेक नाटकों का मंचन किया और बाढ़ पीड़ितों के लिए धन एकत्र किया। इस प्रकार लेखिका ने डालमिया नगर में नारी- चेतना जगाने का भरपूर प्रयास किया।

खण्ड 'घ'

व्याकरण

पत्र . लेखन

पत्र लेखन एक महत्वपूर्ण कला है आज के अति व्यस्त युग **में** इसका महत्व और अधिक बढ़ गया है आज मानव के सरोकार बहुत अधिक बढ़ गए है उसे प्रति दिन कितने ही व्यक्तियों संबंधियों का **कार्यालयों** से संपर्क साधना **पड़ता** है हर स्थान पर वह व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं हो सकता ! उसे पत्र का सहारा लेना **पड़ता** है**।** अत: **विद्यार्थियों में** पत्र **लेखन की कला का विकास आवश्यक है।**

पत्र के प्रकार- पत्र अनेक प्रकार के होते **हैं** उन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता **है-**

1 औपचारिक पत्र- इसे कार्यालयी पत्र भी कहते **हैं** ये पत्र हम किसी अधिकारी **विशेष** को लिखते **हैं**

2 अनौपचारिक पत्र. इसे व्यक्तिगत पत्र भी कहा जाता है ये पत्र हम किसी अपने परिचितों को लिखते **हैं।**

आप चेन्न्नई के रामचंद्र है आपका **अनुक्रमांक** 837 तथा कक्षा दसवीं बी है गत **वर्ष** आपका मासिक **शुल्क** कम था इस बार भी प्रधानाचार्य **को** मासिक **शुल्क** कम **करवाने** के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए

सेवा में,

प्रधानाचार्य

केन्द्रीय विद्यालय
आवडी
चेन्नई

विषय - मासिक शुल्क कम कराने हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा दसवीं बी **का** छात्र **हूँ** गत **वर्ष** मेरे पिता का देहांत हो गया था जिसके के कारण पिछले **वर्ष** मेरा मासिक शुल्क कम कर दिया गया था आपसे निवेदन है कि इस **वर्ष** भी मेरा शुल्क कम कर **दिया जाए तो** मैं अपनी **पढ़ाई** जारी रख **सकूँ** ।

श्रीमान्जी मैंने नवीं कक्षा में 85ः अंक लेकर विद्यालय के अग्रणी दस छात्रों में स्थान प्राप्त किया हैं । मैं आपको **विश्वास** दिलाता **हूँ** कि इस वर्ष भी लगन और परिश्रम से स्थान बनाए **रखूँगा** ।

धन्यवाद !

प्रार्थी

रामचंद्र
कक्षा दसवीं बी

अनुक्रमांक 837
दिनांक 22 मार्च 2012

३.आपके नगर के विद्युत अधिकारी को बिजली की कटौती के कारण **पढ़ाई** में आने वाली कठिनाइयों की चर्चा करते हुए इसमें सुधार के लिए पत्र लिखिए**।**

प्रेषक
केवल कृष्ण
22 माडल टाउन
डिब्रूगढ

दिनांक 13

सेवा **में,**

विद्युत अधिकारी

डिब्रूगढ

विषय - बिजली की कटौती **कम कराने हेतु।**

महोदय

मैं आपका ध्यान बिजली संकट की ओर दिलाना चाहता **हूँ** । पिछले **छ:** मास से नगर की विद्युत आपूर्ति खंडित हो गई हैं । जब चाहे बिजली चली जाती है और **और कई** घंटों **तक बिजली नहीं** आती हैं ।

महोदय मैं एक विद्यार्थी **हूँ** । मेरे जैसे अन्य विद्यार्थी भी बिजली गुल होने कारण बेहद तनाव में हैं। यदि ऐसा चलता रहा हमारा कैरियर चौपाट हो जाएगा । कृपया आप कुछ कीजिए जिससे हमें
नियमित बिजली मिलती रहे ।

भवदीय

केवल कृष्ण

4.तुम 454 **प्रे**मनगर जोधपुर की निवा**सी** सुमेधा हो। तुम्हे तुम्हारी सखी रंजना **ने** पत्र द्वारा बधाई भेजी है। जिस**में** तुम्हे और अधिक आगे ब**ढ**ने की प्रेरणा दी गई । अपनी सखी को इस बधाई पत्र के प्रत्युत्तर में एक कृतज्ञता पत्र लिखिए ।

सुमेधा

454 **प्रे**मनगर

जोधपुर

10 मार्च 2012

प्रिय रंजना

सस्नेह स्मरण !

तुम्हारा बधाई पत्र मिला । पढकर अपार प्रसन्नता मिली । यूँ तो आजकल मैं बहुत खुश हूँ क्योकि ढेर सारे बधाई संदेश मिल रहे है विद्यालय से मित्रो अध्यापकों से परिचितों से अपरिचितों से । सभी मेरी पीठ थपथपा रहें हैं। परंतु तुम्हारे बधाई पत्र को पाकर मैं सचमुच बहुत प्रसन्न हूँ। क्योकि तुम्हारे भावों को मैं बहुत महत्व देती हूँ । तुम्हारी प्ररेणा से ही मैंने इस दिशा में इतनी उन्नति की है । तुमने सफलता में ही नहीं असफलता के क्षणों में भी मुझे उत्साह दिया है । मेरी इस सफलता में तुम्हारे उत्साह का बल न होता तो शायद आज मैं इस शिखर पर न पहुँच सकती।
तुम्हारे बधाई पत्र के लिए कैसें कृतज्ञता व्यक्त करूँ । शब्दों में सामर्थ्य नहीं वचन हो रहे बौने ।
मम्मी पापा को सादर नमस्कार ।
तुम्हारी
सुमेधा

5.आपके छोटे भाई ने एक आवसीय विद्यालय मे प्रवेश लिया है उसे मित्रो के चुनाव छोटे प्रवेश चुनाव में सावधानी बरतने के लिए समझाते हुए एक पत्र लिखिए।
नीरज
456 सेक्टर 14

करनाल

दिनाकं 14 मई 2012
प्रिय **सोमेश**
स्नेह!
आशा है छात्रावास में बडे आनंद सें होगे ं तुमने पिछले पत्र में लिखा भी था कि तुम्हारा मन छात्रावास में लग गया है। तुम्हें जाते ही अच्छे मित्र मिल गए हैं। मैं तुम्हारी व्यवहार कुशलता को जानता हूँ । इसलिए कभी कभी डर भी लगता है कि कहीं तुम जरूरत से ज्यादा मित्र न बना लो

।बाहर जाकर मित्रो ंकी जरूरत तो होती है परंतु वे ही मित्र कभी कभी हमारी प्रगति में **बाधक** भी बन जाते **हैं।**

प्रिय **सोमेश** यह **हमेशा** याद रखना कि तुम छात्रावास **में पढ़ने** के उद्देश्य से गए हो इसलिए जो मित्र **पढ़ाई** में साधक बने उसे ही अपना मित्र बनाना । ऐसा मित्र **हमेशा पढ़ने** लिखने की **बातें** करेगा**।**

मुझे तुम पर पूरा **विश्वास** है कि तुमने अपने आप ही ऐसे मित्रों का चयन किया होगा । अगर **कहीं** कोई भूल चूक हो गई हो तो **कुशलता** से उसे यथाशीघ्र सँवार लेना ।

तुम्हारा भाई

नीरज

निबंध लेखन

नीचे कुछ **निबंध** लेखन के कथन उनसे निर्मित विचार बिंदु दिए जा रहें हैं**।**

इन बिन्दुओं पर अधारित निबंध लिखिए-

1 देश प्रेम

देश प्रेम त्यागमयी भावना है। देश **प्रेमी** देश के लिए समर्पित होता हैं।

विचार बिदु . देश प्रेम **में** त्याग ; एक पवित्र भावना ; देश प्रेमी का जीवन " देश के लिए ; देश प्रेमियों की गौरवशाली परंपरा ;" देश प्रेम सर्वोच्च भावना

2 बाल श्रमिक

विचार बिदु बाल श्रमिक कौन ;श्रमिक के रूप में उनकी दिनचर्या ;छोटे बडे व्यवसायियों द्वारा **भाषण** ; **प्रशासन** एवं समाजसेवी संस्थाओं के प्रयास

3 प्रदूषण एक समस्या

विचार **बिन्दु** पर्यावरण का अर्थ ; प्रदूषण के कारण ; प्रदूषण का निवारण

4सांप्रदायिता एक अभिशाप

विचार **बिन्दु-** सांप्रदायिता का अर्थ ; **भारत** में सांप्रदायिता ;सांप्रदायिक **घटनाएँ** ;समधान।

5 बेरोजगारी समस्या और समाधान

विचार **बिन्दु** - बेरोजगारी की समस्या और अभिप्राय; बेरोजगारी के कारण ; समाधान ।

6 **भ्रष्टाचार**

विचार **बिन्दु** - **भ्रष्टाचार** का बढता स्वरूप ; **भ्रष्टाचार** एक नियमित व्यवस्था ;**भ्रष्टाचार** क्यों और कैसे ?

7 कम्प्यूटर का महत्व

विचार **बिन्दु**- कम्प्यूटर आज की **आवश्यकता** ;कम्प्यूटर का बढता प्रयोग ;दैनिक जरूरत

8 **दूरदर्शन वरदान या अभिशाप**

विचार **बिन्दु**- विवाद का **विषय** ; ज्ञान वृद्धि ; पाठ्यक्रम संबंधित कार्यक्रम ;**हानियाँ**

9 विज्ञापन और हमारा जीवन

विचार **बिन्दु** - विज्ञापन का **उद्देश्य** ;विज्ञापन के प्रकार ;निर्णय को प्रभावित करने में विज्ञापनों की भूमिका ;विज्ञापनों का सामाजिक दायित्व ।

10 मेरे जीवन का लक्ष्य

विचार **बिन्दु** -लक्ष्य का **निश्चय** ; लक्ष्यपूर्ण जीवन के लाभ ; लक्ष्यपूर्ति का प्रयास।

(11) **गर्माती पृथ्वी –विनाश का आरम्भ** : धरती पर ही जीवन संभव ,पृथ्वी के समक्ष चुनौतियाँ ,पृथ्वी का निरंतर बढ़ता तापमान, कारण –प्रदूषण और ग्रीन हाउस गैसें, बढ़ते तापमान के दुष्प्रभाव, संभावित उपाय और हमारी भूमिका,उपसंहार|

(12) **किसी पर्वतीय स्थल की यात्रा का वर्णन** : यात्रा पर जाने के कार्यक्रम का सुझाव, स्थान का चयन, जाने की तैयारी, रास्ते में दिखाई देने वाले दृश्य, दर्शनीय स्थलों का भ्रमण, अनुभव, यात्रा से वापसी, उपसंहार

(13) **'बीता समय फिर लौटता नहीं** ' : समय का महत्व, समय का सदुपयोग अनिवार्य, समय गँवाने से हानियाँ, उपसंहार |

कक्षा-नवीं विषय-हिंदी संकलित परीक्षा **१**

अधिकतम अंक 90 **समय: ३ घंटे**

प्रश्न-I. निम्नांकित गद्यांश को पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए ः— 1× 5 =5

विश्व का वर्तमान उन्नत रूप मानव श्रम की ही कहानी कह रहा है।गगनचुंबी अट्टालिकाएँ, लंबी-चौड़ी सड़कें, बड़े-बड़े विशाल नगर, आकाश में उड़ते वायुयान तथा मानव जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने में योगदान करने वाले ज्ञान-विज्ञान के अनन्त रूप— ये सभी मनुष्य के श्रम का जयघोष करते हैं। स्पष्ट है कि मनुष्य और उसका शरीर विधाता की अनुपम रचना है जो निश्चय ही महान उद्देश्यों की समपूर्ति के लिए दिया गया है।इस दुर्लभ तन को यदि हम आलस्य, प्रमाद अथवा घटिया कामों में गँवा देते हैं तो उसे विधाता के प्रति अन्याय करते हैं।

1. वर्तमान विश्व का उन्नत रूप किसका परिणाम है?

क) मानव श्रम का ख) धन का
ग) विकासशील देशों के विकास का घ) विकसित देशों की समृद्धि का

2. मानव जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने में किसका योगदान है?

क) विकसित देशों का। ख)ज्ञान-विज्ञान के अनन्त रूपों का
ग)भगवान का घ) किसी का नहीं

3. मनुष्य श्रम का जयघोय करने वालों में सम्मिलित हैं

क) विशाल नगर ख)उड़ते वायुयान
ग) गगनचुंबी अट्टालिकाएँ घ) उपर्युक्त सभी

4. हम विधाता के प्रति कब अन्याय करते हैं?

क) महान उद्देश्यों की समपूर्ति के लिए तन को लगाते हैं ख)ईश्वर से दूर हो जाते हैं
ग) हम आलस्य,प्रमाद अथवा घटिया कामों में तन को गँवा देते हैं घ) धार्मिक कट्टर बन जाते हैं

5. गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

क) मानव श्रम ख़)अविश्वास
ग)विधाता के प्रति अन्याय घ)उपर्युक्त तीनों।

प्रशन-२. निम्नांकित गद्यांश को पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए ः— 1× 5 =5

एक समय था जब पानी सब जगह मिल जाता था। इसलिए इसे कोई महत्व नहीं दिया जाता था। लेकिन तेज़ी से बढ़ती हुई जनसंख्या और जीवन - शैली में आए परिवर्तन के कारण जल अब दुर्लभ हो गया है। इसी दुर्लभता के कारण जल का आर्थिक मूल्य बहुत बढ़ गया है। अब तक जल की प्रमुख माँग फसलों की सिंचाई के लिए होती थी। लेकिन अब उद्योगों और घरेलू उपयोग के लिए भी जल की बहुत आवश्यकता है। इसलिए जल अब एक बहुमूल्य संसाधन

बन गया है। नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में पीने के पानी की माँग बिलकुल अलग-अलग तरह की होती है। आइए, सबसे पहले नगरीय क्षेत्रों में जल की समस्या का अध्ययन करें। नगरीय क्षेत्रों में सामान्यतः जल का एक ही स्रोत होता है और उसी से सभी की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।नगरीय क्षेत्रों में जल, झीलों या कृत्रिम जलाशयों या नदियों या नदी के तल में गहरे खोदे गए कूओं या नलकूपों से लाकर इकट्ठा किया जाता है। कभी-कभी जल के लिए इन सभी क्षेत्रों का उपयोग किया जाता है। इन क्षेत्रों को लेकर पहले उसमें क्लोरीन जैसे रसायन मिलाकर उसे स्वच्छ किया जाता है। इसके बाद वह पीने के लिए सुरक्षित बन जाता है।

1.पहले सब स्थानों पर सुलभ जल, अब दुर्लभ हो गया क्योंकि **1**

(क)जल की बरबादी अधिक होने लगी (ख)जीवन शैली में परिवर्तन आया।

(ग)वर्षा कम होने लगी। (घ)जल स्रोत कम हो गए।

2.दुर्लभता के कारण जल का कौन-सा मूल्य बढ़ गया ? **1**

(क)सामाजिक (ख)जीवनदायी

(ग)आर्थिक (घ)धार्मिक

3. जल पीने के लिए कब सुरक्षित बन जाता है ? **1**

(क)क्लोरीन मिलाने से (ख)नाइट्रोजन मिलाने से

(ग)कार्बन डाइआक्साइड मिलाने से (घ)आक्सीजन मिलाने से

4.'सुरक्षित' में 'सु' उपसर्ग है, नीचे दिए गए विकल्पों में से छाँटकर लिखिए कि किस में 'सु' उपसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है- **1**

(क)सुकन्या (ख)सुशील

(ग)सुंदर (घ)सुयश

5.उपरोक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है **- 1**

(क)कृषि का महत्त्व (ख)क्लोरिन जल की समस्या

(ग)बहुमूल्य संसाधन फसल (घ) जल का महत्व

प्रश्न-३. निम्नांकित पद्यांश को पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए ः— **1× 5 =5**

कहती है सारी दुनिया जिसे किस्मत,
नाम है उसका हकीकत में मेहनत।
जो रचते हैं, खुद अपनी किस्मत, वे कहे जते हैं साहसी,
जो करते हैं, ईश्वर से शिकायत, वे कहे जते हैं आलसी,
जो रुक गया, मिट गया उसका नामो-निशाँ,
जो चलता रहा, अपनी मंजिल वो पा गया।
खुशी के हकदार हैं वही, जिन्होंने दुख को सहा,
छोड़ के दामन फूलों का, काँटों की राह को चुना।
निराशा का अंधकार मिटाकर, आशा के दीप जलाओ,
छोड़ भाग्य की दुहाई, अपनी किस्मत स्वयं बनाओ।

1.वास्तव में किस्मत किसे कहते है?

क) सेहत को ख) रहमत को
ग) मेहनत को घ) सहारे को

2.जो अपनी किस्मत रचते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

क) साहसी ख) आलसी
ग) मेहनती घ) सन्यासी

3.उसका क्या हाल होता है, जो रास्ते में रुक जाता है?

क)वह सफल हो जाता है ख) अपनी किस्मत बनाता है
ग)वह आराम कर पाता है घ)उसका नामो-निशाँ मिट जाता है

4. खुशी का सच्चा हकदार कौन है?

क) सुख लेने वाला ख) दुख लेने वाला
ग) सुख देने वाला घ) दुख देने वाला

5. अपनी किस्मत किस प्रकार बनाई जा सकती है?

क) भाग्य की दुहाई छोड़ने पर ख) कर्म की दुहाई छोड़ने पर
ग) धर्म की दुहाई छोड़ने पर घ) मर्म की दुहाई छोड़ने पर

प्रश्न-४. निम्नांकित पद्यांश को पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए

ः— **1× 5 =5**

विदा करो माँ, जाते हैं हम विजय-ध्वजा फहराने आज,
देश स्वतंत्र बनाने जाते, हम निज शीश चढ़ाने आज
वीर प्रसू तू रोती क्यों है, सत्य अहिंसा मेरे साथ।
मलिन वेष यह, आँसू कैसे, कंपित होता है क्यों गात?
तेरे चरणों की रज लेकर जाते हैं करने रण-रंग
फिर भय किसका है ए जननी, निश दिन रहे हमारे संग
अहिंसात्मक सत्याग्रह की बाजेगी रणभेरी आज
तब रिपुदल सब यही कहेगा, तुम लो देश सँभालो आज

1.कवि कहाँ जाने के लिए माँ से आज्ञा माँग रहे है?

(क) सत्याग्रह करने के लिए (ख) विजय ध्वजा फहराने के लिए
(ग) सुखों को प्राप्त करने के लिए (घ) विदेश में नौकरी करने के लिए

2.अपने बेटे को विदा करते समय माँ की क्या दशा हुई?

(क) भयभीत हो उठी (ख)हँसमुख चेहरा
(ग) मलिन वेष और आँखों में आँसू (घ) चुभन और खुशी

3. कवि किस कारण निर्भय होकर जा रहे हैं?

(क) सपनों का साथ होने के कारण (ख)धैर्यशाली होने के कारण

(ग) सेना बल होने के कारण (घ)माँ का आशीर्वाद साथ होने के कारण

4.भारतीय सैनिकों का धैर्य देखकर रिपुदल क्या कहेगा?

(क) अपना देश सँभालो (ख) तुम लोग कभी नहीं जीत पाओगे

(ग) हम तुम्हें नहीं छोडेंगें (घ) इनमें से कोई नहीं

5. 'रिपुदल' शब्द का अर्थ क्या है?

(क) सैनिकों का समूह (ख) मित्रों का समूह

(ग) दुश्मनों का समूह (घ) इनमें से कोई नहीं

खण्ड ख

प्र05 **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए-1**X4=4

(क) "प्रकृति" शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग व मूल शब्द लिखिए।

(ख) बदसूरत' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग व मूल शब्द लिखिए।

(ग) 'वाला' प्रत्यय से बनने वाले दो शब्द लिखिए।

(घ) 'इक" प्रत्यय से बनने वाले दो शब्द लिखिए।

प्रश्न-6. अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद बताइए-1X4=4

(क) नव वर्ष आपके लिए मंगलमय हो।

(ख) सुरेश क्या कर रहा है?

(ग) रमेश ने खाना नहीं खाया।

(घ) परिश्रम करोगे तो सफल होंगे।

प्रश्न-7.निम्नलिखित काव्यांशों में निहित अलंकारों के नाम लिखिए-1X4=4

(क) 'कालिंदी कूल कदम की डारन।

(ख) अधरान धरी अधरा न धरौंगी।

(ग) मखमल के झूल पड़े, हाथी सा टीला।

(घ) 'मानों झूम रहे हैं तरू भी मंद पवन के झोकों से'

प्रश्न-8.निम्नलिखित सामासिक शब्दों का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए-1X3=3

(क) तिरंगा

(ख) यथाशक्ति

(ग) लम्बोदर

खंड-ग

प्रश्न-9. निम्नांकित पद्यांश को पढकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए ः—

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।

सुषुम–सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई ?

(१) कवयित्री का दिन कैसे बीत गया ? २

(२) ''जेब टटोलना'' से क्या आशय है ? २

(३) सुषुम–सेतु में कौन–सा अलंकार है ? १

अथवा

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल की कोमल हरियाली,
लिपटीं जिसमें रवि की किरणें
चाँदी की सी उजली जाली।
तिनकों के हरे–हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भू–तल पर झुका हुआ
नभ का चिर निर्मल नील फलक!

(क) कवि ने हरियाली को मखमल के समान कोमल क्यों कहा है ? २

(ग) हरियाली पर सूर्य की किरणें कैसी लग रही हैं ? २

(ड.) काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'नभ' का पर्यायवाची शब्द लिखिए। 1

प्रश्न-10.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप मेम दीजिए- **2**X5=10

१. कबीर के अनुसार सच्चा संत कौन है ?

२. गोपी श्रीकृष्ण द्वारा अपनाई गई वस्तुओं को क्यों धारण करना चाहती है ?

३. गोपी कृष्ण की मूरली को अपने अधरों पर क्यों नहीं रखना चाहती ?

४. किस शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है और क्यों ?

५. गाँव को 'मरकत डिब्बे सा खुला' क्यों कहा गया है ?

प्रश्न-११. निम्नांकित गद्यांश को पढकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए ः **2**X5=**5**

झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती। दोनों पछाइ जाति के थे.देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते–रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने–सामने या आस–पास बैठे हुए एक–दूसरे से मूक–भाषा में विचार–विनिमय करते थे। एक, दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक–दूसरे को चाटकर और सूघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी–कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे.विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल–धप्पा होने लगता है।

1 झूरी **के दोनों बैलों के क्या नाम थे** ?

2 **दोनों बैल किस भाषा में विचार विनिमय करते थे?**

3 हीरा और मोती की वह कौन सी विशेषता है जिससे मनुष्य वंचित **है?**

4 बैल अपना प्रेम कैसे प्रकट करते हैं?

5 'विग्रह' **शब्द** का **क्या** अर्थ है?

अथवा

धीरे–धीरे सब कुछ बदल रहा है। एक नयी जीवन–शैली अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। उसके साथ आ रहा है एक नया जीवन–दर्शन.उपभोक्तावाद का दर्शन। उत्पादन बढ़ाने पर जोर है चारों ओर। यह उत्पादन आपके लिए है आपके भोग के लिए है, आपके सुख के लिए है। 'सुख' की व्याख्या बदल गई है। उपभोग–भोग ही सुख है। एक सूक्ष्म बदलाव आया है नई स्थिति में। उत्पाद तो आपके लिए हैं, पर आप यह भूल जाते हैं कि जाने–अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहें हैं ।

1 आज किसका प्रभाव बढ़ रहा है? 1
2 उपभोक्तावाद में किस पर बल दिया जा रहा है? 1
3 सुख की वर्तमान परिभाषा क्या है? 1
4 उपभोक्तावादी जीवन–शैली के कारण क्या बदल रहा है? 1
5 इस गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम है। 1

प्रश्न-१२. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-2X5=10

१ तिब्बत की कौन–कौन–सी बाते लेखक को अच्छी लगीं ?

२.लेखक लङकोर के मार्ग में ं किस कारण पिछड़ गया ?

३.लेखक के अनुसार जीवन में ं 'सुख' से क्या अभिप्राय है ?

४. . किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया ?

५. लॉरेंस की पत्नी फीडा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरी छत पर बैठैने वाली गोरैया लॉरेंस के बारे में ं ढेर सारी बातें जानती है ?

प्रश्न-१३. आपने इलाके में बाढ़ आने की आशंका होने पर आप क्या क्या प्रबंध करेंगे?

५

अथवा

लेखिका की दादी ने चोर का जीवन किस प्रकार बदल दिया?

खण्ड घ

प्रश्न-१४.दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर निबंध लिखिए — **१०**

क) खेल और हमारा स्वास्थ्य

विचार बिन्दु-

खेलों का महत्व, जीवन कौशल की शिक्षा, खेल और व्यायाम, खेलों की सार्थकता, उपसंहार

ख)वन और पर्यावरण

विचार बिन्दु-

प्रकृति की अनुपम देन, प्रकृति और मानव का अटूट संबंध, पर्यावरण संबंधी समस्याएँ , उपसंहार

ग)दूरदर्शन मनोरंजन का साधन

विचार बिन्दु-

ज्ञान वर्धन का माध्यम , एकाकीपन का साथी , तन–मन के लिए हानिकारक , संतुलित उपयोग , **उपसंहार**

प्रश्न-१५ छात्रावास में रहनेवाले छोटे भाई को एक पत्र लिखिए जिसमें योग और प्राणायाम का महत्त्व बताया गया हो और नियमित रूप से इनका अभ्यास करने का सुझाव भी दिया गया हो । **५**

अथवा

आपके शहर में सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों में मिलावट का धंधा बढ़ता ही जा रहा है। अपने राज्य के खाद्यमंत्री को पत्र लिखकर इस समस्या के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।

प्रश्न-१६.आपके विद्यालय में भ्रष्टाचार उन्मूलन पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस पर एक प्रतिवेदन लिखिए। ५

अथवा

आपके विद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा समारोह आयोजित किया गया। इस पर एक प्रतिवेदन लिखिए।

।।।।।।।।।।।।। ।।।।।।।।।।।।

विषय. हिन्दी
कक्षा – 9
समय १½ घण्टे
पूर्णांक – 40
प्रश्न 1 .निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए– 5
डाँड़े तिब्बत में सबसे खतरे की जगहें हैं। सोलह–सत्रह हज़ार फीट की ऊँचाई होने के कारण उनके दोनों तरफ़ मीलों तक कोई गाँव–गिराँव नहीं होते। नदियों के मोड़ और पहाड़ों के कोनों के कारण बहुत दूर तक आदमी को देखा नहीं जा सकता। डाकुओं के लिए यही सबसे अच्छी जगह है। तिब्बत में गाँव में आकर खून हो जाए, तब तो खूनी को सज़ा भी मिल सकती है, लेकिन इन निर्जन स्थानों में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफ़िया–विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहाँ गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता। डकैत पहिले आदमी को मार डालते हैं, उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं।
1 डाँड़े तिब्बत में सबसे खतरनाक जगहें क्यों हैं? 1
क यह सोलह–सत्रह हज़ार पफीट की ऊँचाई पर है।
ख यहाँ आस–पास मीलों तक कोई गाँव नहीं है।
ग डाकुओं के लिए यह सुरक्षित जगह है।
घ उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं।
2 डाकुओं के लिए डाँड़े सबसे अच्छी जगह क्यों हैं? 1
क पुलिस उनसे डरती है।
ख बहुत से यात्री लूटने के लिए मिल जाते हैं।
ग लूट और हत्या का कोई गवाह नहीं मिल पाता।
घ सुनसान जगह है।
3 यहाँ खून होने पर खूनी को सजा क्यों नहीं मिल पाती? 1
क क्योंकि वहाँ जमींदारी प्रथा है।
ख क्योंकि वहाँ कोई न्यायालय नहीं है।
ग खूनी से सब डरते हैं।
घ क्योंकि खून करने वाले के खिलापफ कोई गवाह नहीं होता।
4 डाँड़े की आवासीय स्थिति कैसी है? 1
क यहाँ दूर–दूर तक कोई गाँव नहीं है।
ख यहाँ गाँव बहुत पास–पास हैं।
ग यहाँ गाँव की आबादी कम है।
घ यहाँ गाँव की सघन आबादी है।
5 'निर्जन' शब्द में उपसर्ग है– 1
क नि।
ख निर्।
ग नीर।
घ निज।
प्रश्न 2 कांजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी? 2
प्रश्न 3 किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?4
प्रश्न 4 आशय स्पष्ट कीजिए ।
अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। 3
प्रश्न 5 रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए तथा उपवाक्य छाँटकर उसके भी भेद लिखिए 3
1 दीवार का गिरना था कि अधमरे–से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे।
2 सहसा एक दढ़ियल आदमी, जिसकी आँखे लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर, आया।
3 हीरा ने कहा –गया के घर से नाहक भागे।
प्रश्न 6 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए 5
मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।

ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया–कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।
क मनुष्य ईश्वर को कहाँ–कहाँ ढूँढ़ता फिरता है? 2
ख कबीर ने ईश्वर–प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है? 3
अथवा
रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।
जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
जी में उठती रह–रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।
क 'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है? 2
ख कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं? 2
ग कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है? 1
प्रश्न 7 कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है? 3
प्रश्न 8 तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्व दिया है? 3
प्रश्न 9 बाढ़ की खबर सुनकर लोग किस तरह की तैयारी करने लगे? 3
प्रश्न 10 बाढ़ की सही जानकारी लेने और बाढ़ का रूप देखने के लिए लेखक क्यों उत्सुक था? 3
प्रश्न 11 मृत्यु का तरल दूत' किसे कहा गया है और क्यों? 2
प्रश्न 12 निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 1×4=4
क 'परोपकार' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग व मूल शब्द लिखिए। 1
ख 'अप' उपसर्ग से दो शब्द बनाइए। 1
ग 'सामाजिक' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय व मूल शब्द लिखिए। 1
घ 'वान' प्रत्यय से दो शब्द बनाइए। 1

द्वितीय सत्र अक्टूबर से मार्च

खण्ड 'क'

अपठित गद्यांश **व पद्यांश** –प्रथम सत्र से अवलोकन करें

खण्ड 'ख'

उपसर्ग, प्रत्यय, समास,अर्थ के आधार पर वाक्य भेद,अलंकार,पत्र

लेखन, निबंध लेखन– प्रथम सत्र से अवलोकन करें

प्रश्न अभ्यास

खण्ड 'ग'

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

नाना साहब की पुत्री देवी मैना को
भस्म कर दिया गया

1 कानपुर में भीषण हत्याकांड करने के बाद **अंग्रेजों** का सैनिक दल बिठूर की ओर गया। बिठूर में नाना साहब का राजमहल लूट लिया गया पर उसमें बहुत थोड़ी सम्पत्ति अंगरेजों के हाथ लगी। इसके बाद अंगरेजों ने तोप के गोलों से नाना साहब का महल भस्म कर देने का निश्चय किया। सैनिक दल ने जब वहाँ तोपें लगायीं, उस समय महल के बरामदे में एक अत्यन्त सुन्दर बालिका आकर खड़ी हो गयी। उसे देख कर अंगरेज सेनापति को बड़ा आश्चर्य हुआः क्योंकि महल लूटने के समय वह बालिका वहाँ कहीं दिखाई न दी थी।

1 **अंग्रेजों** ने भीषण हत्याकांड कहाँ किया

क बिठूर ख कानपुर

ग दिल्ली घ झांसी

2 नाना साहब का राजमहल कहाँ था

क बिठूर ख कानपुर

ग सूरत घ झांसी

3 अंगरेजों ने नाना साहब के महल का **क्या** कर**ने का** निश्चय किया

क जब्त करना ख जला डालना

ग तोपों से नष्ट करना घ दान में देना

4 अंगरेज सेनापति का क्या नाम था

क हे ख क्लाइव ग कैनिंग घ अउटरम

5 राजमहल में कौन सा समास है

क द्वन्द्व ख तत्पुरूष ग अव्ययीभाव घ द्विगु

2 सन 57 के सितम्बर मास में अर्द्धरात्रि के समय चाँदनी में एक बालिका स्वच्छ उज्ज्वल वस्त्र पहने हुए नानासाहब के भग्नावशिष्ट प्रासाद के ढेर पर बैठी रो रही थी। पास ही जनरल अउटरम की सेना भी ठहरी थी। कुछ सैनिक रात्रि के समय रोने की आवाज सुनकर वहाँ गये। बालिका केवल रो रही थी। सैनिकों के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं देती थी। इसके बाद कराल रूपधारी जनरल अउटरम भी वहाँ पहुँच गया। वह उसे तुरन्त पहिचानकर बोला. ओह! यह नाना की लड़की मैना है! प्र वह बालिका किसी ओर न देखती थी और न अपने चारों ओर सैनिकों को देखकर जरा भी नही डरी। जनरल अउटरम ने आगे बढ़कर कहा.अंगरेज सरकार की आज्ञा से मैंने तुम्हें गिरफ़्तार किया।

1 नानासाहब के भग्नावशिष्ट प्रासाद के ढेर पर बैठी कौन रो रही थी।

क मैना ख मेरी ग लक्ष्मी घ बालिका

2 भग्नावशिष्ट प्रासाद का आशय है ?

क सुंदर महल ख सुंदर बगीचा

ग टूटा फूटा महल घ टूटा फूटा घर

3 कराल रूपधारी कौन था ?

क हे

ख क्लाइव

ग कैनिंग

घ अउटरम
4 कराल रूपधारी का आशय है ?
क डरावने रूप में
ख **सुन्दर** रूप में
ग दयालु रूप में
घ करूण रूप में
5 मैना को किसने पहचाना
क सैनिकों ने
ख अउटरम ने
ग सबने
घ किसी ने नही

प्रेमचंद के फटे जूते

1 मैं चेहरे की तरफ देखता हूँ। क्या तुम्हें मालूम है, मेरे साहित्यिक पुरखे कि तुम्हारा जूता फट गया है और अँगुली बाहर दिख रही है? क्या तुम्हें इसका जरा भी अहसास नहीं है? जरा लज्जा, संकोच या झेंप नहीं है? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि धोती को थोड़ा नीचे खींच लेने से अँगुली ढक सकती है? मगर फिर भी तुम्हारे चेहरे पर बड़ी बेपरवाही, बड़ा विश्वास है! फोटोग्राफर ने जब 'रेडी–प्लीज' कहा होगा, तब परंपरा के अनुसार तुमने मुसकान लाने की कोशिश की होगी, दर्द के गहरे कुए के तल में कहीं पड़ी मुसकान को धीरे–धीरे खींचकर ऊपर निकाल रहे होंगे कि बीच में ही 'क्लिक' करके फोटोग्राफर ने 'थैंक यू' कह दिया होगा। विचित्र है यह अधूरी मुसकान। यह मुसकान नहीं, इसमें उपहास है, व्यंग्य है!

1 फोटो में पकसका जूता फटा था
क लेखक का
ख कवि का
ग प्रेमचंद का
घ हरिशंकर परसाई का
2 साहित्यिक पुरखे किसे संबोधित किया गया है
क हरिशंकर परसाई को
ख प्रेमचंद को
ग निराला को
घ उपरोक्त सभी को
3 प्रेमचंद द्वारा फोटो खिचाते समय फटे जूते का ध्यान न रखना क्या साबित करता है
क वे दिखावा करते थे ।
ख वे बेपरवाह थे ।
ग वे सादगीप्रिय थे ।
घ वे लोकप्रिय थे
4 प्रेमचंद की अधूरी मुस्कान में क्या छिपा है ?
क दिखावा
ख बेपरवाही

ग व्यंग्य
घ खुशी का भाव
5 इस गद्यांश में किसपर व्यंग्य है ?
क पुराने लेखकों पर
ख सभी लेखकों पर
ग प्रेमचंद पर
घ दिखावे की प्रवृति पर
2 टोपी आठ आने में मिल जाती है और जूते उस जमाने में भी पाँच रुपये से कम में क्या मिलते होंगे। जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं। तुम भी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे। यह विडंबना मुझे इतनी तीव्रता से पहले कभी नहीं चुभी, जितनी आज चुभ रही है, जब मैं तुम्हारा फटा जूता देख रहा हूँ। तुम महान कथाकार, उपन्यास–सम्राट, युग–प्रवर्तक, जाने क्या–क्या कहलाते थे, मगर फोटो में भी तुम्हारा जूता फटा हुआ है! मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है। यों ऊपर से अच्छा दिखता है। अँगुली बाहर नहीं निकलती, पर अँगूठे के नीचे तला फट गया है। अँगूठा जमीन से घिसता है और पैनी मिट्टी पर कभी रगड़ खाकर लहूलुहान भी हो जाता है। पूरा तला गिर जाएगा, पूरा पंजा छिल जाएगा, मगर अँगुली बाहर नहीं दिखेगी। तुम्हारी अँगुली दिखती है, पर पाँव सुरक्षित है। मेरी अँगुली ढँकी है, पर पंजा नीचे घिस रहा है। तुम परदे का महत्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं!
1 जूता हमेशा टोपी से क्यों कीमती रहा है ?
क बढ़ती महंगाई
ख वर्तमान कीमत
ग दिखावे की प्रवृति लगातार बढती जा रही है ।
घ बढ़ता टैक्स
2 जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए का आशय है ?
क अधिक मूल्य होने से जूता न खरीद पाना ।
ख जूते की अपेक्षा टोपी को अधिक महत्व देना ।
ग आडंबर की अपेक्षा आत्मसम्मान को अधिक महत्व देना ।
घ टोपी पहनने में अधिक रूचि दिखाना ।
3 प्रेमचंद क्या–क्या कहलाते थे ?
क उपन्यास–सम्राट
ख युग–प्रवर्तक
ग महान कथाकार
घ उपरोक्त सभी
4 लेखक का जूता कैसा था ?
क दाया
ख थोड़ा फटा
ग अँगुली से फटा
घ तले से फटा
5 तुम परदे का महत्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं!

कहकर लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है ?
क संवज्ञा चत
ख **नई पीढ़ी पर**
ग राजनेताओ पर
घ उपरोक्त सब पर

मेरे बचपन के दिन

1 बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र–सा आकर्षण होता है। कभी–कभी लगता है, जैसे सपने में सब देखा होगा। परिस्थितियाँ बहुत बदल जाती हैं। अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा–पूजा की। हमारी कुल–देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

1 इस गद्यांश के लेखक/लेखिका का नाम है
क सुभद्रा कुमारी चौहान
ख हजारीप्रसाद द्विवेदी
ग महादेवी वर्मा
घ माखनलाल चतुर्वेदी

2 बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र–सा आकर्षण होता है का आशय है ?
क हम अपना बचपन कभी नही भूलते ।
ख हमें बचपन की बातें अकसर याद आती है ।
ग हमें अपना बचपन सबसे प्रिय है ।
घ उपरोक्त में से कोई नही ।

3 यह गद्यांश किस विधा से संबंधित है ?
क कहानी
ख निबंध
ग डायरी
घ संस्मरण

4 परमधाम भेजने का आशय है ?
क घर भेजना
ख तीर्थयात्रा में भेजना
ग मार डालना
घ पत्र भेजना

5 लेखिका के घर में किस भाषा का प्रयोग नही होता था ?
क उर्दू
ख फारसी
ग अंग्रेजी
घ हिन्दी

2 उस समय यह देखा मैंने कि सांप्रदायिकता नहीं थी। जो अवध की लड़कियाँ थीं,वे आपस में अवधी बोलती थीं बुंदेलखंड की आती थीं, वे

बुंदेली में बोलती थीं। कोई अंतर नहीं आता था और हम पढ़ते हिंदी थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी, परंतु आपस में हम अपनी भाषा में ही बोलती थीं। यह बहुत बड़ी बात थी। हम एक मेस में खाते थे, एक प्रार्थना में खड़े होते थे कोई विवाद नहीं होता था।

1 तत्कालीन भारत में क्या नही था \

क जातिवाद

ख साम्प्रदायिकता

ग भाषावाद

घ ख ए ग

2 छात्रावास की लड़कियाँ अपने प्रांतवासी लड़कियों से आपस में कौन सी भाषा बोलती थी \

क **अवधी**

ख बुंढेली

ग प्रांतीय बोली

घ हिन्दी

3 लेखिका और उनकी सहपाठिनें किस भाषा में पढ़ती थी \

क अवधी

ख उर्दू

ग हिन्दी

घ ख ए ग

4 इस अवतरण में क्या नही कहा गया है्

क लेखिका और उनकी सहपाठिनें एक मेस में खाते थे

ख लेखिका और उनकी सहपाठिनें ,क प्रार्थना में खड़े होते थे

ग लेखिका और उनकी सहपाठिनें हिन्दी में बातें करती थी ।

घ लेखिका और उनकी सहपाठिनें में कोई विवाद नहीं होता था।

5 यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है \

क एक कुत्ता और एक मैना

ख मेरे बचपन के दिन

घ प्रेमचंद के फटे जूते

घ ल्हासा की ओर

एक कुत्ता और एक मैना

1 इस वाक्यहीन प्राणिलोक में सिर्फ यही एक जीव अच्छा–बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका है, उस आनंद को देख सका है, जिसे प्राण दिया जा सकता है, जिसमें अहैतुक प्रेम ढाल दिया जा सकता है, जिसकी चेतना असीम चैतन्य लोक में राह दिखा सकती है। जब मैं इस मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन देखता हूँ, जिसमें वह अपनी दीनता बताता रहता है, तब मैं यह सोच ही नहीं पाता कि उसने अपने सहज बोध से मानव स्वरूप में कौन सा मूल्य आविष्कार किया है, इसकी भाषाहीन दृष्टि की करुण व्याकुलता जो कुछ समझती है, उसे समझा नहीं पाती और मुझे इस सृष्टि में मनुष्य का सच्चा परिचय समझा देती है।' इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन

प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव–सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

1 कौन सा जीव अच्छा–बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका है

क गाय

ख कुत्ता

ग मैना

घ ख व ग

2 अहैतुक प्रेम का आशय है ?

क सांसारिक प्रेम

ख शारीरिक प्रेम

ग सहज प्रेम

घ निष्काम प्रेम

3 मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन कौन करता है

क रवीन्द्रनाथ टैगोर

ख लेखक

ग कुत्ता

घ मैना

4 यह गद्यांश किस प्रकार की रचना है

क निबंध

ख कहानी

ग उपन्यास अंश

घ संस्मरणात्मक निबंध

5 **इस पाठ तथा लेखक का नाम है-**

क **रवीन्द्रनाथ टैगोर** ,एक कुत्ता और एक मैना

ख हजारीप्रसाद द्विवेदी] एक कुत्ता और एक मैना

ग महादेवी वर्मा]मेरे बचपन के दिन

घ जाबिर हुसैन]साँवले सपनों की याद

2 एक दूसरी बार मैं सवेरे गुरुदेव के पास उपस्थित था। उस समय एक लगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, देखते हो, यह यूथभ्रष्ट है। रोज फुदकती है, ठीक यहीं आकर। मुझे इसकी चाल में एक करुण–भाव दिखाई देता है।, गुरुदेव ने अगर कह न दिया होता तो मुझे उसका करुण–भाव एकदम नहीं दीखता। मेरा अनुमान था कि मैना करुण भाव दिखानेवाला पक्षी है ही नहीं। वह दूसरों पर अनुकंपा ही दिखाया करती है।

1 गुरुदेव के पास कौन उपस्थित था।

क **लेखक**

ख रवीन्द्रनाथ टैगोर

ग जाबिर हुसैन

घ उनके शिष्य

2 मैना कैसी थी

क सुन्दर
ख लगड़ी
ग पूर्ण स्वस्थ
घ उपरोक्त में से कोई नही ।
3 गुरुदेव को मैना की चाल में कैं भाव दिखाई ?
क सहज भाव
ख घमंडी
ग करूण भाव
घ चंचलता
4 लेखक के अनुसार मैना कैसी थी ?
क सब पर दया दिखाने वाली
ख घमंडी
ग करूण भाव की
घ चंचल स्वभाव की
5 यूथभ्रष्ट का आशय है ?
क चंचल
ख बुरी स्वभाव की
ग झुंड से निकला
घ चंचल स्वभाव की
नाना साहब की पुत्री देवी मैना को
भस्म कर दिया गया
गद्यांश (1) 1 ख 2 क 3 ग 4 घ 5 ख
गद्यांश (2) 1 क 2 ग 3 घ 4 क 5 ख
प्रेमचंद के फटे जूते
गद्यांश (1) 1 ग 2 ख 3 ग 4 ग 5 घ
गद्यांश (2) 1 ग 2 ग 3 घ 4 घ 5 ख
मेरे बचपन के दिन
गद्यांश (1) 1 ग 2 ख 3 घ 4 ग 5 घ
गद्यांश (2) 1 घ 2 ग 3 घ 4 ग 5 ख
एक कुत्ता और एक मैना
गद्यांश (1) 1 ख 2 घ 3 ग 4 घ 5 क
गद्यांश (2) 1 क 2 ख 3 ग 4 क 5 ग

गद्य पाठों पर आधारित लघुत्तरीय प्रश्न

<u>नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया</u>

1. बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को कौन–कौन से तर्क देकर महल की रक्षा के लिए प्रेरित किया ?

उत्तर – बालिका मैना ने सेनापति 'हे' को निम्नलिखित तर्क देकर महल की रक्षा के लिए प्रेरित किया .

1 यह मकान गिराने में आपका क्या उद्देश्य है ?
2 आपके विरुद्ध जिन्होंने शस्त्र उठाये थे, वे दोषी हैं पर इस जड़ पदार्थ मकान ने आपका क्या अपराध किया है ?
3 यह स्थान मुझे बहुत प्रिय है ।

2. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती थी पर अंग्रेज उसे नष्ट करना चाहते थे। क्यों ?
उत्तर - मैना को वह महल प्रिय था क्योंकि वह उसका निवास स्थान था जबकि अंग्रेज उसे नष्ट करना चाहते थे क्योंकि वह 1857 के विद्रोहियों का नामों निशान मिटाकर भविष्य में अंग्रेज शासन को सुरक्षित करना चाहते थे ।
3. सर टामस 'हे' के मैना पर दया–भाव के क्या कारण थे ? ?
उत्तर . सर टामस 'हे' के मैना पर दया–भाव के निम्नलिखित कारण थे .
1 वह एक दयालु और उदार हृदय के व्यक्ति थे ।
2 जब उन्हे पता चला कि मैना उसकी दिवंगत पुत्री की सखी है तो उसे मैना के प्रति सहानुभूति हो गई ।
3 वे बचपन से मैना के प्रति बेटी के समान प्रेम करते थे ।
4- मैना की अंतिम इच्छा थी कि वह उस प्रासाद के ढेर पर **बैठ** कर जी भरकर रो ले लेकिन पाषाण **हृ**दय वाले जनरल ने किस भय से उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी ?
उत्तर . जनरल अउटरम को इस बात का भय था कि यदि उन्होने मैना के प्रति उदारता दिखाई तो लंदन की सरकार उसपर कड़ी कारवाई करेगी ।इंगलैंड की सरकार और जनता के बदला लेने भावना के कारण वह मैना की सहायता नहीं कर सका ।
5. 'टाइम्स' पत्र ने 6 सितंबर को सितंबंबर लिखा था . 'बड़े दुख्ख का विषय है
कि भारत सरकार आज तक उस दुदुर्दांात नाना साहब को नहीं पकड़ सकी'। इस वाक्य में ं 'भारत सरकार' से क्या आशय है ? ?
उत्तर . इसका आशय लंदन स्थित ब्रिटिश सरकार है जो ईस्ट इण्डिया कंपनी के माध्यम से देश पर शासन कर रही थी ।
प्रेमेमचंदंद के फटे जूतूते
1.प्रेमचंद के फटे जूते **पाठ** के आधार पर प्रेमचंद के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए ?
उत्तर . प्रेमचंद के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ है .
1 वे सादगी प्रिय थे ।
2 समाज की कुरीतियों प रूढ़ियों का विरोध करते थे ।
3 ऊपरी दिखावा करना उन्हे पसंद नहीं था ।
4 आदर्शवादी और रा)ांतवादी थे ।
3. पंक्तियों ं में ं निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए.
क जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।
ख तुम परदे का महत्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं।
ग जिसे तुमुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं;, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो ?
उत्तर क .जूता यहाँ आडंबर का प्रतीक है तो टोपी आत्मसम्मान का।यहाँ

आत्मसम्मान के स्थान पर आडंबर को अधिक महत्व देने की मानसिकता पर चोट की गई है ।
उत्तर ख . यहाँ आज की पीढ़ी की दिखावे की मनोवृति पर व्यंग्य है जो वास्तविकता के स्थान पर ऊपरी दिखावे को ज्यादा पसंद करती है ।
उत्तर ग . प्रेमचंद सदैव सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करते रहे । उन्हे पैरों से ठोकर लगाते रहे इसलिए उनके जूते फट गये ।उन्होने अपने सि)ांतो से कभी समझौता नहीं किया ।
5- प्रेमचंद के फटे जूते पाठ में ं मूलतः किस पर व्यंग्य है \
उत्तर . इस पाठ में मूलतः वर्तमान पीढ़ी पर कशासा है जो दिखावा और ढोंग पर अवलम्बित है ।जो आडंबर से लड़ना और आदर्शो पर अडिग रहना नही चाहता है।वह वास्तविकता से मुँह फेरकर दिखावा करते है और उनमें सच को स्वीकारने का साहस है न रूढ़ियों से टकराने का दम ।
मेरे बचपन के दिन में
1- महादेवी वर्मा के जन्म के समय लड़कियों ं की दशा कैसी थी ?
उत्तर . तत्कालीन भारत में स्त्रियों की दशा अच्छी न थी ।स्वयं लेखिका के परिवार में पिछली कई पीढ़ी से कन्या को जन्म लेते ही मार डाला जाता था ।उन्हे लड़कों की तरह शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नही दिया जाता था ।उन्हे परदे में रहना पड़ता था ।
2- लेखिका उर्दू–फारसी **क्यों** नहीं सीख पाई ?
उत्तर . महादेवी वर्मा को बचपन में पढ़ाने के मौलवी रखा गया पर उनकी उसमें रूचि न थी । जब मौलवी साहब आए तो वह डरकर चारपाई के नीचे छिप गई ।
3-लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं ं का उल्लेख किया है ?
उत्तर . लेखिका के घर में हिंदी का कोई वातावरण नहीं था। उनकी माता जबलपुर से आई तब वे अपने साथ हिंदी लाई। वे पूजा–पाठ बहुत करती थीं। पहले–पहल उन्होंने लेखिका को 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया।बचपन में माँ लिखती थीं, पद भी गाती थीं। मीरा के पद विशेष रूप से गाती थीं। सवेरे 'जागिए कृपानिधान पंछी बन बोले' यही सुना जाता था। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा का कोई पद गाती थीं।इसप्रकार वे धार्मिक मनोवृति की महिला थी ।
4- जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में ं स्वप्न जैसा क्यों कहा है ?
उत्तर- लेखिका का परिवार जहाँ रहता था वहाँ जवारा के नवाब रहते थे। उनकी नवाबी छिन गई थी। वे एक बंगले में रहते थे। उसी कंपाउंड में लेखिका का परिवार रहता था । लेखिका को बेगम साहिबा कहती थीं. 'हमको ताई कहो!' अंव लोग उनको 'ताई साहिबा' कहते थे। उनके बच्चे महादेवी की माँ को चची जान कहते थे। लेखिका का जन्मदिन वहाँ मनाए जाते थे। उनके जन्मदिन लेखिका के यहाँ मनाए जाते थे। उनका एक लड़का था। वे उसे राखी बाँधने के लिए कहती थीं। मुहर्रम में हरे

कपड़े उनके लिए भी बनते थे। लेखिका के छोटे भाई का मनमोहन नाम बेगम ने ही दिया था । आज साम्प्रदायिकता के बढ़ने से हिन्दु मुस्लिम भाई चारे का यह उदाहरण दुर्लभ हो गया है ।अब यह एक सपने जैसा लगता है ।

<u>एक कुत्ता और एक मैना</u>

1. गुरुदेव ने शांतिनिकेंतन को छोड़ कहीं और रहने का मन क्यों बनाया ?

उत्तर . गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ने शांतिनिकेतन छोड़कर कहीं और रहने का मन इसलिए बनाया क्योंकि उनका स्वास्थ्य अच्छा न था । वे स्वास्थ्य लाभ लेने के लिए श्रीनिकेतन चले गये ।

2. मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते। पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर . इस पाठ में एक कुत्ता और एक मैना के माध्यम से बताया गया कि मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते। जब गुरूदेव श्री निकेतन में थे तो उनका पालतु कुत्ता उन्हे ढूँढता चला आया ।प्रतिदिन प्रातःकाल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर गुरूदेव के आसन के पास तब तक बैठा रहता है, जब तक अपने हाथों के स्पर्श से इसका संग नहीं स्वीकार करते। जब गुरुदेव का चिताभस्मकोलकाता से आश्रम में लाया गया, उस समय भी न जाने किस सहज बोध के बल पर वह कुत्ता आश्रम के द्वार तक आया और चिताभस्म के साथ अन्यान्य आश्रमवासियों के साथ शांत गंभीर भाव से उतरायण तक गया।इसी प्रकार मैना भी करूणा की मूर्ति है। इन उदाहरण से साबित होता है कि मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते।

3 गुरुदेव द्वारा मैना को गुरुदेव मैना लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक कब समझ पाया ?

उत्तर . गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक तब समझ पाया जब गुरूदेव ने उन्हे मैना की करूण छवि से अवगत कराया ।जब उन्होने मैना के करूण रूप को पहचाना तभी वे गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक कब समझ पाये ।

4.आशय स्पष्ट कीजिए.

इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव–सत्य को देखा हैं,, जो मनुष्य, मनुष्य के अदंर भी नहीं देख पाता।

उत्तर . कवि गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से कुत्ते जैसे भाषाहीन प्राणी के भीतर उस विशाल मानव–सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता। ईश्वर के प्रेमय संसार में प्रत्येक प्राणी में निहित प्रेम की अनुभूति को पहचानना उनके जैसे
कवि से ही संभंव था ।

काव्यांशों पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़ कर दिए गए संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. देख आया चंद्र गहना।
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का
सज कर खड़ा है।

प्रश्न (क) 'चंद्र गहना' क्या है? वह कहाँ बैठकर प्राकृतिक दृश्य देख रहा है?
(ख) कवि चने के पौधे को किस रूप में देखता है?
(ग) खेत की मेड़ किसे कहा गया है?
(घ) 'ठिगना' से क्या आशय है?
(ड.) चने ने किस चीज़ का मुरैठा पहना हुआ है?

उत्तर (क) चंद्र गहना एक गाँव का नाम है। कवि उस गाँव को देखकर लौटते हुए खेत की मेड़ पर बैठ कर ये प्राकृतिक दृश्य देख रहा है।
(ख) कवि ने चने को सजे–धजे दूल्हे के रूप में देखा है।
(ग) खेत के बीच से जाने के लिए बनाया गया उठा हुआ रास्ता।
(घ) 'ठिगना' से आशय है – छोटे–छोटे पौधे।
(ड.) चने के पौधे पर गुलाबी फूल ऐसा लग रहा मानो किसी दूल्हे ने रंगी पगड़ी पहनी हो।

2. चुप खड़ बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल
ध्यान–निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है!
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन
टूट पड़ेती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चेंच पीली में दबा कर
छूर उड़ती है गगन में!

प्रश्न (क) बगुला क्या देखकर ध्यान–निद्रा त्याग देता है?
(ख) 'टूट पड़ना' का आशय स्पष्ट कीजिए।
(ग) काले माथ वाली चतुर चिड़िया की कैसी चतुराई है?

उत्तर (क) बगुला सरोवर में तैरती मछली को देख कर ध्यान–निद्रा त्याग देता है।
(ख) तेजी से शिकार पर झपट पड़ना।
(ग) चतुर चिड़िया आकाश से ही तालाब में तैरती उजलीं मछली को देख लेती है। और अचानक तालाब के जल के मछली पर आक्रमण कर अपनी पीली चोंच में दबा कर आकाश में

उड़ जाती है।
3. पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।
मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के।
प्रश्न (क) आँधी किसका प्रतीक है ?
(ख) मेघ किस प्रकार आए ?
(ग) 'घाघरा' से क्या आशय है ?
उत्तर (क) आँधी स्वागत करने वाली कन्या का प्रतीक है। जो उत्साह के कारण अपना घाघरा उठाकर कर दौड़ पड़ी।
(ख) मेघ बन–ठन के और सज–सँवर के आए।
(ग) घाघरा ग्रामीण स्त्रियों का एक परिधान है जिसे कमर पर बाँधा जाता है।
4. बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्ही'–
बेली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
छरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के।
प्रश्न (क) बूढ़ा पीपल किसका प्रतीक है ?
(ख) 'बरस बाद सुधि लीन्हीं' का अर्थ स्वष्ट कीजिए।
(ग) 'हरसाया ताल' से क्या आशय है ?
उत्तर (क) बूढ़ा पीपल घर के बड़े–बुजुर्ग का प्रतीक है।
(ख) इसका अर्थ है बहुत दिनों बाद हमें याद किया।
(ग) सरोवर का जल खुशी से चमक उठा।
5. माँ ने एक बार मुझसे कहा था –
दक्षिण की तरफ़ पैर करके मत सोना
वह मृत्यु की दिशा है
और यमराज को क्रुद्ध करना
बुद्धिमानी की बात नहीं
तब मैं छोटा था
और मैंने यमराज के घर का पता पूछा था
उसने बताया था –
तुम जहाँ भी हो वहाँ से हमेशा दक्षिण में।
प्रश्न (क) माँ ने पुत्र को क्यों चेतावनी दी थी ?
(ख) यमराज को क्रुद्ध करने का क्या आशय है ?
(ग) कवि के अनुसार दक्षिण दिशा और मृत्यु का क्या संबंध है ?
(घ) यमराज का घर दक्षिण दिशा में होने का क्या तात्पर्य है ?
(ड.) दक्षिण का प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट कीजिए।
उत्तर (क) माँ ने पुत्र को दक्षिण दिशा में पैर करके न सोने की चतावनी दी। क्योंकि इससे यमराज क्रुद्ध हो जाते है तथा मनुष्य की मृत्यु हो सकती है।
(ख) अपने मृत्यु या विनाश को निमंत्रण देना।
(ग) कवि के अनुसार दक्षिण दिशा का प्रतीकार्थ – दक्षिणपंथी विचारधारा है। उसके अनुसार यह विचारधारा मनुष्य को विनाश की ओर ले जाती है।

(घ) दक्षिणपंथी विचारधारा से मौत के दरवाजे खुलते हैं, मनुष्यता का सर्वनाश होता है।
(ड.) दक्षिणपंथी विचारधारा या पूँजीवादी विचारधारा।
6. पर आज जिधर भी पैर करके सोओ
वही दक्षिण दिशा हो जाती है
सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं
और वे सभी में एक साथ
अपनी दहकती आँखों सहित विराजते हैं
माँ अब नहीं है
और यमराज की दिशा भी वह नहीं रही
जो माँ जानती थी।
प्रश्न (क) सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल होने का क्या आशय है?
(ख) माँ के समय और वर्तमान समय में क्या अंतर आ चुका है?
(घ) दहकती आँखें क्या व्यक्त करती हैं?
उत्तर (क) इसका अर्थ है शोषणकर्ताओं की स्थापित व्यवस्था। आज जीवन के सभी क्षेत्रों में शोषणकर्ताओं ने अपना जाल फैला लिया है।
(ख) माँ के समय में केवल एक ही दिशा दक्षिण थी। शेष दिशाओं में कोई खतरा नहीं था। लेकिन वर्तमान समय में सारी दिशाएँ दक्षिण हो चुकी हैं अर्थात आज शोषण और विनाश की शक्तियाँ सब ओर फैल चुकी हैं।
(ग) 'दहकती आँखे' क्रोध, हिंसा और शोषण की कठोरता को व्यक्त करती हैं।
7. क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सरे मदरसों की इमारतें
क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक
प्रश्न (क) कवि गेंदों के खत्म होने की बात क्यों कह रहा है?
(ख) कवि की हताशा और निराशा का क्या कारण है?
(ग) कवि रंगीन किताबें, गेंदें, खिलौनें, मदरसे, मैंदान, बगीचे, आँगन क्यों चाहता है?
(घ) मदरसों से क्या आशय है?
(ड.) 'काले पहाड़' किसके प्रतीक हैं?
उत्तर (क) कवि बच्चों को उनके बचपन लौटाना चाहता है। वह प्रश्न उठाकर बाल–मजदूरों की समस्या को इंगित करता है और समाज को इस चिंता से परिचित कराना चाहता है।
(ख) बच्चों का मन मार कर बाल–मजदूरी करने के कारणकवि हताश और निराश है।
(ग) ताकि नन्हें बच्चे खेल–कूद सकें और निश्चिंत जीवन जी सकें।
(घ) विद्यालय।
(ड.) 'काले पहाड़ शोषण की व्यवस्था से संबंधित है।

8. तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में ?
कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह
कि हैं सारी चीजें हस्बमामूल
पर दूनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए
बच्चे, बहुत छाटे–छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।
प्रश्न (क) 'तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में' का आशय स्पष्ट कीजिए।
(ख) अधिक भयानक स्थिति क्या है ?
(ग) कवि बच्चों के काम पर जाने पर चिंतित क्यों है ?
उत्तर (क) इस पंक्ति का आशय है कि अगर नन्हें बच्चों को बचपन की सारी सुविधाएँ न मिले तो वह जीवन निरर्थक है। ऐसा जीवन आनंदपूर्ण नहीं हो सकता।
(ख) कवि के अनुसार संसार में बच्चों के खेल मनोरंजन और पढ़ाई के लिए वस्तुओं की कमी अधिक भयानक स्थिति है।
(ग) कवि को लगता है कि बच्चों को खेल–कूद और पढ़ाई लिखाई में मस्त रहना चाहिए। बचपन अपने सुख और विकास के लिए होता है उन पर रोजी–रोटी कमाने का बोझ नहीं डालना चाहिए।

लघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए –
1. सरसों को 'सयानी' कहकर कवि क्या बताना चाहता है ?
उत्तर – कवि बताना चाहता है कि अब सरसों की फसल पक कर तैयार हो चुकी है। उसका पूरा विकास हो चुका है।
2. 'चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा' में कवि की किस सूक्ष्म कल्पना का आभास मिलता है ?
उत्तर – सरोवर के जल में सूर्य की किरणें सीधी पड़ती है तो ऐसा लगता है जैसे पानी के नीचे चाँदी का बड़ा गोल खंभा चमक रहा है।
3. 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता का प्रतिपाद्य क्या है ?
उत्तर – कवि कहना चाहता है कि प्रकृति की गोद में बैठकर प्रकृति के उपादानों के द्वारा मनुष्य में प्रेम, अनुराग, प्रणय, आत्मीयता, मानसिक विश्राम जैसे आनंद का जितना अनुभव होता है उतना नगर के हलचलपूर्ण जीवन में संभव नहीं है।
4. 'प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है' किसके लिए कहा है और क्यों ?
उत्तर – यह कथन गाँव की एकांत प्रेममयी धरती के लिए कहा गया है क्योंकि गाँव में दूर–दूर तक खेत फैले हैं उनमें प्रकृति रंगबिरंगे फूलों से सज कर श्रृगार किए खड़ी है और स्वयंबर रचा जा रहा है। यह धरती न केवल प्रेमपूर्ण है बल्कि उपजाऊ भी है।
5. चने के पौधे को ठिगना क्यों कहा गया है ? वह किस प्रकार सजकर खड़ा है ?
उत्तर – चने का पौधा लम्बाई में अधिक ऊँचा नहीं होने के कारण से ठिगना कहा गया है। उसके सिर पर गुलाबी फूल उगने के कारण ऐसा लगता है मानो वह सज–धजकर दूल्हा बना हुआ है।
6. मेघों के लिए 'बन–ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों

कही गयी है ?
उत्तर – क्योंकि मेघों के आने पर गाँव वासियों के मन में ठीक वैसा ही उल्लास होता है, जैसा कि किसी सजे–सँवरे दामाद के आने पर होता है। अतः मघों के लिए सजे–सँवरे शहरी दामाद होने की बात कही गयी है।
7. मेघ आए कविता में मेघ के आगमन का किस प्रकार चित्रण हुआ है ?
उत्तर – कविता में मेघ को सजे–सँवरे शहरी अतिथि के रूप में चित्रण किया गया है जो बड़ी प्रतीक्षा के बाद गाँव में आया है।
8. गली–गली में दरवाजे–खिड़कियाँ क्यों खुलने लगे ?
उत्तर – मेघ और वर्षा के स्वागत में आनंद लूटने के लिए गली–गली में दरवाजे–खिड़कियाँ खुलने लगे।
9. कवि ने पीपल को ही बड़ा बुजुर्ग क्यों कहा है ?
उत्तर – गाँववासी पीपल के पेड़ को शुभ मानते हैं। और प्रायः हर गाँव में एक पुराना पीपल का पेड़ अवश्य होता है। पुराना होने के कारण उसे बड़ा बुजुर्ग कहा गया है।
10. 'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की' – भाव स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – प्रियतमा अपने प्रिय से क्षमा मांगते हुए बोली मुझे क्षमा करो मैंने सोचा था तुम नहीं आओगे। परंतु तुम खुब आए हो इस लिए मेरे मन का संदेह मिट गया।
11. माँ को ईश्वर की सलाह पाकर क्या लाभ मिलता था ?
उत्तर – माँ ईश्वर की सलाह पाकर जीवन जीने के तरीके सीख लेती है और दुख सहन करने के उपाय जान लेती है।
12. कवि ने ऐसा क्यों कहा कि दक्षिण को लाँघ लेना सम्भव नहीं था ?
उत्तर – दक्षिण दिशा का कोई ओर–छोर नहीं है। वह अनंत है। दक्षिण दिशा शोषण व्यवस्था का प्रतिक है। यह मनोभावना नए–नए रूप घारण करती है। और अमर रहती है।
13. कभी–कभी उचित–अनुचित निर्णय के पिछे ईश्वर का भय दिखाना आवश्यक हो जाता है, इसके क्या कारण हो सकते हैं ?
उत्तर – मानव मन में शुभ–अशुभ दोनों भाव है। कभी–कभी उसका अशुभ मनोभाव अधिक जाग्रत हो उठता है तब वह खून, हत्या जैसे घिनौने कार्य भी कर बैठता है। इस स्थिति को बचाने के लिए ईश्वर का भय दिखाना आवश्यक होता है। जिससे कि व्यक्ति मन से मर्यादित जाता है और भला इन्सान बन जाता है।
14. कवि दक्षिण दिशा में पैर करके क्यों नहीं सोया ?
उत्तर – क्योंकि कवि की माँ ने बताया था कि ऐसा करने से यमराज कुद्ध हो जाते हैं तथा मृत्यु का संकट छा जाता है।
15. कवि को माँ की याद कब आई और क्यों ?
उत्तर – जब कवि दक्षिण दिशा के खतरों को जानने के लिए दूर–दूर तक गया तो उसने देखा कि वहाँ सचमुच विनाश षड्यंत्र थे तब उसे माँ की सीख याद आई और लगा कि माँ ने बचपन में ही इन खतरों के प्रति सावधान कर दिया था।
16. कवि ने समय की भयानक पंक्ति किसे कहा है और क्यों ?

उत्तर – कवि ने बच्चों द्वारा मजदूरी करने की विवशता को अपने युग की सबसे भयानक समस्या कहा है। जिससे कि हर बच्चे को बचपन में खेलने–कूदने और पढ़ने–लिखने का अवसर नहीं मिल पाता।

17. कवि गेदों के खत्म होने का प्रश्न उठा कर क्या कहना चाहता है ?

उत्तर – कवि कहना चाहता है कि इन बाल–मजदूरो की अभी खेलने की आयु है इन्हें काम–काज में नहीं डालना चाहिए। वह समाज को इस चिंता से परिचित कराना चाहता है कि बच्चों को उनका सहज बचपन लौटाया जाना चाहिए।

18. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों है ?

उत्तर – समाज की व्यवस्था और गरीबी के कारण बच्चे सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से वंचित है।

19. बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है ?

उत्तर – क्योंकि बच्चों का काम पर जाना उनके प्रति घोर अन्याय है। हर बच्चे को जन्म से ही सुख–सुविधाएँ मिलनी चाहिए उन्हें खेल–कूद, मनोरंजन और पढ़ाई–लिखाई का अवसर मिलना चाहिए। परंतु गरीबी और समाज की व्यवस्था के कारण उन्हें मजदूर बन कर काम करना पड़ता है। अतः यह एक भयानक हादसे के समान माना गया है।

20. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – कविता उद्देश्य है बाल–मजदूरी को रोकना। कवि चाहता है कि बच्चों को खेल–कूद और पढ़ाई–लिखाई का पूरा अवसर मिलना चाहिए। उनके मन मस्तिष्क पर कोई दबाव नहीं होना चाहिए। तथा समाज को भी उनके विकास के लिए चिंता प्रकट करनी चाहिए।

रीढ़ की हड्डी ः जगदीश चन्द्र माथुर-

इस एकांकी में समाज में नारी को सम्मानजनक स्थान न दिए जाने की समस्या का प्रभावी चित्रण हुआ है।इस एकांकी में लड़की के विवाह की सामाजिक समस्या मात्र का चित्रण नहीं है। यह एकांकी भारतीय समाज का वास्तविक चेहरा दिखाने में सक्षम है।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न **1** "आपके लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं।"उमा अपने इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करती है**?**

उत्तर **-** उमा अपने इस कथन के माध्यम से शंकर की चारित्रहीनता एवं डरपोक स्वभाव की ओर संकेत करती है। शंकर लडकियों के हास्टल के आस**-** पास घूमता पकडा जाता है और नौकरानी के पैरों गिरकर क्षमा मॉगकर किसी तरह छूट कर भागता है।

प्रश्न **2** शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की**,** समाज को कैसे व्यक्तित्व की ज़रूरत है**?** तर्क सहित उत्तर दीजिए।उत्तर**-** समाज में उमा जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है। वह सुशिक्षित सभ्य और साहसी लड़की है।वह नारी के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने और जागरूकता लाने का काम करती है।

प्रश्न **3** कथावस्तु के आधार पर एकांकी का मुख्य पात्र कौन है और क्यों**?**

उत्तर- कथावस्तु के आधार पर एकांकी का मुख्य पात्र उमा है। लेखक ने उमा के माध्यम से ही नारी के प्रति अपने विचार व्यक्ति किए है। वही केन्द्रबिन्दु है एकांकी की कहानी उसी के आस- पास घूमती है।इसीलिए वह एकांकी की मुख्य पात्र है।

प्रश्न 4 क्या शंकर जैसा लड़का उमा जैसी लड़की के लिए योग्य है?

उत्तर- शंकर जैसा लड़का उमा जैसी लड़की के लिए योग्य तो हो ही नहीं सकता, क्योंकि उमा सुशिक्षित एवं संस्कारवान लड़की है। जबकि शंकर चरित्रहीन और रूढ़िवादी लड़का है।

प्रश्न 5 रामस्वरूप बैठक के कमरे में वाद्य यंत्रों को क्यों रखवाते हैं?

उत्तर- रामस्वरूप की बेटी उमा को लड़के बाले देखने आने वाले हैं ।वे कमरे की सफाई करवा कर वाद्य यंत्र रखवाते है। वे लड़के वालों को दिखाना चाहते हैं कि उमा को संगीत का ज्ञान है, वह इसके बल पर लड़के वालों को प्रभावित करना चाहते है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 गोपाल प्रसाद विवाह को बिज़नेस मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा छिपाते हैं। क्या आप मानते है कि दोनो समान रूप से अपराधी हैं **?तर्क सहित उत्तर** दीजिए।

उत्तर -मेरी दृष्टि में दोनो समान रूप से दोषी हैं। रामस्वरूप उमा की शादी के लिए उसकी उच्च शिक्षा को छिपाते हैं। मेरे विचार से रामस्वरूप को ऐसे परिवार में अपनी बेटी का रिश्ता जोड़ने की नहीं सोचना चाहिए था, जहाँ शिक्षा का सम्मान न हो।रामस्वरूप को उमा को शिक्षित करने पर अपराध नहीं गर्व महसूस करना चाहिए था।दूसरी ओर गोपाल प्रसाद विवाह को बिज़नेस मानते हैं। वह ऐसी पड़ताल करते हैं मानो विवाह नहीं फर्नीचर खरीदने आए हों। वह यह भूल जाते हैं कि विवाह बिज़नेस नहीं पवित्र बंधन होता है। झूठ की बुनियाद पर खड़ा रिश्ता कभी सफल नहीं होता है।अतः मेरी दृष्टि में दोनों अपराधी हैं।

प्रश्न 2 उमा ने गोपाल प्रसाद से जो व्यवहार किया, वह कहाँ तक उचित है?

उत्तर- गोपाल प्रसाद पुरातनपंथी सोच के प्रतीक हैं।ऐसे लोग स्त्री शिक्षा के विरोधी और नारी को उपभोग की वस्तु मानते हैं। उनके विचार से शिक्षित नारी अपने अधिकारों के लिए सजग हो जाएगी, पुरूष के गलत कार्यो का विरोध करेगी, जो उचित नहीं है। वे शिक्षा को सिर्फ लड़कों के लिए ज़रूरी मानते हैं। उमा ने उनके नारी शिक्षा विरोधी विचारों को जानकर ही कहा कि- मैंने बी ए किया है ,कोई पाप नहीं

किया है। उमा द्वारा गोपाल प्रसाद के साथ किया गया व्यवहार सर्वथा उचित है। लड़का- लड़की समान हैं। लड़की के विरूद्ध सोच रखने वाले को इसी तरह की लताड़ की ज़रूरता रहती है।

माटी वाली ः विद्यासागर नौटियाल

माटी वाली पाठ में विस्थापन की समस्या का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। इस समस्या से मज़दूर तथा गरीब लोगों को सर्वाधिक दुख भोगना पड़ता है। आधुनिकता और विकास के नाम पर हम गरीब आदमी का शमशान भी उजाड़े दे रहे हैं। हमारा ध्यान सर्वहारा की ओर होना चाहिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1 'शहरवासी सिर्फ माटी वाली को ही नहीं उसके कंटर को भी अच्छी तरह पहचानते हैं।'आपकी समझ में वे कौन से कारण रहे होंगे, जिनके रहते माटी वाली को सब पहचानते थे?

अथवा

टिहरी शहरवासियों के लिए माटी वाली का क्या महत्व है? वे माटी वाली को किस तरह पहचानते थे ,संक्षेप में लिखें।

उत्तर- माटी वाली की लाल मिट्टी से सभी टिहरी वासियों का चूल्हा -चौका पोता जाता था। पूरे शहर में वह अकेली महिला थी, जो हर घर मैं लाल मिट्टी पहुँचाती थी। उसके पास बिना ढ़क्कन का कनस्तर था। यही कारण था कि उस माटी वाली को सभी पहचानते थे।

प्रश्न 2 माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज़्यादा सोचने का समय क्यों नहीं था?

उत्तर माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज़्यादा सोचने का समय नहीं था। क्योंकि वह सुबह से शाम तक काम में भिड़ी रहती धी। काम नहीं होता तो पेट की चिन्ता और बढ़ जाती। वह अपने से ज़्यादा अपने बुड्ढ़े के बारे में सोचती थी।

प्रश्न 3 ' भूख मीठी कि भोजन मीठा' से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर - भूखे व्यक्ति का ध्यान भोजन पर होता है न कि भोजन के स्वाद पर। इसका अर्थ यह है कि भूख के वक्त स्वादिस्ट भोजन नहीं देखा जाता, मात्र भूख मिटाने का उपाय सोचा जाता है। भूखे आदमी को रूखा- सूख भोजन भी मीठा लगता है।

प्रश्न 4 माटी लाने के आदेश के साथ माटी वाली को क्या मिला ? उसे पाकर वह क्या सोचने लगी ?

उत्तर- माटी वाली को माटी लाने के आदेश के साथ दो रोटियाँ मिलीं। उसने रोटियों को अपने बुड्ढ़े के लिए कपड़े में बाँध लिया।वह रास्ते भर सोचती जा रही थी कि रोटियाँ पाकर बुद्ढ़े का चेहरा खिल जाएगा ।

प्रश्न 5 टिहरी प्रोजेक्ट से ग्रामवासियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा, संक्षेप में लिखिए?

उत्तर- टिहरी बाँध की दो सुरंगों को जैसे ही बन्द किया गया बैसे ही शहर में आपाथापी मच गई ,क्यों कि शहर **में** तेजी से पानी भरने लगा था।लोग अपने- अपने घरों को छोड़कर भाग रहे थे।पानी भरने के कारम श्मशान घाट भी डूब गया था। माटी वाली अपने झोपड़े के सामने बैठी थी ।उसका बुड्ढ़ा परलोक सिधार गया था। वह हर आनेजाने वाले से यही कह रही थी कि - " गरीब आदमी का श्यमशान नहीं उजड़ना चाहिए।"

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

श्न 1 माटी वाली पाठ में किस समस्या को प्रमुखता से उभरा गया है?पाठ में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- 'माटी वाली' में विस्थापितों की उस समस्या को रेखांकित किया गया है जो टिहरी बाँध बनने से उत्पन्न हुई थी।इसका सबसे ज़्यादा प्रभाव गरीबों लाचार तथा असहाय लोगों पर पड़ा है। लोग विस्थापन की पीड़ा को समझें, उनके प्रति सहानुभूति पूर्वक विचार करें । माटी वाली जिस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, उसका अन्तिम सहारा श्यमशान तक छिन चुका है। माटी वाली सर्वहारा है ।उसके पास न ज़मीन है न कागज़ात, विस्थापान के बाद वह कहाँ जाएगी, उसका क्या होगा? ऐसे ही प्रश्नों का जवाब खोजने की आवश्यकता है।प्रगति की कीमत इसी वर्ग को चुकानी पड़ती है। समाज एवं सरकार को इसी वर्ग के बारे में चिंतन करने की आवाश्यकता है।

प्रश्न 2 काँसे के बर्तनों के गायब होने के पीछे लेखक ने समाज की किस प्रवृति पर व्यंग्य किया है।

उत्तर ं माती वाली घरों में माटी देकर कुछ देर ठहरती थी। परस्पर दुख- सुख की बातें होती थीं।घर की मालकिने उसके दर्द को समझतीं ,शाम की बची रोटियाँ उसे दे देतीं। कभी- कभी रोटी के साथ चाय भी मिल जाती थी।एक घर में उसे पीतल के गिलास में चाय मिली तो उसने कहा कि- अब तो घरों में पीतल की गिलास नहीं मिलती ।यह सुनकर घर की मालकिन ने कहा- " अब तो घरों से काँसे के बरतन भी गायब हो रहे हैं। लोग काँसे और पीतल की वस्तुओं को रद्दी के भाव बेचते हैं।जब की यह उनके

पुरखों के गाढ़ी कमाई से तन- पेट काटकर बनाई हुई होतीं हैं। लोग इन विरासतों का मूल्य नहीं समझते हैं । वे आधुनिकता तथा फैशन के नाम पर नई वस्तुएँ अपनाते जा रहे हैं।" लेखक ने लोगों की इसी प्रवृति पर व्यंग्य किया है।

किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया ःशमशेर बहादुर सिंह-

इस लेख में लेखक ने बताया है कि पहले वह उर्दू और अंग्रेज़ी में लिखता था किन्तु बाद

में उर्दू अंग्रेज़ी को छोड़कर हिंदी में लिखना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने जीवन के कष्टों के साथ साथ पंत बच्चन तथा निराला के प्रति अपनी श्रद्धा भी व्यक्त की है।

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर

श्न **1** बच्चनजी ने शमशेर के भविष्य के विषय में क्या योजना बनाई थी?

उत्तर- बच्चनजी शमशेर के भविष्य को लेकर चिंतित रहते थे। वे लेखक को एक काम का आदमी बना देखना चाहते थे ।वे चाहते थे कि- लेखक यूनिवर्सिटी से डिग्री लेकर, पैर जमाकर आत्मनिर्भर हो जाए।

प्रश्न **2** शमशेर बहादुर उर्दू और अंग्रेज़ी में लिखता थे फिर हिंदी की और कैसे आकर्षित हुए?

उत्तर- लेखक के इलाहाबाद प्रवास के दौरान हिंदी का वातावरण मिला साथ ही मित्रों एवं बच्चन, पंत, निराला से मिले संस्कारों के कारण, वह धीरे -धीरे हिन्दी की ओर आकर्षित हुआ।

प्रश्न **3** लेखक ने कविता में नए अभ्यास किए, उसका क्या परिणाम निकला?

उत्तर कविता में नए अभ्यास के परिणाम स्वरूप 'सरस्वती' में छपी एक कविता ने निराला का ध्यान खींचा। 'रूपाम' आफ़िस में प्रारम्भिक प्रशिक्षण लेकर वे बनारस 'हंस' कार्यालय की कहानी में चले गए। अंतत ः बच्चन जी उन्हें साहित्यिक प्रांगण में खींच लाए।

प्रश्न **4** शमशेर बहादुर बाहर से शांत दिखाई देते थे पर अन्दर से अशांत थे, क्यों?

उत्तर- लेखक की पत्नी की मृत्यु टी बी से हो गई थी। इस दुख से वह अन्दर ही अन्दर टूट गया था। निठल्ला समझकर आत्मीयजन ताने देते थे। इसी कारण लेखक बाहर से शांत और अंदर से अशांत धा।

प्रश्न **5** किस्मत उन्हीं का साथ देती है जो कुछ करने के लिए कदम बढ़ाते हैं- पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- लेखक घर से बिना लक्ष्य के निकल पड़ा। उसे नहीं मालूम था कि कहाँ जाना है। वह भटकता हुआ दिल्ली पहुँचा। पेंटिंग में शौक होने के कारण उसने उकील आर्ट स्कूल ढूढ़ा। प्रवेश परीक्षा के माध्यम से बिना फीस के विशेष परिस्थिति में प्रवेश मिल गया। इससे यह सिद्ध होता है कि किस्मत उन्हीं का साथ देती है जो कुछ करने के लिए कदम बढ़ाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

श्न 1 शमशेर बहादुर ने 'बात का धनी','हृदय मक्खन', ' संकल्प फौलाद' जैसे विशेषण किसके लिए प्रयोग किए हैं और क्यों ?

उत्तर- जीवन के संघर्ष काल में लेखक को अपना भविष्य अनिश्चित लग रहा था। जब मंजिल का कहीं पता भी नहीं था,तब बच्चनजी ने बहुत सहयोग किया। लेखक अपने जीवन में बच्चनजी के योगदान को स्वीकार करते हुए कहा है कि - उसने अपने जीवन में जो कुछ प्राप्त किया है, उसमें बच्चन जी का अविस्मरणीय योगदान है। बच्चनजी द्वारा प्राप्त आर्थिक एवं मानसिक सहयोग के कारण ही लेखक यहाँ तक पहुँचा। इसी कारण लेखक बच्चन जी को'बात का धनी','हृदय मक्खन', ' संकल्प फौलाद' जैसे विशेषणों से नवाजता है । उन्होंने किसी की परवाह किए बिना अपने वचन को निभाया। उनका संकल्प फौलाद की तरह मज़बूत था।

प्रश्न 2 'तुम यहाँ रहोगे तो मर जाओगे.....तुम इलाहाबाद जाएगा तो मर जाएगा' ये कथन किसने कहे थे?इनमें से लेखक ने किसे उचित समझा?

उत्तर- शमशेर बहादुर सिंह की पत्नी का निधन टी बी की बीमारी से हो चुका था। ऐसे में एकाकीपन उन्हें खाए जा रहा था,वे बहुत दुखी थे। लेखक की मनःस्थिति को जानकर कवि बच्चन ने कहा कि-तुम यहाँ रहोगे तो मर जाओगे। देहरादून के अकेले परिवेश में पत्नी की यादें सताएँगी। यहाँ कला की अभिव्यक्ति के लिए साहित्यिक वातावरण भी नहीं है, तुम अपने आपको व्यस्त नहीं रख पाओगे, इससे तुम्हारा दुख बढ़ेगा। लेखक की ऐसी स्थिति देखकर देहरादून के एक डाक्टर को कहा था- तुम इलाहाबाद जाएगा तो मर जाएगा। अर्थात इलाहाबाद में उनका दुख बाँटने वाला कोई न होगा। वहाँ पत्नी की याद जीवन को और कठिन बना देगी। लेखक ने दोनों पर विचार करके इलाहाबाद जाने का निर्णय लिया ,क्योंकि- बच्चन के सानिध्य में असीम साहित्यिक संसार उनकी बाट जोह रहा था।

खण्ड 'घ'

लेखन – प्रथम सत्र से अवलोकन करें।

फारमेटिव फारमेटिव 3 सत्र 2011 12

कक्षा 9 समय 90मिनट

विषय हिन्दी अंक 40

खण्ड – {क}

प्रश्न 1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए। 1X5=5

लोगों को यह कहते सुन जाता है कि एक और एक दो होते हैं ,परंतु एक लोकोक्ति है 'एक और एक ग्यारह'- इस कथन का अभिप्राय है कि एकता में शक्ति होती है।जब दो व्यक्ति एक साथ मिलकर प्रयास करते हैं तो उसकी शक्ति कई गुनी हो जाती है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है।समाज अलग- अलग इकाइयों का समूहबद्ध रूप है, जिसमें हर इकाई समाज को शक्तिशाली बनाती है।व्यष्टि रूप में एक व्यक्ति का कोई महत्व नहीं, परंतु समष्टि रूप में वह समाज की एक इकाई है।बाढ़ से बचने के लिए जब एक अंधे और लंगड़े में सहयोग हुआ तो अंधे को लंगड़े की ऑखें तथा लंगड़ को अंधे की टॉगें मिल गईं और दोनों बच गए।एकता में शक्ति है। जो समाज एकता के सूत्र में बॅधा नहीं रहता, उसका पतन अवश्यंभावी है। भारत की परतंत्रता इसी फूट का परिणाम थी।जब भारतवासियों ने मिलकर आज़ादी के लिए संघर्ष किया तो अंग्रेज़ों को यहॉ से भागना पड़ा। गणित में शून्य के प्रभाव से अंक दस गुने हो जाते हैं।अतः समाज का हर व्यक्ति सामूहिक रूप से समाज की रीढ़ होता है।

[i] लोकोक्ति के अनुसार एक और एक ग्यारह क्यों होते हैं-

[क] ग्यारह को एक और एक कहते हैं [ख] एकता में बल होनें से

[ग] एक और एक को आमने सामने रखने से [घ] उपर्युक्त सभी

[ii] गद्यांश में आए व्यष्टि शब्द से लेखक का आशय है-

[क] समूह [ख] इकाई

[ग] 'क' एवं 'ख' दोनों [घ] उपर्युक्त में से कोई नहीं

[iii] मिलजुल कर न रहनें का क्या अंजाम हो सकता है ?

[क] वह समाप्त हो सकता है [ख] उसका पतन हो सकता है

[ग] वह आज़ाद हो सकता है [घ] वह शक्तिशाली नहीं रहता

[iv] गणित में शून्य का क्या महत्व है ?

[क] ग्यारह हो जाते हैं [ख] अंक बढ़ जाते हैं

[ग] अंक दस गुनें हो जाते हैं [घ] शून्य का कोई महत्व नहीं

[v] इस गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है-

[क] सहयोग की भावना [ख] समाज की इकाई

[ग] शक्तिशाली भारत [घ] एकता में शक्ति

प्रश्न 2 निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर छॉटकर लिखिए-

1X5=5

दलित जन पर करो करूणा।

दीनता पर उतर आए
प्रभु, तुम्हारी शक्ति अरूणा।
हरे तन- मन प्रीति पावन,
मधुर हो मुख मनोभावन,
सहज चितवन पर तरंगित
हो तुम्हारी किरण तरूणा।
देख वैभव न हो नत सिर ,
समुद्धत मन सदा हो स्थिर,
पार कर जीवन निरंतर
रहे बहती भक्ति- वरूणा।
[i] 'करूणा' का पर्याय विकल्पों में से चुनिए -
[क] कृपा [ख] रहम [ग] दया [घ]उपर्युक्त सभी
[ii] उपर्युक्त गद्यांश किसे संबोधित है?
[क] स्वामी को [ख] ईश्वर को [ग] जनता को [घ] स्वयम् को
[iii] 'दलित जन पर करो करूणा'-का क्या आशय है?
[क] गरीबों पर दया करना [ख]वंचितों पर कृपा करना
[ग] अभावग्रस्तों पर रहम करना [घ] उपर्युक्त सभी आशय ठीक हैं
[iv] 'हरे तन- मन.....पावन' –पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए-
[क] शक्ति [ख] पंक्ति [ग] प्रीति [घ]भक्ति
[v] गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक विकल्पों से चुनिए-
[क] दलित जन पर करो करूणा [ख] तुम्हारी शक्ति अरूणा
[ग] हो मुख मनोभावन [घ] उपर्युक्त में से कोई नहीं

ख्रण्ड ख्र

प्रश्न **3** दिए गए उपसर्ग, प्रत्यय के विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए। **1X4=4**
[i] आक्रमण
[क] आक्र+ मण [ख] अ+ क्रमण [ग] आ+ क्रमण [घ] आक्रम+अण
[ii] प्रवचन
[क] प+ वचन [ख] पर+ वचन [ग]प्र + वचन [घ] पर्+ वचन
[iii] ' बा+ इज़्ज़त' से बना शब्द है-
[क] बाइज़त [ख]बाइज़्ज़त [ग]बाइज़ात [घ] बाज़्ज़त
[iv] आर्थिक
[क] आर्थ+ इक [ख] अर्था+ इक [ग] ओर्थ+ इक [घ] अर्थ+ इक
प्रश्न **4** [i] 'यथाशक्ति'-जितना संभव हो में कौन- सा समास है। **1X4=4**
[क] अव्ययीभाव समास[ख]द्विगु समास [ग]द्वंद्व समास [घ] बहुब्रीहि समास

[ii] 'पुस्तकालय'-पुस्तकों के लिए आलय में कौन- सा समास है।
[क] संबंध तत्पुरूष[ख]संप्रदान तत्पुरूष[ग]अधिकरण तत्पुरूष [घ] करण तत्पुरूष
[iii] कवयित्री अपने बचपन को याद करती है रेखांकित संज्ञा का भेद बताइए-
[क] व्यक्तिवाचक संज्ञा[ख] जातिवाचक संज्ञा [ग]भाववाचक संज्ञा [घ] द्रव्यवाचक संज्ञा
[iv] गरमी के मारे बुरा हाल है रेखांकित संज्ञा का भेद बताइए-
[क]जातिवाचक संज्ञा [ख]भाववाचक संज्ञा[ग] द्रव्यवाचक संज्ञा[घ]समूहवचक संज्ञा
प्रश्न 5 [i] गर्वित ने गुब्बारे खरीदे रेखांकित का कारक बताइए **1X2=2**
[क] कर्ता कारक [ख] कर्म कारक [ग] करण कारक [घ]संप्रदान कारक
[ii] वह कलम से लेख लिखता है रेखांकित का कारक बताइए
[क] कर्म कारक [ख]अपादान कारक [ग] करण कारक [घ]संबंध कारक

खण्ड ग

प्रश्न 6 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों सही विकल्प चुनिए- **1X5=5**
टोपी आठ आने में मिल जाती है और जूते उस जमाने में भी पॉच रूपए से कम में क्या मिलते होंगे।जूता हरदम टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर
पचीसों टोपिंयॉ न्योछावर होती हैं। तुमभी जूते और टोपी के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे।तुम महान
कथाकार, उपन्यास- सम्राट, युग- प्रवर्तक, जाने क्या- क्या कहलाते थे, मगर फोटो में भी तुम्हारा जूता फटा
हुआ है।
[i] 'जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है' का आशय है-ः
[क] जूता महॅगा व टोपी सस्ती है।
[ख] इज़्ज़त सस्ती और ताकत कीमती है
[ग] हमेशा से जूता महॅगा ही है
[घ] टोपी और जूते की तुलना गलत है
[ii] प्रेमचन्द टोपी और जूते के आनुपातिक मूल्य के मारे हुए थे?
[क] प्रेमचन्द लेखक थे
[ख] प्रेमचन्द को पैसे की कमी थी
[ग] प्रेमचन्द इस तरह नहीं सोचते थे
[घ] प्रेमचन्द की कीमत नहीं पहचानी गई
[iii] प्रेमचन्द ने फटा जूता क्यों पहना था
[क] प्रमचन्द के पास फटा हुआ जूता ही था
[ख]वह इस बात की तरफ़ लापरवाह थे
[ग] वे जानबूझ कर फटा जूता पहनते थे

[घ] उनके जैसी सोच का व्यक्ति जूतों के बारे में नहीं सोचता
[iv] 'जाने क्या क्या कहलाते थे' से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहता है
[क] लेखक के प्रति सम्मान [ख] लेखक के प्रति सहानुभूति
[ग] लेखक की यथार्थ स्थिति [घ] लेखक की फोटो खिंचवाने के प्रति उदासीनता
[v] 'कीमती'में कौन सा प्रत्यय है?ः
[क] ई [ख] इ [ग] ती [घ]मती
प्रश्न 7 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों सही विकल्प चुनिए- 1X5=5
बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की
बरस बाद सुधि लीनी
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के
मेघ आए बड़े बन ठन के सँवर के
क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी
क्षमा करो गाँठ खुल गयी अब भरम की।
[i] बरस बाद में कौन सा अलंकार है?
[ii] लता को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है? उसकी व्यथा का वर्णन कीजिए।
[iii] दामिन किसका पर्यायवाची है ?
[iv] जुहार करने का क्या अर्थ है ?
[v] मानवीकरण अलंकार कहाँ होता है।
प्रश्न 8 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए -
2X5=10
[i] सेनापति 'हे' ने जनरल आउटरम से क्या प्रार्थना की?
[ii] लेखिक और प्रेमचन्द के विचार में परदे का महत्व अलग- अलग कैसे है?
[iii] सरसो को 'सयानी' कहकर कवि क्या कहना चाहता है?
[iv] 'मेघ आए' कविता में जिन रीति- रिवाजों का चित्रण हुआ है, उसका वर्णन कीजिए ?
[v] गोपाल प्रसाद विवाह को बिज़नेस मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा को छिपाते है।
क्या आप मानते हैं कि दोनों अपराधी हैं ? अपने विचार लिखें।

विषय – हिन्दी

कक्षा – 9वीं

फॉरमैटिव परीक्षा (FA-3) हेतु भार विभाजन

विषय वस्तु अंक कुल भार

अपठित बोध 10
10:
व्याकरण 06
पाठ्यपुस्तक व
पुरकपाठ्यपुस्तक
20
लेखन 04
कुलभार 40 10

फॉरमैटिव परीक्षा **(FA-3)**

विषय – हिन्दी
कक्षा – 9वीं
समय : 1:30 घण्टे अधिकतम अंकः 40
निर्देशः–
(1) इस प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं – क, ख, ग और घ।
(2) चारो खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
(3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खण्ड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए –(1×5=5)

लंका की समृद्धि तथा सौन्दर्य को देखकर रावण की मृत्यु के बाद लक्ष्मण ने राम के समक्ष जब लंका को ही अपनी राजधानी बना लेने का प्रस्ताव रखा, ता श्री राम ने उत्तर दिया – लंका चाहे स्वर्णमयी हो, पर मुझे रूचती नहीं क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ होती है। जननी हमें जन्म देती है तो जन्मभूमि हमें जीवन का आधार प्रदान करती है। मातृभूमि हमें अनेक प्रकार से उपकृत करती है। हम इसी की धूल में सरक–सरक कर चलना सीखते हैं, इसी के अन्न जल से हमारा शरीर बनता है। इसे शरणदायिनी आदि विशेषणों से संबोधित किया गया है। प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है कि वह अपनी मातृभूमि की उन्नति के लिए प्रयासरत् रहे तथा उसकी रक्षा के लिए कृत–संकल्प हो 'स्वर्ग' की हम केवल कल्पना कर सकते हैं, पर इसके साक्षात् दर्शन अपनी मातृभूमि के रूप में कर
सकते हैं। जो व्यक्ति अपनी मातृभूमि से प्रेम नहीं करता वहमनुष्य होकर भी पशु तुल्य है।

(1) लक्ष्मण ने राम के समक्ष लंका को अपनी राजधानी बनाने का प्रस्ताव क्यों रखा ?
(क) रावण का मान रखने के लिए
(ख) समुद्र से घिरी होने के कारण
(ग) विशेष लगाव के कारण
(घ) वैभव एवं सुन्दरता के कारण।
(2) राम ने यह प्रस्ताव नहीं माना क्योंकि –

(क) लंका में राम का शत्रु रहता था।
(ख) वह सोने की बनी थी।
(ग) वह राम की जन्मभूमि न थी।
(घ) वहाँ रहना सुरक्षित न था।
(3) मातृभूमि क्या नहीं करती –
(क) जीवन को आधार देना।
(ख) अन्न–जल से पोषण।
(ग) देश में निष्कासन।
(घ) विपत्ति में शरण।
(4) 'धूल' शब्द का पर्यायवाची शब्द है –
(क) राज्य (ख) अमन
(ग) शय्या (घ) रज।
(5) 'समक्ष' का विलोम शब्द है –
(क) विपक्ष (ख) प्रत्यक्ष
(ग) परोक्ष (घ) निष्पक्ष।
2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए – (1×5=5)
जीवन दीप जले।
जीवन दीप जले ऐसा, सब जग को ज्योति मिले
जीवन दीप जले।
इसी सत्य पर रामचन्द्र ने राजपाट सब त्याग दिया,
छोड़ अवध माया की नगरी, कानन को प्रस्थान किया।
सुख–वैभव को लात मारकर, कष्टों के संग वास किया,
षट–रस व्यंजन त्याग, जंगली फल खाए, सर–नीर पिया।
स्वयं कंटकों को चूमा औरों के कंटक दूर किए,
जन्म सफल है उस मानव का जो परहित ही सदा जिये,
तृशितों को सुरसरि देते जो हिमगिरि–सा चुपचाप गले।
जीवन दीप जले।
(1) 'जीवन दीप' क्यों जले –
(क) रात को प्रकाशित करने के लिए
(ख) संसार को प्रकाशित करने के लिए
(ग) जीवन को प्रेरित करने के लिए
(घ) समाज का कल्याण करने के लिए।
(2) उसका जन्म सफल माना गया है जो –
(क) उन्नति के शिखर छुए
(ख) प्रसिद्ध हो
(ग) बलिदानी हो
(घ) दूसरों के लिए जीता हो।
(3) 'औरों के कंटक दूर किए' कथन में 'कंटक' का आशय है –
(क) काँटे (ख) कष्ट
(ग) शत्रु (घ) पाप।
(4) काव्यांश में राम के बारे में क्या नहीं कहा गया है –
(क) वनवास स्वीकार किया
(ख) खट्टा भोजन किया
(ग) अयोध्या को त्याग दिया

(घ) कष्टों को सहन किया।
(5) 'लात मारना' मुहावरे का अर्थ है –
(क) त्याग देना
(ख) घूँसे–लात मारना
(ग) कुटाई करना
(घ) परेशान करना।

खण्ड 'ख'

3. निम्नलिखित व्याकरण से संबंधित बहूविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए – (1×6=6)
(1) 'भर' उपसर्ग युक्त शब्द छाँटिए –
(क) भरा (ख) भरमार
(ग) भारत (घ) भार्या।
(2) 'ता' प्रत्यय का प्रयोग किस शब्द में हुआ है –
(क) पिता (ख) खता
(ग) लता (घ) आवश्यकता।
(3) 'चन्द्रमुख' में समास है –
(क) चन्द्र और मुख – द्वन्द्व
(ख) चन्द्र जैसा मुख–कर्मधारय
(ग) चन्द्र में सुख –तत्पुरूष
(घ) चन्द्र से मुख तक –अव्ययीभाव।
(4) भाववाचक संबा का सही विकल्प चुनकर लिखिए –
(क) ऊँचा (ख) ऊँचाई
(ग) ऊपर (घ) ऊँची।
(5) मदन काली कमीज पहनकर स्कूल आया –रेखांकित पद का उचित कारक होगा –
(क) कर्त्ता (ख) सम्प्रदान
(ग) कर्म (घ) अधिकरण।
(6) 'किसान बीज हो चुका है' – वाक्य में न परसर्ग के प्रयोग से उचित वाक्य होगा –
(क) किसान ने बीज बो दिए हैं
(ख) किसान ने बीज बो लिए हैं
(ग) किसान ने बीज बोए
(घ) किसान ने बीज बोए थे।

खण्ड 'ग'

4. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –
और सरसों की न पूछो –
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं
ब्याह–मुडप में पधारी
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।
(क) सरसों को सयानी कहने के पीछे क्या आशय है? (2)
(ख) 'हाथ पीले कर लिए हैं' के अर्थ स्पष्ट कीजिए। (2)
(ग) उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।(1)
5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(1×5=5)
मेरी दृष्टि इस जूते पर अटक गई। सोचना हूँ – फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है, तो पहनने की कैसी होगी? नहीं, इस आदमी की अलग–अलग पोशाकें नहीं होंगी – इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है। यह जैसा है, वैसा ही फोटो में खिंच जाता है।
(1) यहाँ 'मेरी' से क्या आशय है?
(क) प्रेमचंद (ख) हरिशंकर परसाई
(ग) हजारीप्रसाद द्विवेदी (घ) महादेवी वर्मा
(2) 'इस आदमी' का आशय है –
(क) प्रगतिशील मनुष्य (ख) प्रेमचंद
(ग) लेखक (घ) आज का मनुष्य
(3) जूते की किस विशेषता पर लेखक का ध्यान अटक गया?
(क) जूते की नोक पर (ख) चमक पर
(ग) उसके फटे होने पर (घ) रूखेपन पर।
(4) 'पोशाक बदलने का गुण' का आशय है –
(क) फैशन करने (ख) दिखावा करने
(ग) स्वयं को सुंदर दिखाना (घ) रंग बदलना।
(5) 'अलग–अलग पोशाकों' से तात्पर्य है –
(क) अलग–अलग रूप (ख) समृद्धि
(ग) भिन्नता (घ) अलग–अलग भाषाएँ
6. निम्नलिखित लघुत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए – (2×5=10)
(क) 'प्रेमचंद के फटे जूते' व्यंग्य के आधार पर प्रेमचंद की वेशभूषा और रहन–सहन पर प्रकाश डालिए।
(ख) महादेवी वर्मा की काव्य–प्रेरणा क्या थी?
(ग) 'चन्द्र गहना से लौटती बेर' के आधार पर हरे चने के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।
(घ) लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों?
(ड.) 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का मुख्य उद्देश्य लिखिए।
खण्ड 'घ'
7. परीक्षा के दिनों में संगीत–समारोह बंद कराने की प्रार्थना करते हुए अपने नगर–निगम के अधिकारी को पत्र लिखिए। (4)
अथवा
प्रातःकालीन भ्रमण के लाभ बताते हुए अपनी छोटी बहन को पत्र लिखिए।

फॉरमैटिव परीक्षा **;FA-3)**
विषय – हिन्दी
कक्षा – 9वीं
उत्तरमाला
निर्देशः
(1) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प स्वीकारें। परीक्षार्थी यदि केवल
विकल्प–संख्या भी लिखें तो स्वीकार्य है।

(2) पाठ्यपुस्तक के प्रश्नों के उत्तर केवल संकेतक हैं। परीक्षार्थी इनसे भिन्न उत्तर भी दे
सकता है। उसकी उपयुक्तता और मौलिकता विचार कर अंक दें।
(3) खंड घ में परीक्षार्थी की अभिव्यक्ति और मौलिकता अपेक्षित है। भाषिक अशुद्धियों पर एक–एक अंक से अधिक न काटा जाए।

खण्ड 'क'

1. अपठित गद्यांश –
(1) (घ) वैभव एवं सुन्दरता के कारण।
(2) (ग) वह राम की जन्मभूमि न थी।
(3) (ग) देश में निष्कासन।
(4) (घ) रज।
(5) (ग) परोक्ष

2. अपठित पद्यांश –
(1) (घ) समाज का कल्याण करने के लिए।
(2) (घ) दूसरों के लिए जीता हो।
(3) (ख) कष्ट
(4) (ख) खट्टा भोजन किया
(5) (क) त्याग देना

खण्ड 'ख'

3. व्याकरण –
(1) (ख) भरमार
(2) (घ) आवश्यकता।
(3) (ख) चन्द्र जैसा मुख–कर्मधारय
(4) (ख) ऊँचाई
(5) (ग) कर्म
(6) (क) किसान ने बीज बो दिए हैं

खण्ड 'ग'

4. (क) फसल तैयार हो गयी है। और उसके पीले फूलों की शोभा सब ओर फैल गयी है।
(ख) विवाह हो गया है। एवं पीले रंग के फूल खिल आए।
(ग) कवि–'केदारनाथ अग्रवाल'
कविता–'चन्द्र गहना से लौटती बेर'

5. (1) (ख) हरिशंकर परसाई
(2) (ख) प्रेमचंद
(3) (ग) उसके फटे होने पर
(4) (ख) दिखावा करने
(5) (क) अलग–अलग रूप

6. (क) प्रेमचंद गांव के साधारण किसानों की भाँति जीवन–यापन करते थे यद्यिपि वे साधारण कुरता–धोती पहनते थे। उनकेसाधारण से जूतों को देख कर उनकी सादगी का परिचय मिलता है।
(ख) उनकी माता धार्मिक भजन लिखा करती थी एवं गाया भी करती थी। यहीं से उन्हें ब्रजभाषा में लिखने की प्रेरणा मिली।
(ग) हरा चना आकार में ठिगना है वह दूल्हे के रूप में सज कर खड़ा है। उसने अपने सिर पर गुलाबी फूलों की पगड़ी पहन रखी है।

(घ) तला ने बादल रूपी मेहमान को किवाड़ की ओंट से देखा क्योंकि वह अपने प्रियतम के कई दिनों के बाद आने पर उनसे रूठी हुई है। उन्हें देखे बिना भी वह नहीं रह पाती।
(ड.) नारी–शिक्षा को समाज में स्थान दिलाना एवं नारियों की स्थिति में सुधार लाना।

खण्ड 'घ'

7. (क) पत्र का आरंभ, विस्तार, समापन। (1)
(ख) विषय सामग्री। (2)
(ग) भाषाशैली। (1)

हिन्दी

सर्कलित परीक्षा (एस-2)

कक्षा - नवीं अधिकतम

अंकढ 90

विषय - हिन्दी निर्धारित समय

: 3 घण्टे

निर्देश :-

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख ग और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के **उत्तर** देना अनिवार्य हैौ।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड **के उत्तर क्र**मश: दीजिए।

खंड 'क'

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को **ध्या**नपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर पुस्तिका में लिखिए -

भारतीय दर्शन सिखाता है कि जीवन का एक आशय और लक्ष्य है, उस आशय खोज हमारा दायित्व है और अंत में उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेना, हमारा विशेष अधिकार है। इस प्रकार दर्शन जो कि आशय को उद्घाटित करने की कोशिश करता है और जहाँ तक उसे इसमें सफलता मिलती है, वह इस लक्ष्य तक अग्रसर होने की प्रक्रिया है। कुल मिलाकर आखिर यह लक्ष्य क्या है? इस अर्थ में यथार्थ की प्राप्ति वह है जिसमें पा लेना, केवल जानना नहीं है, बल्कि उसी का अंश हो जाना है। इस उपलब्धि में बाधा क्या है ? बाधाएँ कई हैं। पर इनमें प्रमुख है - अज्ञान । अशिक्षित आत्मा नहीं है, यहा¡ तक कियथार्थ संसार भी नहीं है। यह दर्शन ही है जो उसे शिक्षित करता है और अपनी शिक्षा से उसे उस अज्ञान से मुक्ति दिलाता है, जो यथार्थ दर्शन नहीं होने देता। इस प्रकार एक दार्शनिक होना एक बौद्धिक अनुगमन करना

नहीं है, बल्कि एक शक्तिप्रद अनुशासन पर चलना है, क्योंकि सत्य की खोज में लगे हुए सही दार्शनिक को अपने जीवन को इस प्रकार आचरित करना पड़ता है ताकि उस यथार्थ से एकाकार हो जाय जिसे वह खोज रहा है। वास्तव में, यही जीवन का एकमात्र सही मार्ग है और सभी दार्शनिकों को इसका पालन करना होता है, और दार्शनिक ही नही, बल्कि सभी मनुष्यों को, क्योंकि सभी मनुष्यों के दायित्व और निर्यात एक ही हैं।

(1) भारतीय दर्शन किस लक्ष्य की ओर संकेत करता है ? 1

(क) यथार्थ की प्राप्ति कर लेना

(ख) जीवन का एक आशय और लक्ष्य है

(ग) यथार्थ के साथ एकाकार हो जाना

(घ) शिक्षित हो जाना

(2) लक्ष्य प्राप्त करने में प्रमुख बाधा क्या है ? 1

(क) अशिक्षित होना

(ख) ज्ञान का अभाव

(ग) यथार्थ दर्शन

(घ) अनुशासन हीनता

(3) जीवन का एक मात्र उॅश्य क्या है ? 1

(क) एक शक्तिप्रद अनुशासन पर चलना

(ख) बौद्धिक अनुगमन करना

(ग) शिक्षित होना

(घ) अज्ञान से मुक्त होना

(4) 'अनुशासन' शब्द में उपसर्ग का सही विकल्प है- 1

(क) अन + उशासन

(ख) अ + नुशासन

(ग) अनु + शासन

(घ) अनुशा + सन

(5) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है -

1

(क) जीवन दर्शन

(ख) दार्शनिकता

(ग) सत्य की खोज

(घ) भारतीय दर्शन

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर उत्तर पुस्तिका में लिखिए - 05

मानव जाति अपने उद्‌भवकाल से ही प्रकृति की गोद में ही जन्म लिया और उसी से अपने भरण-पोषण की सामग्री प्राप्त की। सभी प्रकार के वन्य या प्राकृतिक उपादान ही उसके जीवन और जीविका के एकमात्र साधन थे। प्रकृति ने ही मानव जीवन को संरक्षण प्रदान किया। रामचंद्र, सीता व लक्ष्मण ने भी पंचवटी नामक स्थान पर कुटिया बनाकर वनवास का लंबा समय व्यतीत किया था।

वृक्षों की लकड़ी से मानव अनेक प्रकार के लाभ उठाता है। उसने लकड़ी को ईंधन के रूप में प्रयुक्त किया। इससे मकान व झोंपड़ियाँ बनाईं। इमारती लकड़ी से भवन - निर्माण, कृषि यंत्र, परिवहन, जैसे-रथ, ट्रक तथा रेलों के डिब्बे तथा फर्नीचर आदि बनाए जाते हैं। कोयला भी लकड़ी का प्रतिरूप है। वृक्षों की लकड़ी तथा उसके उत्पाद; जैसे - नारियल का जूट, लकड़ी का बुरादा, चीड़ की लकड़ी आदि विभिन्न इससे वस्तुओं का प्रयोग फल, काँच के बर्तन आदि नाजुक पदार्थों की पैकिंग के किया जाता है। इस प्रकार वृक्षों से विभिन्न प्रत्यक्ष लाभों के अतिरिक्त परोक्ष फायदे भी हैं। जीवन दायिनी ऑक्सीजन पेड़ों से प्राप्त होती है। वृक्षों के आधिक्य से बाढ़ नियंत्रण में सहायता मिलती है।

(1) आदिकाल में मानव जीवन किस पर आधारित था ? 1

(क) फल-फूल

(ख) वन्य या प्राकृतिक उपादान

(ग) कल-कारखाने

(घ) कृषि यंत्र

(2) 'लकड़ी' का प्रतिरूप क्या है ?1

(क) लकड़ी का बुरादा

(ख) फर्नीचर

(ग) कोयला

(घ) नारियल का जूट

(3) वृक्षों से परोक्ष फायदा किसमें हो सकता है- 1

(क) बाढ़ नियंत्रण

(ख) फर्नीचर

(ग) परिवहन

(घ) भवन निर्माण

(4) 'पंचवटी' का समास विग्रह है - 1

(क) **पाँच** वटों का समाहार

(ख) **पाँच** हैं वट जिसके

(ग) पंच के लिए वटी

(घ) पंच और वटी

(5) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है - 1

(क) मानव जीवन

(ख) पेड़-पौधे और हमारा जीवन

(ग) पंचवटी

(घ) जीवन और जीविका

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - 5

कुछ भी बन, बस कायर मत बन
ठोकर मार, पटक मत माथा
तेरी राह रोकते वाहन
कुछ भी बन, बस कायर मत बन
ले-देकर जीना, क्या जीना ?
कब तक गम के **आँसू** पीना ?
मानवता ने तुझको सींचा
बहा युगों तक खून-पसीना ।
कुछ न करेगा ? किया करेगा -
रे मनुष्य - बस कातर **क्रंदन** ?
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट को आत्म - समर्पण
कुछ भी बन, बस कायर मत बन ।

(1) कवि क्या करने की प्रेरणा दे रहा है ? 1

(क) गम के आँसू पीने की

(ख) आत्म-समर्पण की

(ग) रूकावटों को ठोकर मारने की

(घ) कायर न बनने की

(2) कवि के अनुसार किस प्रकार का जीवन व्यर्थ है ? 1

(क) कुछ भी बनकर जीना

(ख) समझौता वादी

(ग) खून पसीना बहाकर

(घ) मनुष्य को स्वर्स्व अर्पित करके

(3) 'कायर' से तात्पर्य है - 1

(क) डरपोक

(ख) समझौता वादी

(ग) कातर

(घ) दुष्ट

(4) 'पाहन' शब्द का पर्यायवाची है - 1

(क) मेहमान

(ख) पैर

(ग) पत्थर

(घ) पर्वत

(5) 'कुछ भी बन, बस कायर मत बन' । कवि ने क्यों कहा है ? 1

(क) कुछ भी बनना मुश्किल है

(ख) कुछ भी बनना बहुत आसान है

(ग) कायर मनुष्य अच्छा नहीं होता

(घ) कायर मनुष्य का जीवन व्यर्थ है

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प छाँटकर लिखिए - 5

बादल, गरजो !

घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ !

ललित ललित, काले घुंघराले,

बाल कल्पना के-से पाले,

विद्युत-छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले !

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो-
बादल, गरजो !
विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन, आए अज्ञात दिशा से अनंत
के घन !
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो -
बादल, गरजो !

(1) कवि बादल से क्या करने के लिए कहता है ? 1

(क) बरसने के लिए
(ख) गरजने के लिए
(ग) आसमान में विचरण करने के लिए
(घ) जाने के लिए

(2) 'बादल' का समानार्थी शब्द है- 1

(क) विद्युत छवि
(ख) धाराधर
(ग) काले घुँघराले
(घ) अनंत के घन

(3) 'निदाघ' शब्द से तात्पर्य है - 1

(क) आग
(ख) वर्षा
(ग) गर्मी
(घ) बादल

(4) कवि ने बादल की उपमा किससे दी है - 1

(क) बाल कल्पना
(ख) नव जीवन
(ग) नूतन कविता
(घ) अज्ञात दिशा

(5) 'घेर घेर घोर गगन' पंक्ति में अलंकार बताइए - 1

(क) उपमा
(ख) उत्प्रेक्षा

(ग) यमक

(घ) अनुप्रास

खण्ड 'ख'

प्र05 **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए-1**X4=4

(क) "अभिमान" शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग व मूल शब्द लिखिए।

(ख) 'भरपूर' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग व मूल शब्द लिखिए।

(ग) 'अक्कड़' प्रत्यय से बनने वाले दो शब्द लिखिए।

(घ) 'इ" प्रत्यय से बनने वाले दो शब्द लिखिए।

प्रश्न-6. अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद बताइए-1X4=4

(क) भगवान आपकी सारी इच्छा पूरी करे।

(ख) किस की पुस्तक है?

(ग) तुम बाहर मत जाओ।

(घ) जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

प्रश्न-7.निम्नलिखित काव्यांशों में निहित अलंकारों के नाम लिखिए-1X4=4

(क) 'सब स्वाँसों की स्वाँस में।

(ख) अधरान धरी अधरा न धरौंगी।

(ग) मृदुल वैभव की रखवाली- सी।

(घ) 'मानों झूम रहे हैं तरू भी मंद पवन के झोकों से'

प्रश्न-8.निम्नलिखित सामासिक शब्दों का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए-1X3=3

(क) चौराहा

(ख) सुख-दुख

(ग) नीलकंठ

खण्ड 'ग'

प्रश्न 9. 1 × 5

इस हुजूमूम में आगे-आगे चल रहे हैं, सालिम अली। अपने कंधों पर सैलानियों की तरह अपने अंतहीन सफर को बोझ उठाए । लेकिन यह सफर पिछले तमाम सफरों से भिन्न है। भीड़-भाड़ की जिंदगी और तनाव के माहौल से सालिम अली का यह आखिरी पलायन है। अब तो वो उस वन-पक्षी की तरह प्रकृति में विलीन हो रहे हैं, जो जिंदगी को आखिरी गीत गाने के बाद मौत की

गोद में जा बसा हो। कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर सही विकल्पों का चयन कीजिए-

(1) अंतहीन सफर का आशय है1

(क) बहुत लम्बी यात्रा

(ख) मृत्यु के उपरांत अंतिम यात्रा

(ग) जंगलों में भटक जाना

(घ) हुजूम में आगे चलना

(2) सालिम अली का यह आखिरी पलायन कैसे था ?1

(क) अपना काम छोड़ रहे थे

(ख) अपना द**फ़्तर** छोड़ के भाग रहे थे

(ग) विदेश जाकर बस रहे थे

(घ) मौत के आगोश में चले गए ।

(3) सालिम किस वन पक्षी की तरह थे1

(क) जो बंधनों में रह कर गीत गाता है।

(ख) जो पानी में खेलता है।

(ग) जो मुक्त प्रकृति में गीत गाता है।

(घ) जो आकाश में **ऊँचा** उड़ता है ।

(4) प्रकृति से सालिम अली का संबंध कैसा था ? 1

(क) प्रकृति उनके लिए उपयोग की वस्तु थी

(ख) वे प्रकृति पर विजय पाना चाहते थे

(ग) वे प्रकृति का दोहन कर सफल होना चाहते थे

(घ) वे प्रकृति का आत्मीय हिस्सा बन कर रहते थे

(5) 'सपनों के गीत गाना' का तात्पर्य है 1

(क) अपना पंसदीदा कार्य करना

(ख) नींद में गाने गाना

(ग) गाने में सपनों का वर्णन करना

(घ) झूठीं बाते करना

अथवा

अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई मेरे परिवार में प्राय: दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं । सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा-पूजूजा की । हमारी कुल-देवी दुर्गा थीं । मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

संक्षेप में **उत्तर** लिखें-

(क) लेखिका के बाबा ने दुर्गापूजा क्यों की ?1

(ख) पहले लड़कियों के पैदा होने पर क्या करते थे और क्यों? 2

(ग) '' मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य
लड़कियों को सहना पड़ता है।'' से लेखिका का क्या आशय है? 2

प्रश्न 10. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए । 2X5=10

(क) गुरूदेव ने अपनी एक कविता में मैना को लक्ष्य करके क्यालिखा है?

(ख) 'मेरे बचपन के दिन' पाठ में बापू ने लेखिका की कौन सी वस्तु माँग ली और क्यों ?

(ग) लेखक को प्रेमचंद का जूता फटने का क्या कारण प्रतीत होता है?

(घ) सालिम अली को पक्षियों की दुनिया की ओर किस बात ने मोड़ा ?

(ङ) जनरल आउटरम ने मैना के साथ कैसा बर्ताव किया ?

प्रश्न 11. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए एवं उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 5

''बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्ही'-
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँबर के ।
क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',
बांध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।''

(1) बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर किसका स्वागत किया और क्यों? 1

(2) 'बरस बाद सुधि लीन्ही'-किवाड़ की ओट लिए लता ने ऐसा क्यों कहा? 1

(3) ताल पानी की परात क्यों लेकर आया? 1

(4) भ्रम की कौन - सी गाँठ खुल गई है, जिसके लिए क्षमा माँगी गई है। 1

(5) उपरोक्त काव्यांश में से अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण छाँटिए। 1

अथवा

''मैं दक्षिण में दूर-दूर तक गया
और मुझे हमेशा माँ याद आई
दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था
होता छोर तक पहुँच पाना
तो यमराज का घर देख लेता
पर आज जिधर भी पैर करके सोओ
वही दक्षिण दिशा हो जाती है
सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं

और वे सभी में एक साथ
अपनी दहकती **आँखों** सहित विराजते हैं।''

उपरोक्त काव्यांश के आधार पर निम्न प्रश्नों के संक्षेप में **उत्तर** दीजिए-

(1) कवि ने ऐसा क्यों कहा है कि दक्षिण को **लाँघ** लेना संभव नहीं है? 1

(2) कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है? 2

(3)निम्न पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए- 2

''सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं
और वे सभी में एक साथ
अपनी दहकती आ¡खों सहित विराजते हैं।''

प्रश्न 12. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में **उत्तर** लिखिए-

(1) 'ग्रामश्री' कविता में कवि ने 'गा¡व को मरकत डिब्बे सा खुला' क्यों कहा है? 1

(2) 'इस विजन में दूर व्यापारिक नगर से प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है'-पंक्तियों में नगरीय **संस्कृति** के प्रति कवि का क्या **आशय** है और क्यों? 2

(3) बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है? 2

प्रश्न 13. 'शहरवासी सिर्फ माटी वाली को नहीं, उसके कंटर को भी अच्छी तरह पहचानते हैं।' आपकी समझ से वे कौन-से कारण रहे होंगे जिनके रहते 'माटी वाली' को सब पहचानते थे? 5

अथवा

'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करते हुए कोई अन्य उचित शीर्षक बताइए।

खण्ड 'घ'

पत्र-लेखन

प्रश्न 14. आपके विद्यालय में खेल-दिवस मनाया गया । आपने कई खेलेल-प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर पुरस्कार जीते । अपने पूर्व खेल-शिक्षक को पत्र लिखकर अपनी उपलब्धि के बारे में बताइए तथा आगे भी उनके दिशानिर्देश तथा आशीर्वार्दद की इच्छा व्यक्त कीजिए । (5)

अथवा

अत्यधिक गर्मी के कारण प्रार्थना सभा में आपकी कक्षा का एक विद्यार्थी बेहोश हो गया । तेज धूप में विद्यालय आने-जाने की वजह से कई विद्यार्थियो को लू भी लग चुकी है। पत्र लि**ख** कर प्रधानाचार्य से अनुरोध कीजिए कि गर्मी की छुट्टि**याँ** पूर्व निर्धारित समय से दो सप्ताह पहले कर दी **जाएँ** ।

निबंध

प्रश्न 15. नीचे दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर निबंध लिखे । (10)

विद्यार्थियों के जीवन में इंटरनेट की भूमिका

इंटरनेट क्या है?.....इंटरनेट का फैलाव.....फायदे एवम् नुकसान..... .....अश्लीलता एवम् किशोर मन.....आधुनिक जीवन की अनिवार्यता के रूप में इंटरनेट.....निष्कर्ष ।

अथवा

'पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे तो बनोगे ख़राब'

उपरोक्त पंक्ति का आशय.....रोजगानर के रूप में खेलना एवम् पढ़ना.....किसी भी क्षेत्र में सफलता एवम् परिश्रम का संबंध.....वर्तमान समय की **माँग** .....निष्कर्ष ।

प्रश्न-16. आपके विद्यालय में वार्षिक खेलकूद दिवस मनाया गया। इसका एक प्रतिवेदन लिखिए। 5

****

कक्षा - नवीं विषय - हिन्दी

सकंलित परीक्षा (एस-2)

अंक **90** हिन्दी निर्धारित समय :3 घण्टे

निर्देश :-

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख ग और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड **के उत्तर क्र**मशः दीजिए।

खण्ड - 'क'

प्र01 निम्नलिखित गद्यांश को **ध्यान**पूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए।5

कालिदास उसी डाली को काट रहे थे, जिस डाली पर बैठे थे। विद्यो **त**मा नामक विदुषी राजकन्या का मान भंग करने का षड्यंत्र कर रहे तथाकथित विद्वान वर्ग को वह व्यक्ति (कालिदास) सर्वाधिक जड़मति और मूर्ख लगा। सो वे उसे ही कुछ लाभ-लालच दे, कुछ **उटपटांग** सिखा-पढ़ा, महापंडित के वेश में सजा-धजाकर राजदरबार में विदुषी राज कन्या **विद्योतमा** से शास्त्रार्थ करने के लिए ले गए। उस मूर्ख के **उटपटांग** मौन संकेतों की मनमानी व्याख्या कर षड्यंत्रकारियों ने उस विदुषी से विवाह करा ही दिया, लेकिन प्रथम रात्रि में ही वास्तविकता प्रकट हो जाने पर पत्नी के ताने से घायल होकर ज्यों घर से निकले, कठिन परिश्रम और निरंतर साधना-रूपी रस्सी के आने-जाने से घिस-पिटकर महाकवि कालिदास बनकर घर लौटे। स्पष्ट है कि निरंतर अभ्यास ने तपाकर उन की जड़मति को पिघलाकर बहा दिया और जो बाकी बचा था, वह खरा सोना था।

(1) कालिदास उसी डाली को क्यों काट रहे थे, जिस डाली पर वे बैठे थे? 1

(क) वे विद्वान थे।

(ख) वे जड़मति थे।

(ग) वे महापंडित थे।

(घ) वे लकड़हारे थे।

(2) कालिदास को पंडित कहा! ले गए? 1

(क) विद्**योतम**ा का राजमहल दिखाने।

(ख) विद्**योतम**ा से मिलवाने के लिए।

(ग) विद्**योतम**ा के पास सजा दिलवाने।

(घ) विद्**योतम**ा से शास्त्रार्थ करने के लिए।

(3) विदुषी राजकन्या का विवाह जड़मति कालिदास से क्यों हो गया? 1

(क) कालिदास सुदर्शन व्यक्तित्व के थे।

(ख) विद्वान वर्ग ने उनके मौन संकेतों की मनमानी व्याख्या की।

(ग) कालिदास धनी थे।

(घ) राजकन्या कालिदास से प्रेम करती थी।

(4) मूर्ख कालिदास किस प्रकार महाकवि बन गया? 1

(क) पत्नी के प्रेम के कारण।

(ख) साहित्य रचना के कारण।

(ग) कठिन परिश्रम और निरन्तर साधना से।

(घ) घर से त्यागकर जाने के कारण।

(5) इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 1

(क) जड़मति कालिदास।

(ख) विद्योनमा और कालिदास।

(ग) महाकवि कालिदास।

(घ) करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।

प्र02 निम्नलिखित गद्यांश को **ध्यानपूर्वक** पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के **उत्तर** छाटकर लिखिए। 5

शिशु को यदि हम **राष्ट्र** की अमूल्य निधि के रूप में देखना चाहते हैं तो उसे एक ऐसा आदर्श वातावरण प्रदान करना पड़ेगा, जिसमें निर्बाध गति से उसका चहुमुखी विकास हो सके। स्वच्छ, शांत, भयमुक्त और स्वास्थ्यप्रद वातावरण में ही शिशु की कोमल भावनाए! सुरक्षित रह सकती हैं। शिशु की सुकोमल भावनाओं को आघात पहु!चाना सामाजिक अपराध है। राष्टं का यह पुनीत कर्तव्य है कि वह प्रत्येक बालक को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराए कि उसमें हीन भावना न पनपने पाए। हीन भावना से ग्रसित शिशु बड़ा होने पर समाज के प्रति अपने कर्तव्य का सही रूप में निर्वाह नहीं कर सकता।

(1) शिशु को राष्टं की अमूल्य निधि किस प्रकार बनाया जा सकता है? 1

(क) आदर्श वातावरण प्रदान कर।

(ख) शिक्षित करके।

(ग) खेल-सामग्री उपलब्ध कराके।

(घ) अनुशासन में रख कर।

(2) शिशु की कोमल भावनाए कैसे वातावरण में सुरक्षित रह सकती हैं? 1

(क) अनुशासित वातावरण में।

(ख) स्वच्छ एवं शांत वातावरण में।

(ग) शांत, भयमुक्त और स्वास्थ्यप्रद वातावरण में।

(घ) प्रदूषणरहित वातावरण में।

(3) इस गद्यांश में किसे सामाजिक अपराध माना गया है? 1

(क) शिशु को पौष्टिक भोजन न देना।

(ख) शिशु को शारीरिक दंड देना।

(ग) शिशु को स्नेह से वंचित रखना।

(घ) शिशु की सुकोमल भावनाओं को आघात पहु!चाना।

(4) **राष्ट्र** का पुनीत **कर्तव्य** क्या है? 1

(क) बच्चे की भावना को सुरक्षित न रखना।

(ख) बच्चे में हीन भावना पनपने न देना।

(ग) बच्चे को सुविधाए प्रदान कराना।

(घ) बच्चे को सबल वातावरण प्रदान न करना।

(5) इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 1

(क) **राष्ट्र** की अमूल्य निधि।

(ख) शिशु और **राष्ट्र**।

(ग) शिशु की कोमलता।

(घ) **राष्ट्र** के दायित्व।

प्र03 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीछे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प **छाँटकर** लिखिए। 5

तन समर्पित, मन समर्पित
और यह, जीवन समर्पित,
चाहता **हूँ** देश की धरती, तुझे कुछ और भी **दूँ**।

मा! तुम्हारा **ऋण** बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा, फिर भी निवेदनढ
थाल में **लाऊँ** सजाकर भाल जब,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण,
गान अर्पित, प्राण अर्पित
चाहता **हूँ** देश की धरती, तुझे कुछ और भी **दूँ**।

माँ आज दो तलवार को लाओ न देरी
बाध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,

शीश पर आशीष की छाया घनेरी,
स्पप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित,
चाहता **हूँ** देश की धरती, तुझे कुछ और भी दू!।

(1) कवि देश के लिए क्या-क्या समर्पित करना चाहता है। 1

(क) तन।

(ख) धन।

(ग) मन।

(घ) सर्वस्व।

(2) धरती के **ऋण** के आगे कवि अपने आपको क्या मानता है? 1

(क) देशभक्त।

(ख) अकिंचन।

(ग) दानी।

(घ) वीर।

(3) **युध्द** में जाते समय कवि मातृभूमि से क्या **माँगता** है? 1

(क) मातृभूमि का आशीष।

(ख) मातृभूमि का सहयोग।

(ग) अभयदान।

(घ) हौसला।

(4) 'धरती' शब्द का पर्यायवाची इनमें से कौन-सा नहीं है? 1

(क) धरा।

(ख) वसुधा।

(ग) सुधा।

(घ) वसुंधरा।

(5) 'स्वप्न-अर्पित' का क्या अर्थ है?

(क) देश-सेवा करना।

(ख) रात भर जागना।

(ग) सपने देखना।

(घ) देश-हित के लिए सर्वस्व अर्पित कर देना।

प्र04 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प छा!टकर लिखिए। 5

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।
जीवन अस्थिर, अनजाने ही
हो जाता पथ पर मेल कहीं
सीमित पग-डग, लंबी मंजिल

तय कर लेना कुछ खेल नहीं।
दाए!-बाए! सुख-दुख चलते
सम्मुख चलता पथ का प्रमाद
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।
सासों पर अवलम्बित काया,
जब चलते-चलते चूर हुई।
दो स्नेह शब्द मिल गए, मिली-
नव स्फूर्ति, थकावट दूर हुई।
पथ के पहचाने छूट गए,
पर साथ-साथ चल रही याद।
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।

(1) कवि किसे धन्यवाद देता है? 1

(क) राही को।

(ख) मित्रों को।

(ग) परिवार जन को।

(घ) जीवन-मार्ग पर जिस-जिससे स्नेह मिला।

(2) जीवन-मंजिल को तय कर लेना खेल क्यों नहीं है? 1

(क) समय का अभाव।

(ख) लघु जीवन।

(ग) सीमित पग-डग।

(घ) निर्धनता।

(3) कवि की 'थकावट' कब दूर हुई? 1

(क) जब स्नेह के दो शब्द मिले।

(ख) जब आराम मिला।

(ग) जब साथ मिला।

(घ) जब वह प्रसन्न हुआ।

(4) हमेशा हमारे साथ क्या रहता है? 1

(क) साथियों का साथ।

(ख) साथियों की यादें।

(ग) साथियों का स्नेह।

(घ) साथियों की मित्रता।

(5) 'अवलम्बित' शब्द का अर्थ है- 1

(क) विलम्ब।

(ख) परतंत्र।

(ग) आश्रित।

(घ) सहयोग।

खण्ड – 'ख'

प्र05 **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए-1**X4=4

(क) "अभिमान" शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग व मूल शब्द लिखिए।

(ख) 'भरपूर' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग व मूल शब्द लिखिए।

(ग) 'अक्कड़' प्रत्यय से बनने वाले दो शब्द लिखिए।

(घ) 'इ" प्रत्यय से बनने वाले दो शब्द लिखिए।

प्रश्न-6. अर्थ की दृष्टि से वाक्य भेद बताइए-1X4=4

(क) भगवान आपकी सारी इच्छा पूरी करे।

(ख) किस की पुस्तक है?

(ग) तुम बाहर मत जाओ।

(घ) जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

प्रश्न-7.निम्नलिखित काव्यांशों में निहित अलंकारों के नाम लिखिए-1X4=4

(क) 'सब स्वाँसों की स्वाँस में।

(ख) अधरान धरी अधरा न धरौंगी।

(ग) मृदुल वैभव की रखवाली- सी।

(घ) 'मानों झूम रहे हैं तरू भी मंद पवन के झोकों से'

प्रश्न-8.निम्नलिखित सामासिक शब्दों का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए-1X3=3

(क) चौराहा

(ख) सुख-दुख

(ग) नीलकंठ

खण्ड – 'ग'

प्र09 निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्पों का चयन कीजिए–

सन् 1857 ई. के विद्रोही नेता धुधूपंत नाना साहब कानपुर में असफल होने पर भागने लगे, तो वे जल्दी में अपनी पुत्री मैना को साथ न ले जा सके। देवी मैना बिठूर में पिता के महल में रहती थी; पर विद्रोह दमन करने के बाद अंग्रजों ने बड़ी ही ळूरता से उस निरीह और निरपराध देवी को अग्नि में भस्म कर दिया। उसका रोमांचकारी वर्णन पाषाण दय को भी एक बार द्रवीभूत कर देता है।

(1) नाना साहब ने किसके विरूध विद्रोह किया था? 1

(क) बहादुरशाह जफर के विरूध
(ख) लक्ष्मीबाई के विरूध ।
(ग) अंग्रेजों के विरूध
(घ) गा!धी जी के विरूध ।
(2) नाना साहब अपनी बेटी को महल में क्यों छोड़ गए थे? 1
(क) जल्दी में उसे वे ले नहीं जा सके।
(ख) महल की देखभाल के लिए।
(ग) वंतिकारियों को सूचना देने के लिए।
(घ) वे उसे प्यार नहीं करते थे।
(3) नाना साहब का आवास कहा था? 1
(क) दिल्ली में।
(ख) मद्रास में।
(ग) बिठूर में।
(घ) कानपुर में।
(4) अंग्रेजों ने मैना को किस प्रकार मार डाला? 1
(क) तोप से।
(ख) जलाकर।
(ग) तलवार से।
(घ) बंदूक से।
(5) 'पाषाण - हृदय' का क्या अर्थ है? 1
(क) मज़बूत दिल।
(ख) संवेदना शून्य।
(ग) कठोर - हृदय।
(घ) संवेदनशील।

अथवा

उसी बीच आनंद भवन में बापू आए। हम लोग तब अपने जेब-खर्च में से हमेशा एक-एक, दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब बापू के पास मैं गई तो अपना कटोरा भी लेती गई। मैंने निकालकर बापू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।' कहने लगे, 'अच्छा, दिखा तो मुझको।' मैंने कटोरा उनकी ओर बढ़ा दिया तो उसे हाथ में लेकर बोले, 'तू देती है इसे?' अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई।
(1) 'हम लोग' से किनकी ओर संकेत किया गया है? 1
(क) महादेवी।
(ख) महादेवी और उनकी सहपाठिनें।
(ग) महादेवी वर्मा और उनके परिवार जन।

(घ) छात्रावास की लड़किया।

(2) महादेवी और उनकी सहपाठिनें जेब-खर्च से पैसे क्यों बचाती थी? 1

(क) देश-सेवा के लिए।

(ख) समाज-सेवा के लिए।

(ग) गरीबों के लिए।

(घ) अपने लिए।

(3) वे बचत के पैसे किसे देती थी? 1

(क) अपने माता-पिता को।

(ख) गरीबों को।

(ग) छात्रावास की सहेलियों को।

(घ) बापू को।

(4) महादेवी ने बापू को कटोरा क्यों दिखाया? 1

(क) दान देने के लिए।

(ख) बापू को प्रसन्न करने के लिए।

(ग) प्रशंसा पाने के लिए।

(घ) कटोरे की प्रशंसा पाने के लिए।

(5) बापू ने महादेवी का कटोरा किसलिए ले लिया? 1

(क) देश-सेवा के लिए।

(ख) गरीबों के लिए।

(ग) अपने प्रयोग के लिए।

(घ) चंदे के लिए।

प्र010 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में **उत्तर** दीजिए। 2×5 = 10

(क) सालिम अली हर समय क्या लिए रहते थे और क्यों?

(ख) मैना की अंतिम इच्छा क्या थी? क्या उसकी इच्छा पूरी हो सकी?

(ग) 'तुम परदे का **महत्व** ही नहीं जानते, हम परदे कर कुर्बान हो रहे हैं इस कथन का आशय 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(घ) गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़ कहीं और रहने का मन क्यों बनाया?

(ङ) सुभद्रा कुमारी चौहान ने महादेवी वर्मा की काव्य प्रतिभा को निखारने में किस प्रकार योगदान दिया?

प्र011 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर उसके प्रश्नों के उनर संक्षेप में लिखिए। 5

हसमुख हरियाली हिम- आतप
सुख से अलसाए-से सोए,
भीगी अ!धियाली में निशि की
तारक स्वप्नों में-से खोए-
मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम-

जिस पर नीलम नभ आच्छादन-
निरूपम हिमांत में स्निग्ध शांत
निज शोभा से हरता जन मन।
(1) कवि ने हरियाली को ह!समुख क्यों कहा है? 1
(2) अ!धेरी रात में तारे कैसे नज़र आते हैं? 1
(3) लोगों के मन को कौन हर रहा है? 1
(4) कवि ने मरकत के डिब्बे से गा!व की तुलना क्यों की है? 1
(5) 'हिमांत' शब्द किस मौसम की ओर संकेत कर रहा है? 1

अथवा

और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरिया!,
नील तल में जो उगी है घास भूरी
ले रही वह भी लहरिया।
एक चा!दी का बड़ा-सा गोल खंभा
आख को है चकमकाता
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी,
प्यास जाने कब बुझेगी।
चुप खड़ा बगुला डुबाए टाग जल में,
देखते ही मीन चंचल
मयान-निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के **उत्तर** संक्षेप में लिखिए।
(1) कवि ने चा!दी का-सा गोल खम्बा किसे कहा है और क्यों? 2
(2) पोखर के किनारे पड़े पत्थरों को देखकर कवि ने क्या कल्पना की है? 2
(3) बगुला जल में बिल्कुल शांत एवं मयानावस्था में क्यों खड़ा है? 1

प्र012 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उनर दीजिए। **2**x5=10
(1) 'यमराज की दिशा' कविता के आधार पर लिखिए कि आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है?
(2) मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?
(3) बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों हैं?
(4)'चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा' में कवि की किस सूक्ष्म कल्पना का आभास मिलता है ?
(5) चने के पौधे को ठिगना क्यों कहा गया है ? वह किस

प्रकार सजकर खड़ा है ?

प्र013 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। 5

अथवा

'गरीब आदमी का शमशान नहीं उजड़ना चाहिए।' 'माटी वाली' कहानी के आधार पर इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

खण्ड - 'घ'

पत्र-लेखन

प्र014 प्रातः कालीन भ्रमण के लाभ बताते हुए अपनी छोटी बहन को पत्र लिखिए। 5

अथवा

आपके क्षेत्र में सफाई कर्मचारी ठीक तरह से काम नहीं कर रहे हैं। अपने क्षेत्र में गंदगी एवं बीमारी फैलाने की सूचना देते हुए नगर-निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

प्र015 नीचे दिए गए संकेतों-बिन्दुओं के आधार पर निबंध लिखिए। 10

'इंटरनैट -सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में **क्रांति**

संकेत

प्रस्तावना, इंटरनैट का आरंभ, इंटरनैट के मुख्य भाग, उपयोग, हानिया, निष्कर्ष।

अथवा

'नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका'

प्रस्तावना, नैतिक मूल्यों में गिरावट, शिक्षा का **उद्देश्य**, शिक्षक की महन्वपूर्ण भूमिका, निष्कर्ष।

प्रश्न-16. आपके विद्यालय में वार्षिक खेलकूद दिवस मनाया गया। इसका एक प्रतिवेदन लिखिए। 5

****

उत्तर माला

प्र. सं. उत्तर अंक

प्र01 (1) ख 5

(2) घ

(3) ख

(4) ग

(5). घ

प्र02 (1) क 5

2) ग

(3) घ

(4) ख

(5) क

प्र03 (1) घ 5

(2) ख

(3) क

(4) ग

(5) घ

प्र04 (1) घ 5

(2) ग

(3) क

(4) ख

(5) ग

प्र05 (**क**) **अभि मान** **१**

(**ख**) **भर पूर** **१**

(**ग**) **भुलक्कड़ , बतक्कड़** **१**

(**घ**) सामाजिक, आर्थिक १

प्र06 (**क**) **इच्छावाचक** **१**

(**ख**) **प्रश्नवाचक** **१**

(**ग**) **निषेधात्मक** **१**

(**घ**) **संकेतवाचक** **१**

प्र07 (**क**) **अनुप्रास**

(**ख**)**यमक** **१**

(**ग**) **उपमा** **१**

(**घ**) **उत्प्रेक्षा** **१**

प्र08 (**क**)**चार राहों का समाहार - द्विगु समास १**

(**ख**) **सुख और दुख - द्वंद्व समास १**

(**ग**) **नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव - बहुव्रीहि समास १**

प्र0 **8**(1) ख 1×4 = 4

(2) क

(3) ग

(4) घ

प्र09 (1) ग 1×5 = 5

(2) क

(3) घ

(4) ख

(5) ग

अथवा

(1) ख

(2) क

(3) घ

(4) ग

(5) क

प्र010 इसका उत्तर विद्यार्थी अपने मतानुसार देंगे। 2×5 = 10

प्र011 इसका उत्तर विद्यार्थी अपने मतानुसार देंगे। 1×5 = 5

अथवा

इसका उत्तर विद्यार्थी अपने मतानुसार देंगे। 2 1/2= 5

प्र012 इसका उत्तर विद्यार्थी अपने मतानुसार देंगे।

प्र013 इसका उत्तर विद्यार्थी अपने मतानुसार देंगे। 2

प्र014 पत्र

प्रारंभ एवं समापन की औपचारिकताए! 2

(पता, दिनांक, संबोधन, समापन)

विषय सामग्री/प्रस्तुति 2

भाषा की सफाई 1

5

प्र015 निबंध

भूमिका/प्रस्तावना 2

विषय प्रतिपादन 4

उपसंहार 2

भाषा की शुद्धता 1

प्रस्तुति/समग्र प्रभाव 1

प्र०.16.प्रतिवेदन

विषयवस्तु,भाषा-शैली,प्रस्तुतिकरण आदि के अनुसार अंक दिए जाएँ। 5

HIGH ORDER THINKING QUESTIONS

प्रश्न-1."मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते"- स्पष्ट।

प्रश्न-2.किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंध को कहानी में किस प्रकार स्पष्ट किया है?

प्रश्न-3. ल्हासा की ओर पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि यात्रा वृतांत गद्य की आधुनिक विधा है।

प्रश्न-4.ल्हासा की ओर पाठ के आधार पर बताइए कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

प्रश्न- 5.गांधी जी का उपभोक्तावादी संस्कृति के संबंध में क्या विचार था?

प्रश्न- 6.हमारा समाज आज कल आक्रोश और अशांति का शिकार क्यों बनता जा रहा है?

प्रश्न-7.बालिका मैना और अंग्रेज सेनापति में क्या वार्तालाप हुआ?

प्रश्न- 8. "साँवले सपनों की याद " शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए ।

प्रश्न- 9. हमें प्रकृति को किस दृष्टि से देखना चाहिए?

प्रश्न 10. अंगुली ढकी है पर पंजा नीचे घिस रहा है पंक्ति में छिपा व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न- 11.लेखक ने प्रेमचंद का जो चित्र- हमारे सामने प्रस्तुत किया है ,उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कौन कौन सी विशेषताएँ उभर कर आती हैं?

प्रश्न- 12. जवारा के नवाब के साथ पारिवारिक संबंध को आज के संदर्भ में स्वप्न जैसा क्यों कहा है?

प्रश्न- 13.महादेवी वर्मा के समय लड़कियों की दशा कै सी थी ?

प्रश्न- 14. लेखक को लंगड़ी मैना अन्य साथियों से किस प्रकार भिन्न जान पड़ी?

प्रश्न- 15. कबीर के अनुसार सच्चे संत के क्या लक्षण हैं?

प्रश्न- 16. ईश्वर भक्ति के बारे में कबीर ने किन धारणाओं का खंडन किया है?

प्रश्न -17. कवयित्री ललद्यद के अनुसार हम ईश्वर किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं?

प्रश्न- 18. बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है?

प्रश्न- 19. श्री कृष्ण की मोहक मुस्कान का वर्णन कीजिए ।

प्रश्न- 20. कवि रसखान पक्षी के रूप में यमुना किनारे कदम के पेड़ पर वास करना चाहते हैं क्यों?

प्रश्न- 21. कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने कोयल को बावली क्यों कहा है?

प्रश्न- 22.कविता कैदी और कोकिला के आधार पर भारत की जेलों में कैदियों को दी जाने वाली यातनाओं का वर्ण कीजिए.

प्रश्न- 23. ग्राम श्री कविता के आधार पर बताइए कि अलसी का पौधा कवि को कैसा लग रहा है ?

प्रश्न- 24. भाव और भाषा की दृष्टि से ग्राम श्री कविता आपको कैसी लगी उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

प्रश्न- 25. ग्राम श्री कविता में कवि ने ग्रामीण वातावरण का किस प्रकार वर्णन किया है? लिखिए।

प्रश्न- 26. कविता चन्द्र गहना से लौटती बेर के आधार पर हरे चने का सौंदर्य वर्णन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न- 27. कविता चन्द्र गहना से लौटती बेर में नगरीय संस्कृति के प्रति कवि का क्या आक्रोश है और क्यों?

प्रश्न- 28. 'मेघ आये" कविता के आधार पर शहरी पाहुन के आगमन पर गाँव में उमड़े प्रसन्नता के वातावरण को किस प्रकार चित्रित किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न- 29.मेघ के आने पर प्रकृति में क्या-क्या परिवर्त न दिखाई देते हैं?

प्रश्न- 30.कवि ने अपनी माँ से क्या प्रश्न किया और माँ ने क्या उत्तर दिया?

प्रश्न- 31. माँ के कार्यों से कवि को क्या आभास हो रहा था ?

प्रश्न- 32.आज दिन प्रतिदिन काम पर जाते बच्चों को देखकर किसी को कुछ अटपटा क्यों नहीं लगता ?

प्रश्न- 33.कवि ने बाल मजदूरी की समस्या को किस प्रकार चित्रित किया है ?

प्रश्न- 34.लेखक ने बच्चन जी के व्यक्तित्व के किन-- किन पक्षों को उभारा है?

प्रश्न- 35. चारों ओर पानी भर जाने से रेणु जी कहाँ- कहाँ गए और उन्होंने वहाँ जाकर क्या और कैसा अनुभव किया?

प्रश्न- 36.बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में कौन -कौन सी बीमारियाँ फ़ै लने की आशंका रहती है?

प्रश्न- 37.लेखिका मृदुला गर्ग की बहन चित्रा के गुणों का वर्णन कीजिए ।

प्रश्न- 38." मेरे संग की औरतें " पाठ की लेखिका के द्वारा लिखी गयी रचनाओं को परिवार और ससुराल में पढ़ने वालों के विषय में बताइए।

प्रश्न – 39."रीढ़ की हाड्डी" एकांकी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न- 40." माटी वाली " कहानी में किस समस्या को उठाया गया है ?

प्रश्न- 41.माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में सोचने का समय क्यों नहीं था ?

प्रश्न- 42.इलाहाबाद आने पर बच्चन जी ने लेखक की किस प्रकार मदद की?

****